ॐ

पूजा संग्रह

संशोधक

तिलकविजय पंजाबी ।

श्री जैन श्वेताम्बर [illegible]

कार्यालय:- स्योजीराम भवन जयपुर

प्रकाशक —

बाबू दानमल शंकरदान नाहटा ।

बीकानेर (राजपूताना)

कार्यालय:- स्योजीराम भवन

प्रथमावृत्ति १०००] वीर सं० २४५५ [मूल्य १)

[illegible] is required
to separate a hydrogen atom into a proton

मुद्रक—पं० अम्बिकाप्रसाद वाजपेयी,
दि इण्डियन नेशनल प्रेस, स्वतंत्र कार्य्यालय,
४८, मुक्ताराम बाबू स्ट्रीट, कलकत्ता।

[illegible]

शासन सम्राट शास्त्र विशारद जैनाचार्य



श्रीजिन कृपाचंद्र सूरीश्वर महाराज

जन्म सं० १९१३ दीक्षा १९३६ आचार्यपद १९७२

निवेदन।



यद्यपि इस पूजा समहमें छपी हुई संघ पूजाके सिवा अन्य सब पूजायें अन्यान्य पुस्तकोंमें छप चुकी हैं परन्तु रत्नसागर आदि बडे २ ग्रथोंकी अपेक्षा मात्र पूजाओंका ही संग्रह करके इस पुस्तकको छपाना अत्युपयोगी जान पड़नेसे श्रीयुत बाबु शकरदान जीने इसके प्रकाशनका शुभ कार्य किया है।

आपने अपने स्वर्गवासी सुपुत्र बाबू अमयराजजी के स्मरणार्थ अमयरत्नसार नामक ग्रथ छपाया था उसीके अल्प न्यौछावरके द्रव्यसे यह ग्रंथ प्रकाशित किया है और इसका जो अल्प न्यौछावर रखा गया है उसके द्वारा भी फिर कभी आप सज्जनोंके कर कमलोंमें कोई अन्य धार्मिक सुन्दर पुस्तक समर्पित की जायगी।

इस सिलसिले से बाबू शकरदानजी उत्तरोत्तर अनेकानेक धार्मिक ग्रन्थ छपा कर जनताको लाभ पहुंचा कर पुष्टपुण्य संपादन कर सकेंगे। अत हम इस स्तुत्य कार्यके लिये उन्हें धन्यवाद देते हैं।

संशोधक।

प्रस्तावना ।



प्रिय सज्जनो !

श्रीजिनेश्वर देवका वचन है कि 'जे आसवा ते परिसवा' याने जो वस्तु आश्रवका कारण है वही वस्तु निर्जराका कारण है। इसी वाक्यके अनुसार गायन विद्या विषयोत्पादक भावोंसे पूर्ण हो तो वह आश्रव याने कर्म बन्धका कारण है। और यदि प्रभु भक्ति गुण वर्णनमें लगाई जाय तो महान निर्जराका हेतु है। परन्तु मात्र गानेमें ध्यान न रख कर प्रभुके गुणोंकी तरफ दृष्टि रखकर गानेसे महा निर्जरा होती है। याने ध्याता अपने गुणोंको पाता है। श्रीऋषभदेव स्वामीके स्तवनमें श्रीजिन कृपाचन्द्र सूरीश्वरजी महाराज कहते हैं कि—"ध्येय ना ध्यान थी ध्याता निज गुण लहे भाव उल्लास थी कर्म छेदे ॥ स्वा० ॥ इस वाक्यके अनुसार ध्येयकी तरफ खास ध्यान रखनेकी जरूरत है। जैसे शब्दवेधी धनुर्धारी शब्दकी तरफ पूरा लक्ष्य करके बाण चलाता है और वह अभिष्ट बाण ठीक जगह पर लगता है। इसी तरहसे भव्यजन प्रभुके गुणों का लक्ष करके गानेसे महान् कर्मोंकी निर्जरा कर सकते हैं। गान विद्या मनको एकाग्र करनेमें महामन्त्रके समान है। यह मनको

एक तान कर देती है। इससे ध्येयका लक्ष रखने पर भव्य जीव आतम गुण प्रकट कर कर्मोका नाश कर देता है। अध्यात्मी पं० श्री देवचन्दजो भी इसी तरह कहते हैं। अजितनाथ स्वामीके स्तवनमें—

अजकुल गत केसरी लहै रे, निजपद सिंह निहाल।
तिम प्रभु भक्ते भवि लहै रे, आतम शक्ति संभाल ॥

भावार्थ—बहुत दिनोंसे बकरोंके भुण्डमें रहा हुआ सिंह बकरों के समान ही अपनेको समझता है परन्तु जब दूसरे सिंहको देखता है तब अपनेको उसके समान देखकर अपनी शक्तिको संभालता है। इसी तरहसे अनादि कालसे पर परिणतिमें रहा हुवा भव्यजीव अपनेको उसीमें रचाकर सुखमानता है। परन्तु जब प्रभु मूर्तिको देखता है तब अपनी आत्मा को ही प्रभुके समान जानता है और अपने स्वाभाविक गुणों (ज्ञान, दर्शन चारित्रादि) को जान कर उसमें स्थिर होता है। परन्तु मन चंचल है, उसको एकाग्र करनेका उपाय प्रभु भक्ति रूप गाने को कारण समझ कर हम लोगोंके उपकारार्थ राग रागिनियोंमें पूजा स्तवनादि की रचना की गई है, उन्हीं पूजाओंका संग्रह इस पुस्तकमें किया गया है। ये पूजायें सिर्फ गायन रूपमें ही नहीं हैं लेकिन इनमें रचयिताओंने तत्वोंका समावेश भी कर दिया है। जिससे कि हमारा मन प्रभु गुण रूप गानेमें लगने के साथ साथ हमे तत्वोंका ज्ञान भी होवे। तथा धार्मिक कार्यो को करने की रुचि उत्पन्न होवे और उनके अनुसार प्रवृत्ति करनेसे आत्माका कल्याण हो।

तथा इस पुस्तक में महान् उपकारी वाचक गणि उपाध्यायादि अनेक पद धारक कविवर समय सुन्दर जीकी बनाई हुई चौबीसी इस पुस्तक के अन्तमें प्रकाशित की गई है यह आगे प्रकाशित नहीं हुई थी। इस लिये श्री जिन कृपाचन्द्र सूरिज्ञान मंडार बीकानेरमे से लेकर प्रकाशित की गई है। और भी अच्छे उपयोगी स्तवन दिये गये हैं।

इस पुस्तकमें पूजा विधि चैत्यवदन विधि आदि आवश्य कीय विषयोंका छपानेका विचार था लेकिन कई कारण वश नहीं कर सका हू। आगामी द्वितीया वृत्तिमें दिया जायगा।

अभी खरतर गच्छकी पूजाए बहुत कम प्रकाशित हुई हैं सो भी मूल्य बहुत होनेके कारण साधारण आदमी लाभ नहीं उठा सक्ते थे। इस असुभीते को दूर करनेके लिये खरतर गच्छ भूषण प्रात स्मरणीय चारित्र चूड़ामणि श्री श्री १००८ श्री जिन कृपा चन्द्र सूरीश्वजीने कुछ ज्यादा आवश्यकीय पूजाओं का संग्र करके छपानेका कहा। उन्होंके उपदेशानुसार प्रवंतक मुनिराज श्र सुखसागर जी की प्रेरणासे यह ग्रन्थ प्रकाशित किया गया है।

इस पुस्तकके प्रकाशन करनेमे कई असुविधायें थीं लेकि श्रीमान् तिलक विजय जी महाराजने कृपाकरके इसके सशोध आदि का भार अपने ऊपर लिया इसलिये उनको कोटिश धन्यवा दिये विना मैं नहीं रह सकता।

निम्नलिखित बातोंका उपयोग रखना चाहिये—

(१) मन्दिर जीमें जानेकी चैत्यवंदनादि की विधि जानकर विधि पूर्वक करना

(२) मंदिर जी की चौरासी आशातनाओं को टालना।

(३) दश प्रणिधान और पांच अभिगम को साचवना।

(१ पुष्प, पान,तल्वार आदि सर्व प्रकारके मुकुट,पैरोंमें पहननेकी पादुकायें या जूते वगैरह, हाथी घोड़ा वाहनादि सचित और अचित्त वस्तुओंको छोड़कर। २ मुकुट सिवाय बाकीके सर्व आभूषणादि अचित्त द्रव्यको साथ रखता हुवा। ३ एक पनेहके वस्त्रका उत्तरासन करके।४ भगवानको देखते ही तत्काल दोनों हाथ जोड़कर जरा मस्तक झुकाते हुये "नमोजिणाणं" ऐसा बोलते हुये। ५ मानसिक एकाग्रता करते हुये। एक वीतराग देवके स्वरूपमें ही या गुणगानमें तल्लीन बना हुआ तीन दफा "निःसिही पदको उच्चारण कर श्रावक जिन मंदिरमें प्रवेश करे।)

(४) पूजा करते समय शुद्ध भावना भावे रहना।

(५) मुखकोश आठ पड़दवाला नाकके ऊपर तक रखना।

(६) लोहेकी वस्तु पास न रखना, प्रभुके अंगको स्पर्श न करना।

(७) पान आदि कुछ खाया हुवा हो तो मुख साफ करके जाना।

(८) स्तवन पूजा आदि गानेमें परस्पर सहाय्य करना। गायकका भंग नहीं करना। सहाय्य देनेसे प्रभु भक्ति करनेसे

रावणने तीर्थंकर गौत्र बांधा है ऐसी भावना रखना।

(९) परस्पर ईर्षा न रखना, राग द्वेषकी परिणति मन्दिर जी में न रखना।

(१०) उपयोगसे विधि पूर्वक नाटक गायनादि करना।

(११) सात शुद्धिको जानना। वस्त्रादि कटे फटे, रगोन, सिलाई किये हुवे नहीं चाहिये। इत्यादि सद्गुरुसे श्रवण कर उसके अनुसार चलना ॥

उपयोग रखना—

(१) इस पुस्तक की आशातना नहीं करनी चाहिये। ज्ञानकी आशातना करनेसे ज्ञानावर्णी कर्मका बन्ध होता है। ज्ञानकी प्राप्ति नहीं होती।

(२) थूक वगैरह नहीं लगने देना, उच्चस्थान पर रखना।

(३) तैल वगैरहसे दूर रखना।

निवेदक—

संकर दान नाहटा।

अपने अमूल्य जीवनको निष्फल कर डालता है, इत्यादिका दिग्दर्शन कराते हुए जीवनको सफल बनाने तथा सुखी बनानेके सहज मार्ग बतलाये हैं। जुदे जुदे परिच्छेदोंमें क्रमसे जीवन निर्माण, स्त्री और पुरुष, स्त्री संस्कार, सासु और वहू, विधवाओंकी परिस्थिति, संयमता, चारित्र और अध्यात्मिक जीवन, इत्यादि गृहस्थके उपयोगी विषयोंपर युक्ति दृष्टान्त पूर्वक प्रकाश डाला गया है, यह पुस्तक जितना पुरुषोंके लिये उपयोगी है उससे भी कुछ अधिक स्त्रियोंके लिये उपयोगी है। पक्की जिल्द सहित मूल्य मात्र १)

जैन साहित्यमां विकार थवाथी थयेली हानि

यह पुस्तक पंडित बेचरदासजीकी प्रौढ लेखनी द्वारा ऐतिहासिक दृष्टिसे गुर्जर गिरामें लिखा गया है। श्रीमहावीर प्रभुके बाद किस किस समय जैन साहित्यमें किस किस प्रकारका परिवर्तन हुआ और उस विकृत परिवर्तनसे क्या हानि हुई यह बात सूत्रोंके प्रमाण द्वारा बड़ी ही मार्मिकता से लिखी गई है। मूल्य मात्र १)

निम्नलिखित पुस्तकें भी आपको यहां ही मिलेंगी :—

सुर सुन्दरी चरित्र—यह ग्रन्थ साधु साध्वियोंके एवं लायब्रेरियोंके अति उपयोगी है, मूल्य २)

॥ अर्हम् ॥

पूजा संग्रह ।

—•※※•—

श्रीदेवचन्द्रजीकृत स्नात्रपूजा

प्रथम हाथमें कुसुमांजलि लेईने नमोऽर्हत्कही पढे

॥ दोहा ॥

चउतीसे अतिशय जुओ, वचनातिसय जुत्त ।
सो परमेसर देखि भवि, सिंघासण संपत्त ॥१॥

॥ ढाल ॥

सिंघासण बेठा जग भाण, देखि भविकजन गुणमणि खाण । जे दीठे तुझ निरमल नाण, लहियें परम महोदय ठाण ॥१॥ कुसुमांजलि मेलो आदि जिणंदा, तोरा चरणकमल (सेवे चोसठ इंदा) चोवीश पूजोरे चोवीश सोभागी

चोवीश वैरागी, चोवीस जिणंदा ॥ कु० ॥१॥ एम कही कुसुमांजलि चढाववी तथा प्रभुना चरणें पूजा करीयें, फिर हाथमें कुसुमांजलि लेईने नमोऽर्हत् कही आ गाथा कहवी ।

॥ गाथा ॥

जो नियगुण पज्जवरम्यो, तसु अनुभव एगत्त ।
सुहपुग्गल आरोपतां, जो तसु रंग निरत्त ॥

॥ ढाल ॥

जो निज आतमगुण आणंदी, पुग्गल संगे जेह अफंदी । जे परमेसर निजपद लीन, पूजो प्रणमो भव्य अदीन ॥ कुसुमांजलि मेलो शांति जिणंदा ॥ तो० ॥कु०॥१॥ (एम कही प्रभुना जानुपर पूजा करीयें) ।

॥ गाथा ॥

निम्मल नाण पयास कर, निम्मल गुण संपन्न ।
निम्मल धम्मोवएसकर, सो परमप्पा धन्न ॥३॥

॥ ढाल ॥

लोकाकोक प्रकाशक नाणी, भविजन तारण जेहनी वाणी । परमानन्द तणी नीसाणी, तसु भगतें मुझ मति ठहराणी ॥ कुसुमांजलि मेलो नेमीजिणंदा ॥तो० कु०॥३॥ (एम कही प्रभुना वे हाथे पूजा करिये) ।

॥ गाथा ॥

जे सिज्झा सिज्झंति जे, सिझ्झसंति अणंत ।
जसु आलंबन ठवियमणा, सो सेवो अरिहंत ॥४॥

॥ ढाल ॥

शिव सुख कारण जेह त्रिकाले. सम परिणामें जगत निहाले । उत्तम साधन मार्ग देखावे इंद्रादिक जसु चरण पखाले ॥ कुसुमांजलि मेलो पास जिणंदा ॥तो०॥कु०॥४॥ (एम कही प्रभुना खंधोये पूजा करिये) ।

॥ गाथा ॥

सम्मद्दिट्ठी देस जय, साहु साहुणी सार ॥
आचारिज उवभ्झाय मुणि, जो निम्मल आधार ॥

॥ ढाल ॥

चउविह संघे जे मन धार्युं, मोक्ष तणुं कारण निरधार्युं । विविह कुसुम वरजाती गहेवी, तसु चरणे प्रणमंत ठवेवी ॥१॥ कुसुमांजलि मेलो वीर जीणंदा ॥तो०॥५॥ (एम कही प्रभुने मस्तकें पूजा करिये)। इति पांचमी गाथा ॥

॥ वस्तुछंद ॥

सयल जिनवर सयल जिन वर, नमिय मनरंग । कल्लाणक विहि संठविय करिसुधम्म सुपवित्त सुंदर ॥ सय इग सित्तरि तिथंकर, इग समय विहरंति महियल । चवण समय इगवीश जिण, जन्म समय इगवीश ॥ भत्तिय भावे पूजिया करो संघ सुजगीस ॥१॥

एक दिन अचिरा हुलरावती ॥ ए चाल ॥ भव नीजे समकित गुण रम्या । जिनभक्ति प्रमुख गुण परिणम्या ॥ तजि इन्द्रिय सुख आसंसना । करी थानक वीशनी सेवना ॥१॥ अति राग प्रशस्त प्रभावता । मनभावना एहवी भावता ॥ सविजीव करूं शासन रसी ॥ एसी भावदया मन उल्लसी ॥ २ ॥ लहो परिणाम एहवुं भलूं ॥ निपजावी जिनपद निरमलुं ॥ आउ बंध विचेइ एकभवकरी । श्रद्धा संवेग ते थिर धरी ॥ ३ ॥ तिहां चविय लहे नरभव उदार ॥ भरते तिम ऐरवततेज सार ॥ महा विदेह विजय परधान ॥ मध्यखंडे अवतरे जिन निधान ॥ ४ ॥

॥ ढाल ॥

पुन्यें सुपनाहे देखे मनमां हरप विसेपे । गजवर उज्वल सुन्दर ॥ निरमल वृषभ मनो-

देव विषयानल तापित तनु समेव । तसु शान्तिकरण जलधर समान मिथ्याविष चूरण गरुडवान ॥ ५ ॥ ते देव जगत्तारण समत्थ । प्रगट्यो तसु प्रणाम हुवो सनत्थ ॥ इम जंपी सक्रस्तव करेवी । तव देव देवी हरखे सुणेवी ॥ ६ ॥ गावे तव रंभा गीतगान । सुरलोक हुवो मंगल निधान । नरक्षेत्र आरज वंसठाम ॥ जिनराज वधे सुर हर्ष धाम ॥ ७ ॥ पिता माता घरे उच्छव अलेख । जिन शासन मंगल अति विशेष । सुरपति देवादिक हरख-संग । संयम अरथी जननें उमंग ॥ ८ ॥ सुभ-वेला लगनें तीर्थनाथ । जनम्या इन्द्रादिक हर्ष साथ ॥ सुखपाम्या त्रिभुवन सर्वजीव । वधाई वधाई थई अतीव ॥ ९ ॥ फूल अक्षतसे वधावे ॥ ३ ॥ प्रदक्षिणा देवे । (फिर) शक्रस्तव ठाणं संपाविउ कामस्स, तक कहे । फिर ।

रोली (तथा) केसरका हाथमें साथिया करे। धूप खेवें ॥

॥ ढाल ॥

(श्री शांति जिननो कलश कहिशुं०। ए चाल) श्रीतीर्थपतिनो कलश मज्झन गाइये सुखकार। नरखेत्त मंडण दुह विहंडण ॥ भविक मन आधार। तिहां रावराणा हर्ष उच्छव ॥ थयो जग जयकार। दिशी कुमरी अवधि विशेष जाणी। लह्यो हरख अपार ॥१॥ निअ अमर अमरी संग कुमरी। गावती गुण छंद। जिन जननी पासे आय पहुती ॥ गह गनी आणंद ॥ हे माय तें जिनराज जायो। शुचि वधायो रम्म। अम्हजम्म निम्मल करण कारण ॥ करिस सूईअ कम्म ॥ २ ॥ तिहां भूमि सोधन दीप दरपण वाय वीजणधार। तिहां करिय कदली गेह जिनवर ॥ जननी

झझनकार । वर राखड़ी जिनपाणि बांधी ॥ दीये इम आसीस । युगकोड़ कोड़ी चिरंजीवो धर्मदायक ईस ॥ ३ ॥

॥ ढाल ॥

उल्लालानी । जिन रयणीजी दश दिश उज्जलता धरे ॥ सुभ लगनेजी ज्योतिस चक्र ते संचरे । जिन जनम्याजी तिन अवसर माता घरे ॥ तिण अवसरजी इन्द्रासण पण थरहरे ।

॥ त्रोटक ॥

थरहरे आसण इन्द्र चिंते कौन अवसर ए बन्यो । जिन जन्म उच्छव काल जाणी अतिहि आणंद उपन्यो ॥ निज सिद्ध संपति हेतु जिन वर जाणि भगते उमह्यो । विकसत वदन प्रमोद वधते देवनायक गहगह्यो ॥ १ ॥

॥ ढाल ॥

तव सुरपतिजी घंटानाद करावए । सुर

लोके जी घोषणा एह दिरावए ॥ नरक्षेत्रेजी जिनवर जनंम हुवो अछे । तसुभगतेजी सुरपति मंदिर गिर गच्छे ।

॥ त्रोटक ॥

गच्छे मंदिर शिखर ऊपर भुवन जीवन जिनतणो । जिन जन्म उच्छव करण कारण आवजो सवि सुरगणो ॥ तुम सुद्ध समकित थास्ये निरमल देव देव निहालतां । आपणा पातिक सर्व जासे नाथ चरणपखालत्तां ॥२॥

॥ ढाल ॥

इम सांभलजी सुरवर कोडि वहु मिली । जिन वंदनजी मंदरगिरि साहमी चली ॥ सोहम पतिजी जिन जननी घर आविया । जिन माताजी वांदी स्वासी वधाविया ॥

॥ त्रोटक ॥

वधाविया जिनवर हर्षे वहुलै धन्य हूं कृत

पुन्य ए । त्रैलोक्यनायक देवदीठो सुज समो कुण अन्य हे, जगत जननी पुत्र तुह्मचां मेरु मज्जन वरकरी ॥ उच्छंग तुह्मचै वलिय थापित्त आतमा पुन्ये भरी ॥३॥

॥ ढाल ॥

सुरनायकजी निजनिज कर कमले ठव्या । पंच रूपे जी अतिसय महिमाये स्तव्या ॥ नाटक विधिजी तव बत्तीस आगल वहँ । सुर कोडिजी जिन दरसणने उमहे ॥

॥ त्रोटक ॥

सुर कोडिकोड़ी नाचती वलिनाथ शचि गुण गावती । अपछरा कोड़ी हाथ जोड़ी हाव भाव दिखावती । जय जयो जिन राज तूं जय रूप एम दै आसीसए । अम्हत्राण शरण आधार जीवन एक तूं जगदीश ए ॥४॥

॥ ढाल ॥

सुरगिरिवर जी पांडुक वनमें चिहूं दिसे। गिरिसिल परजी सिंहासण सासय वसे॥ तिहां आणीजी शक्रें जिन खोले ग्रह्या।। चोसठेजी तिहां सुरपति आवी रह्या॥

॥ त्रोटक ॥

आविया सुरपति सर्व भगते कलश श्रेणि बणाव ए। सिद्धार्थ पमुहा तीर्थ औषधि सर्व वस्तु अणाव ए। अच्चूयपति तिहां हुकम कीनो, देव कोडा कोडिने। जिन सज्झनारथ नीर ल्यावो सर्व सुर कर जोडिने॥५॥ सर्व स्नात्रिया जलका कलश हाथमें लेके खड़ा रहै और मुखसे नीचे मुजब पढे॥

॥ ढाल ॥

(शांतिने कारणे इंद्र कलशा भरे। ए चाल॥) आत्म साधन रसी देव कोड़ी हसी।

उल्लसीने धसी खीरसागर दिशी। पउमदह आदि दह गंग पमुहा नई। तीर्थजल अमल लेवा भणी ते गई ॥ १ ॥ जाति अड कलश करि सहसअठोत्तरा। छत्र चामर सिंहासणो सुभतरा। उपगरणा पुष्फचंगेरि पमुहा सवे। आगमें भासिया तेम आणी ठवे ॥२॥ तीर्थ जल भरिय करी कलश करि देवता। गावता भावता धर्म्म उन्नतिरता। तिरिय नर अमरने हर्ष उपजावता। धन्य अम्ह सगति सुचि भगति इम भावता ॥३॥ सम्मकित बीज निज आत्म आरोपता। कलश पाणीमिसे भक्ति जल सींचता। मेरुसिहरो वरै सर्व आव्या वही। शक्रउच्छंग जिन देख मन गह गही ॥४॥

॥ गाथा ॥

हंहो देवा २ अणाई कालो अदिठ्ठपुव्वो। तिलोयतारणो। तिलोयबंधू। मिच्छत्तमोहवि-

द्धंसणो । अणाई तिन्ना विणासणो ॥ देवाहि देवो दिठ्ठो २ हिअय कामेहिं ॥१॥

॥ ढाल तेहज ॥

एम पभणंति वण भुवन जोइसरा । देव वेमाणिया भत्ति धम्मायरा । केवि कप्पठिया केवी मीत्ताणुगा । केई वररमण वयणेण अइउच्छगा ॥५॥

॥ वस्तु छन्द ॥

तत्थ अच्चुय २ इन्द्र आदेश । कर जोड़ी सर्व देवगण । लेइ कलश आदेश पामीय । अद्-भुत रूप सरूप जुय । कवण एह' पुछंती सामीय । इंद्र कहे जगतारणों । पारग अम्ह-परमेश । नायक दायक धम्मनिहि । करीये तसु अभिषेख ॥ १ ॥

॥ ढाल ॥

(तीर्थ कमल वरउदक भरीने । पुष्कर

सागर आवै ए चाल) पूर्ण कलश सुचि उदकनी धारा । जिनवर अंगे न्हामें। आतम निरमल भाव करंता वधते शुभ परिणामें। अच्युतादिक सुरपतिमज्जन लोकपाल लोकांत । सामानिक इन्द्राणी पमुहा इम अभि मेक करंत ॥ १ ॥ पू० ॥

॥ गाथा ॥

तव ईसान सुरिंदो । सक्क पभणेइ करि हु सुपसाओ। तुह्म अंके महनाहो ॥ खिणमित्तं अह्म अप्पेह ॥ १॥ तासक्कन्दो पभणाई । साह मीय वच्छलंमि वहूलाहो ॥ आणाइ वंतेणं गिराह होउ कयत्थाओ ॥ २ ॥ इतना कहके । सर्व स्नात्रिया, भगवान उपर कलश ढालें। और मुखसे पढें ॥

॥ ढाल ॥

सोहम सुरपति वृषभ रूप करि । न्हवण

करे प्रभु अंगे। करिय विलेपण पुष्फ माल ठवि वर आभरण अभंगे॥ सो० ॥ १ ॥ तब सुरवर बहु जय जय रव करे। नचे धरी आणंद। मोक्ष मारग सारथ पति पाम्यो॥ भांजिसु हिव भवफंद। सो० ॥ २ ॥ कोडि-बत्तीस सोवन्न उवारी। वाजंते वरनाद॥ सुरपति संघ अमर श्रीप्रभुने। जननीने सुप्रसाद॥ ३ सो॥ आणी थापे एम पयंपे अह्म निसतरिया आज। पुत्र तुम्हारो धणीय अह्मारो॥ तारण तरण जहाज॥ ४ ॥ सो० ॥ मात जतन करि राखजो एहने तुह्म सुत अह्म आधार। सुरपति भगति सहित नंदिसर। करे जिन भगति उदार॥ ५ ॥ सो० ॥ निय निय कप्प गया सवि निर्ज्जर। कहितां प्रभु गुणसार॥ दीक्षा केवल ज्ञान कल्याणक इच्छा चित्त मझार ॥ सो० ॥ खरतर गच्छ

जिन आणारंगी । राजसार उवज्झाय ॥ ज्ञान धरम दीपचंद सुपाठक । सुगुरू तणो सुपसाय ॥ सो० ७ ॥ देवचंद जिन भगते गायो । जनम महोच्छव छंद ॥ बोधबीज अंकूरो उल्लस्यो ॥ संघ सकल आणंद ॥ सो० ॥ ८ ॥

॥ ढाल ॥

इम पूजा भगते करो । आतमहित काज ॥ तजिय विभाव निजभावना । रमतां शिवराज ॥ १ ॥ इ० ॥ काल अनंते जे हुवा । होसे जेह जिणंद । संपई सीमंधर प्रभु । केवल नाण दिणंद ॥इ०॥२ ॥ जनम महोछव इणि परे । श्रावक रुचिवंत । विरचै जिन प्रतिमा तणो । अनुमोदन खंत ॥इ० ३॥ देवचंद जिन पूजना । करता भवपार । जिन पडिमा जिन सारखी । कही सूत्र मझार ॥ इम० ४ ॥

॥ इति स्नात्रपूजा विधि संपूर्णम् ॥

अष्टप्रकारी पूजा।



जल पूजा।

॥ दोहा ॥

गंगा मागध क्षीरनिधि, औषध मिश्रित सार।
कुसुमे वासित शुचि जलें, करो जिन स्नात्र उदार॥

॥ ढाल ॥

मणि कनकादिक अड़विध करि भरि कलस सफार। शुभ रुचि जे जिनवर नमें तसु नहीं दुरित प्रचार॥ मेरु शिखर जिम सुरवर जिनवर न्हवण अमान। करता वरता निज गुण समकित वृद्धि नधान॥२॥

॥ छन्द ॥

हर्ष भरि अपसरावृन्द आवे। स्नात्र करि एम आसीस भावे। जिहां लगे सुरगिरि जंबु दीवो। अमतणा नाथ जीवो तुम जीवो॥३॥

॥ श्लोक ॥

विमल केवलभासनभास्करं, जगति जंतु महोदयकारणं । जिनवरं बहुमान जलौघतः, शुचि मनः स्नपयामि विशुद्धये ॥१॥ ॐ ह्रीं परम परमात्मने अनंतानंत ज्ञानशक्तये जन्मजरामृत्यु- निवारणाय श्रीमज्जिनेन्द्राय जलं यजामहे स्वाहा ॥ १ ॥ इति जल पूजा ॥ (यह कहकर जलसे न्हवण करवाना ॥)

चंदन पूजा ।

॥ दोहा ॥

बावना चन्दन कुम कुमा । मृगमदने घनसार ॥
जिन तनु लेपै तसु टले । मोह सन्ताप विकार ॥१॥

॥ ढाल ॥

सकल सन्ताप निवारण तारण सहु भवि- चित्त । परम अनीहा अरिहा तनु चरचो भवि- नित्त ॥ निज रूपै उपयोगी धारी जिन गुण-

गेह । भाव चंदन सुह भावथी टाले दुरित अछेह ॥ २ ॥

॥ चाल ॥

जिन तनु चरचतां सकल नाकी । कहे कुग्रह उष्णता आज थाकी ॥ सफल अनिमेषता आजम्हांकी । भव्यता अम्ह तणी आज पाकी ॥ ३ ॥

॥ श्लोक ॥

सकल मोहत सिश्र विनाशनं, परमशील भावयुतं जिनं । विनयकुंकुम चंदनदर्शनैः, सहज तत्वविकाशकृतेर्चये ॥ १ ॥ ॐ ह्रीं परमपरमात्मने अनन्तानन्तज्ञानशक्तये जन्मजरामृत्युनिवारणाय श्रीमज्जिनेंद्राय चंदनं यजामहे स्वाहा २॥ इति चंदन पूजा (यह कहकर केशर और चंदन चढ़ाना चाहिये।)

नववांगी भाव पूजा ।

॥ दोहा ॥

पर उपगारी चरणयुग, अनंत शक्ति स्वयमेव । यातें प्रथम पूजिये, आतम अनुभव सेव (चरणोंमें टीकी दे) ॥ १ ॥

जानु पूजा, दूसरी, समाधि भूमिका जान । आतम साधन ज्ञान ले, शुद्ध दशा पहिचान ॥ (गोड़ोंको टीकी दे) ॥ २ ॥ कर पूजा जिन राजकी, दिये सम्वच्छरी दान । ते कर सुभ मस्तक ठवूं, पहुंचे पद निर्वाण ॥ (हाथोंमें टीकी दे) ॥ ३ ॥ भुजबल शक्ति जानके, पूजा करूं चित लाय । रागादिमल हटायके, आतम गुण दरशाय ॥ (कंधोंमें टीकी) ॥४॥ सिर पूजा जिनराजको, लोक शिरोमणि भाव । चउगति गमन मिटायके, पंचम गति सम भाव ॥ (मस्तकसें

टीकी दे) ५ ॥ लिलवट पूजा सार है, तिलक विधि विश्राम । वदन कमल वाणीसुनें, पहुंचे निज गुण धाम ॥ (ललाटमें टीकी दे) ॥६॥ कंठ पूजा है सातसी, वचनातिशय वृंद । सप्त भेद पंयचिश श्रुत, अनुभव रस नो कंद ॥ (कंठमें टीकी दे) ॥७॥ हृदय कमलनी पूजना, सदा वसो चितमांह । गुण विवेक जागे सदा, ज्ञान कला घट छाय (हृदयमें टीकी दे) ॥८॥ नाभी मंडल पूजके, षोड़श दलको भाव । मन मधुकर मोही रह्यो, आनन्द घन हरपाय (नाभीमें टीकी दे) ॥९॥ इति ॥

॥ दोहा ॥

पुनः जल भरि संपुटमां, युगलिक नर पूजंत ।
ऋषभ चरण अंगूठवे, दायक भवजल अन्त ॥१॥

जानु वलें काउसग रह्या, विचर्या देश विदेश । खड़ा २ केवल लह्या, पूजा जानु

नरेश ॥ २ ॥ लोकांतिक वचनें करी, वरस्या वरसी दान । करकंडे प्रभु पूजना, पूजो भवि बहुमान ॥ ३ ॥ मान गयूं दो अंशथी, देखी वीर अनन्त । पूजा वले भवजल तर्या, पूजो खंध महंत ॥ ४ ॥ रत्नत्रय गुण ऊजली, सकल सुगुण विश्राम । नाभी कमलनी पूजना, करता अविचल धाम ॥ ५ ॥ हृदय कमल उपशम बले, बाल्यो रागनें द्वेष । हेम दहै वनखंडनें, हृदय तिलक सन्तोष ॥ ६ ॥ सोल पहर दई देशना, कंठ विवर वरतल । मधुर धुनी सुरनर सुनें, तिण गले तिलक अमूल ॥ ७ ॥ तीर्थंकर पद पुन्य थी, त्रिभुवन जिन सेवंत । त्रिभुवन तिलक समा प्रभु, भाल तिलक जयवंत ॥ ८ ॥ सिद्ध शिला गुण ऊजली, लोकांतिक भगवंत । वसिया तिण कारण वही, शिर शिखा पूजंत ॥ ९ ॥ उपदेशक नव तत्वना, तिण नव अंग जिणंद

पूजो बहु विध भाव थी, कहे सहु वीरमुनिन्द।
॥ १० ॥ इति ॥

अथ पुष्प पूजा ॥

॥ दोहा ॥

शतपत्री वर मोगरा, चम्पक जाइ गुलाव।
केतकी दमणो बोलसिरि, पूजो जिन भरिछाव॥१॥

॥ ढाल ॥

अमल अखण्डित विकसित सुभ सुमनी वन जाति, लाखीनो टोडर ठवो आंगी रचो बहुभांति। गुण कुसुमें निज आतम मण्डित करवा भव्य, गुणरागी जड़त्यागी पुष्प चढ़ावो नव्य ॥ २ ॥

॥ चाल ॥

जगधणी पूजतां विविध फूलै, सुरवरा ते गिणों त्रण अमूले। खन्ति धर मानवा जिन पद पूजे, तसुतणा पाप संताप धूजे ॥ ३ ॥

दो पथकी जिम आलिका मालिका मंगलनीत।
दीपतणी शुभज्योती द्योती जिन मुखचन्द,
निरखी हरखो भविजन जिम लहो पूर्णानन्द ॥

॥ चाल ॥

जिन गृहे दीप माला प्रकासे, तेहथी तिमर अज्ञान नासे। निज घटे ज्ञानज्योती विकासे, तेहथी जग तणा भाव भासे ॥ ३ ॥

॥ श्लोक ॥

भविक निर्म्मलबोध विकाशकं, जिनगृहे शुभदीपकदीपनं। सुगुणराग विशुद्धसमन्वितं, दधतु भावविकाश कृते जनाः ॥ १ ॥ ॐ ह्रीं परमपरमात्म० दीपं यजामहे स्वाहा ॥ ५ ॥ इति दीप पूजा ॥ (मंगलदीप चढ़ावे ।)

अथ अक्षत पूजा।

॥ दोहा ॥

अक्षत अक्षत पूरसु, जे जिन आगे सार।
स्वतिक रचतां विस्तरै, निजगुण भर बिस्तार ॥

॥ ढाल ॥

उज्जल अमल अखगिडत मगिडत अक्षत चंग, पुञ्जत्रय करो स्वस्तिक आस्तिक भावे रंग। निज सत्ताने सन्मुख उनमुख भावे जेह, ज्ञानादिक गुणठावे भावे स्वस्तिक एह ॥२॥

॥ चाल ॥

स्वस्तिक पूरतां जिनप आगे, स्वस्ति श्रीभद्र कल्याण जागे। जन्म जरा मरणादि अशुभ भागे, नियत शिव सर्व रहे तासु आगे ॥ ३ ॥

॥ श्लोक ॥

सकल मंगलकेलि निकेतनं, परम मंगलभावमयं जिनं। श्रयति भव्यजना इति दर्शयन्, दधतु नाथपुरोक्षतस्वस्तिकं ॥ १ ॥ ॐ ह्रीं परमपरमात्मने० अक्षतं यजामहे स्वाहा ॥ ६ ॥ इति अक्षत पूजा ॥ (अखगड चावल चढ़ावे ॥)

अथ नैवेद्य पूजा ।

॥ दोहा ॥

सरस सुचि पकवान बहु, शालि दालि घृतपूर ।
धरो नैवेद्य जिन आगलै, क्षुधा दोष तसु दूर ॥

॥ ढाल ॥

लपनश्री वर घेवर मधुतर मोतीचूर, सिंह-
केसरिया सेविया दालिया मोदकपूर । साकर
द्राख सींघोड़ा भक्ति व्यञ्जन घृतसद्य, करो
नैवेद्य जिन आगले जिम मिले सुख अनवद्य ॥२॥

॥ चाल ॥

ढोवतां भोज्य परभाव त्यागे, भविजना
निज गुण भोज्य मांगे । अम्हभणि अम्हतणी
सरूप भोज्य, आपजो तातजी जगत पूज्य ॥३॥

॥ श्लोक ॥

सकल पुद्गल संग विवर्जनं, सहज
...। सरस भोजन नव्यनिवेद-

नात्, परमनिर्वृतिभागमहं स्पृहे परमपरमात्मने० । नैवेद्यं यजामहे स्वाहा ॥ ७ ॥ इति नैवेद्य पूजा ॥ (मिठाई पकवान चढ़ावे ॥)

अथ फल पूजा ।

॥ दोहा ॥

पक्क बीजोरु जिन करे, ठवतां शिवपद देइ ।
सरस मधुर रस फल गिणे, इह जिन भेट करेइ ॥

॥ ढाल ॥

श्रीफल कदली सुरंग नारंगी आंबा सार,
अंजीर वंजीर दाड़िम करणा पट्बीज सफार ।
मधुर सुस्वादिक उत्तम लोक आनन्दित जेह,
वर्ण गन्धादिक रमणीक बहुफल ढोवे तेह ॥२॥

॥ चाल ॥

फलभर पूजतां जगत स्वामी, मनु जगति ते लहे सफल पामी । सकल मनुष्येय गतिभेद रंगे, ध्यावतां फल समाप्ति प्रसंगे ॥ ३ ॥

लङ्कारवस्त्रादिकं, पूजां तीर्थकृतां करोति सततं शक्त्यातिभक्त्याहृतः। नीरागस्य निरञ्जनस्य विजितारातेस्त्रिलोकीपतेः, स्वस्यान्यस्य जनस्य निर्वृतिकृते क्लेशक्षयाकांक्षया ॥ ॐ ह्रीं परम-परमात्मने० वस्त्रं यजामहे स्वाहा ॥ (वस्त्र चढ़ावे ॥) इति वस्त्र पूजा ॥

अथ नमक उतारण पूजा।

अह पडिभग्गपसरं, पयाहिणं मुणिवयं क-रिऊणं। पडइ सलूणत्तण लज्जियंच, लूणंहू अ-वहरन्ति ॥ १ ॥ पिक्खेविसु मुह जिण वरह दीहर नयण सलूण। न्हावइ गुरु मच्छह भरिय; जलण पइस्सइ लूण॥२॥ लूण उतारिह जिणवरह; तिन्नि पयाहिणि देव। तड़ तड़ शब्द करन्तिये; विज्जाजलेण ॥ ३ ॥ जं जेण विज्जव थुईः; जलेण तं तहइ अत्थसहस्स। जिनरूपा मच्छरेणावि; फुट्टइ लूणं तड़ तड़-

स्स ॥ ४ ॥ (यह कर लूण अग्निशरण करे पीछे लूण पाणी लेई; मुखसे गाथा कहे।)

॥ गाथा ॥

सव्ववि मुणवइ जलविजल; तन्तह भमणइ पास। अहवि कयन्तस्स निम्मलउ; निग्गुण वुद्धि पसाय ॥ ५ ॥ जलण अणें विरण जलणहि पास; भरवि कयज्जल भावहि पास। तिन्नि पयाहिणि दिन्निय पास; जिम जिय छूटे भव दुहपास ॥ ६ ॥ जल निम्मल कर कमलेहि लेविणु, सुरवर भावहि मुणिवई सेवणु। पभणई जिणवर तुहपइ सरणं, भय तुट्टइ लब्भइ सिद्धि गमणं ॥७ ॥ (यह कह कर लूण उतारी जल शरण करे।) इति नमक उतारण पूजा।

अथ पुष्पमाला पहरावण पूजा ॥

उन्नय पयय भत्तस्स, नियठाणे सगिठव

कुणंतस्स । जिण पासे भमिय जणस्स, पिच्छ-
तुह हुयवहे पड़णं ॥ १ ॥ सव्वो जिणप्पभावो,
सरिसा सरिसेसु जेण रच्चन्ती । वव्वन्नूण अ-
पासे, जड़स्स समणं न सङ्कमणं ॥ २ ॥ अच्चन्त
दुःखकरं पिह्न, हुयवह निवड़ेन जड़ेन कयं ।
आणा सव्वन्नूणं, न कया सुकयत्थ मूलमिणं
॥ ३ ॥ (यह कहकर माला पहनावे ॥)

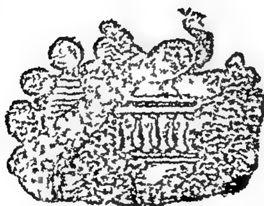
अथ छठो फूल पूजा ॥

उवणेव संगलेवो, जिणाण मुह लालि संव-
लिया । तित्थपवत्तम समई, तियसे विमुक्का
कुसुमवुट्ठी॥ १ ॥ (यह कहकर प्रभुके सम्मुख
फूल उछाले ॥)

प्रभातकी आरती ॥

जय जय आरती शान्ति तुमारी, तोरा
चरण कमलकी मैं जाउं बलिहारी ॥ टेर ॥
विश्वसेन अचिराजीके नन्दा, शांतिनाथ मुख

पूनम चंदा ॥ जय० ॥ १ ॥ चालिस धनुप सोवनमय काया, मृग लांछन प्रभु चरण सुहाया ॥जय ॥२॥ चक्रवर्ति प्रभु पंचम सोहे, सोलम जिनवर जग सहु मोहे ॥ जय० ॥ ३ ॥ मंगल आरती भोरे कीजे, जनम २ को लाहो लीजे ॥ जय० ॥ ४ ॥ कर जोड़ी सेवक गुण गावे, सो नर नारी अमर पद पावे ॥ जय० ॥ ॥ ५ ॥ इति ॥



कुणांतस्स । जिण पासे भमिय जणस्स, पिच्छ-तुह हुयवहे पड़णं ॥ १ ॥ सव्वो जिणप्पभावो, सरिसा सरिसेसु जेण रच्चन्ती । वव्वन्नूण अ-पासे, जड़स्स भमणं न सङ्कमणं ॥ २ ॥ अच्चन्त दुःखकरं पिहू, हुयवह निवड़ेन जड़ेन कयं । आणा सव्वन्नूणं, न कया सुकयत्थ मूलसिणं ॥ ३ ॥ (यह कहकर माला पहनावे ॥)

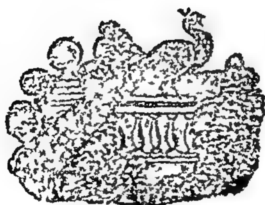
अथ छठो फूल पूजा ॥

उवणेव संगलेवो, जिणाण मुह लालि संव-लिया । तित्थपवत्तस समई, तियसे विमुक्का कुसुम वुट्ठी॥ १॥ (यह कहकर प्रभुके सम्मुख फूल उछाले ॥)

प्रभातकी आरती ॥

जय जय आरती शान्ति तुमारी, तोरा चरण कमलकी मैं जाउं बलिहारी ॥ टेर ॥ विश्वसेन अचिराजीके नन्दा, शांतिनाथ मुख

पूनम चंदा ॥ जय० ॥ १ ॥ चालिस धनुष सोवनमय काया, मृग लांछन प्रभु चरण सुहाया ॥जय ॥२॥ चक्रवर्ति प्रभु पंचम सोहे, सोलम जिनवर जग सहु मोहे ॥ जय० ॥ ३ ॥ मंगल आरती भोरे कीजे, जनम २ को लाहो लीजे ॥ जय० ॥ ४ ॥ कर जोड़ी सेवक गुण गावे, सो नर नारी अमर पद पावे ॥ जय० ॥ ॥ ५ ॥ इति ॥



अथ नवपद-पूजा ।

अथ प्रथम अरिहंतपद-पूजा ॥

॥ दोहा ॥

परम मंत्र प्रणमी करी, तास धरी उर ध्यान ।
अरिहंतपद पूजा करो, निज २ शक्ति प्रमाण ॥१॥

॥ काव्य ॥

उप्पन्न सन्नाण महोमयाणं, सप्पाडिहेरा सणसंठियाणं ॥ सद्देसणाणंदिय सज्जणाणं, नमो २ होउ सयाजिणाणं ॥ १ ॥ नमोनंत सन्त प्रमोद प्रदानं, प्रधानाय भव्यात्मने भास्वताय ॥ थया जेहना ध्यानथी सौख्यभाजा, सदा सिद्धचक्राय श्रीपालराजा ॥ २ ॥ कर्या कर्म दुर्मर्म चकचूर जेणे, भला भव्य नवपद ध्यानेन तेणे ॥ करी पूजना भव्य भावे त्रिकाले, सदा वासियो

आतमा तेण काले ॥ ३ ॥ जिके तीर्थंकरा कर्म उदये करीने, दिये देशना भव्यने हित धरीने॥ सदा आठ महापाडिहारे समेता, सुरेशे नरेशे स्तव्या ब्रह्मपूता ॥ ४ ॥ करया घातिया कर्म चारे अलग्गा, भवोपग्रही चार छे जे विलग्गा ॥ जगत्पंच कल्याणके सौख्य पामें, नमो तेह तीर्थंकरा मोक्षकामें ॥ ५ ॥

॥ ढाल ॥

तीरथपति अरिहा नमुं, धरम धुरंधर धीरो जी ॥ देसना अमृत वरसता, निज वीरज वड वीरो जी ॥ ती० ॥ उल्लालो ॥ वर अखय निर्मल ज्ञान भासन सर्व भाव प्रकासता, निज शुद्ध श्रद्धा आत्म भावे चरण थिरता वासता ॥ जिन नामकर्म प्रभाव अतिशय प्रातिहारज शोभता, जगजंतु करुणावंत भगवंत भविकजने थोभता ॥ ६ ॥

अथ द्वितीय श्रीसिद्धपद-पूजा ॥

॥ दोहा ॥

दूजी पूजा सिद्धकी, कीजे दिल खुसियाल ।
अशुभ करम दूरे टले, फले मनोरथ माल ॥१॥

॥ काव्य ॥

सिद्धाण माणंद रमाल याणं, नमो २ त चउक्कयाणं ॥ सम्मग्ग कम्म क्खय कारणाणं, जन्मजरा दुक्ख निवारणाणं ॥ १४ ॥ करी आठ कर्म खय पार पाम्या, जरा जन्म मरणादि भय जेण वाम्या ॥ निवारणाय जे आत्मरूपे प्रसिद्धा, थया पार पामी सदा सिद्धबुद्धा ॥ १५ ॥ त्रिभागोन देहावगाहात्मदेसा, रह्या ज्ञानमयजातिवर्णादिलेसा ॥ सदानन्तसौख्याश्रिता ज्योतिरूपा, अनाबाध अपुन र्भवादि स्वरूपा ॥ १६ ॥

॥ चाल ॥

सकल कर्ममल क्षय करी, पूरण शुद्ध स्वरूपो जी ॥ अव्याबाध प्रभुतामई, आतम संपत भूपो जी ॥ उल्लाला ॥ जे भूप आतम सहज संपति, शक्ति व्यक्तिपणों करी । स्वद्रव्यक्षेत्र स्वकालभावे, गुण अनंता आदरी ॥ स्वस्वभाव गुणपर्याय परणति, सिद्धसाधन परभणी, मुनिराज मानस हंस समवड, नमो सिद्ध महा गुणी ॥ १७ ॥

॥ ढाल ॥

समय पएसंतर अणफरसी चरम तिभाग विसेस । अवगाहन लही जे शिव पुहता, सिद्ध नमो ते असेस रे ॥ १८ ॥ भ० पूर्व प्रयोगने गति परणामे, बंधन छेद असंग । समय एक उरधगति जेहनी, ते सिद्ध प्रणमो रंग रे ॥ भ० १९ सि० ॥ निरमल सिद्धशिलाने ऊपर

जी । चिदानंद रसस्वादता, परभावे निक्कामो जी ॥ उल्लालो । निक्काम निरमल शुद्ध चिद-घन, साध्य निज निरधारथी ॥ वरज्ञान दरसन चरण वीरज, साधना व्यापार थी । भवि जीव-बोधक तत्वशोधक, सयलगुण संपतिधरा ॥ संवर समाधी गत उपाधी, दुविध तपगुण आद रा ॥ २५ ॥

॥ ढाल ॥

पांच आचार जे सूधा पाले, मारग भाखे साचो । ते आचारज नमिये तेहसुं, प्रेम करीने याचो रे । भ० ॥ २६ ॥ सि० ॥ वर छत्तीस-गुणोकरि शोभे, युगप्रधान जगमोहे । जगमोहे न रहे खिण कोहे, सूरि नमूं ते जोहे रे भ० ॥२७॥ सि० ॥ नित अप्रमत्त धरम उव एसे, नहि विकथा न कषाय । जेहने ते आचारज अकलूस अमल अमाय रे ॥ भ० २८ ॥

सि० ॥ जे दिये सारण वारण चोयण, पडिचोयण वलि जनने । पटधारी गच्छथुंभ आचारज, ते मान्या मुनि मनने रे ॥ भ० ॥ २६ ॥ सि० अरथमिये जिन सूरज केवल, वंदी जे जगदीवो ॥ भुवन पदारथ प्रगटनपटु ते, आचारज चिरजीवो रे ॥ भ० ॥ ३० ॥ सि० ॥

॥ ढाल ॥

ध्याता आचारज भला, महामंत्र शुभ ध्यानी रे ॥ पंचप्रस्थाने आतमा, आचारज हुय प्राणी रे ॥ वी० ॐ ह्रीं आचार्यपदे अष्ट द्रव्यं यजामहे स्वाहा ॥ ३ ॥

अथ चौथी उपाध्यायपद पूजा ।

॥ दोहा ॥

गुण अनेक जग जेहना, सुंदर शोभित गात्र ।
उवझायपद अरचिये, अनुभव रसनो पात्र ॥

ज्झाय नमिजे जे वलि, जिनशासन उजवाले रे ॥ भ० ॥ ३८ ॥ सि० ॥

॥ ढाल ॥

तप सज्झाये रत सदा, द्वादश अंगनो ध्याता रे । उपाध्याय ते आतमा, जगबंधव जगत्राता रे ॥ वी० ॥ ३६ ॥ ॐ ह्रीं० श्रीपाठकपदे अष्ट द्रव्यं यजामहे स्वाहा । इति चतुर्थ उपाध्यायपद पूजा ॥

अथ पांचवी साधुपद पूजा ॥

॥ दोहा ॥

मोक्षमारग साधनभणी, सावधान थया जेह ।
ते मुनिवर पद वंदता, निरमल थाये देह ॥

॥ काव्य ॥

साहूण संसाहियसंजमाणं नमो नमो शुद्धदयादमाणं । तिगुत्तगुत्ताण समाहियाणं, मुणीण माणंद पयट्टिआणं ॥ करेसेवनासूरिवा-

यग गणीनी, करूं वर्णना तेहनी सी मुणीनी । समेता सदा पंचसमेतेत्रिगुप्ता, त्रिगुप्तै नहीं काम भोगेषु लिप्ता ॥४१॥ वली बाह्य अभ्यंतरे ग्रन्थ-टाली, हुयेमुक्तिनेयोग चारित्रपाली । शुभाष्टांग-योगेरमेचित्तवाली, नमुं साधुने तेह निज पापटाली ॥ ४२ ॥

॥ ढाल ॥

सकल विषयविष वारिने, निकामी नि-स्संगी जी । भवदव ताप समावता, आतम साधन रंगीजी ॥ स० ॥ जे रम्या शुद्ध स्वरूप रमणों देह निर्मम निर्मदा, काउसग्गमुद्रा धीर आसन ध्यान अभ्यासी सदा। तप तेज दीपे कर्म जीपे नैव छीपे परभणी ॥ मुनिराज करुणा सिंधु त्रिभुवन बन्धु प्रणमूं हितभणी ॥४३॥

॥ ढाल ॥

जिम तरुफूले भमरो बेसे, पीड़ा तस न

उपाय । लेई रस आतम संतोषे, तिम मुनि गोचरी जाय रे ॥ भ० ॥ ४४ ॥ पांच इन्द्रीने जे नित जीपे, षट्काया प्रतिपाल । संजम सतर प्रकार आराधे, वन्दूं दीनदयाल रे ॥ भ० ४५ ॥ सि० ॥ अढारसहस सीलांगना धोरी, अचल आचार चरित्र । मुनिमहंत जयणायुत वंदी, कीजे जनम पवित्र रे ॥ भ० ॥ सि० ॥ ४६ ॥ नव विध ब्रह्मगुप्ति जे पाले, वारे विध तपसूरा । एहवा मुनि नमिये जो प्रगटे, पूरव पुन्य अंकूरा रे ॥ भ० ४७ ॥ सि० ॥ सोना-तणी परे परीक्षा दीसे, दिन २ चढते वाने ॥ संजम खप करता मुनि नमिये, देशकाल अनु-माने रे ॥ भ० ४८ ॥

॥ ढाल ॥

अप्रमत्त जे नित रहे, नवि हरखे नवि रे । साधु सुधा ते आतमा, स्युं मुंडे

स्युं लोचे रे ॥ वी० ॥ ४६ ॥ ॐ ह्रीं साधु पदे अष्ट द्रव्यं यजामहे स्वाहा ॥

अथ छट्ठी दर्शनपद-पूजा ॥

॥ दोहा ॥

जिनवर भाषित शुद्ध नय, तत्वतणी परतीत ।
ते सम्यग्दर्शन सदा, आदरिये शुभ रीत ॥१॥

॥ काव्य ॥

जिणुत्त तत्ते रुइ लक्खणस्स, नमो २ निम्मल दंसणस्स। मिच्छत्त नासाइ समुग्गमस्स, मूलस्स सधम्ममहा दुमस्स॥ विपर्यासहोवासना-रूपमिथ्या, टले जे अनादीअछेजे कुपथ्या। जिनोक्ते हुइं सहजथीशुधध्यान, कहियेदर्शनंतेह-परमंनिधानं ॥ ५० ॥ विनाजेहथीज्ञान मज्ञान-रूपं, चरित्रं विचित्रं भवारण्यकूपं। प्रकृति-सातने उपसमे क्षय तेह होवे, तिहांआपरूपेस-दाआ पजावे ॥ ५१ ॥

॥ ढाल ॥

सम्यग् दरसण गुण नमो, तत्व प्रतीत सरूपोजी । जसु निरधार स्वभाव छे, चेतन गुण जो अरूपी जी ॥

॥ चाल ॥

जे अनूप श्रद्धा धर्म प्रगटे सयल पर ईहा टले, निजशुद्ध सत्ता भाव प्रगटे अनुभव करणा ऊछले । बहु मान परिणतवस्तु तत्वे अहव सुखकारण पणो, निज साध्य दृष्टे सरव करणी तत्वता संपति गिणो ॥ ५२ ॥

॥ ढाल ॥

शुद्धदेव गुरु धर्म परीक्षा, सद्दहणा परिणाम । जेह पामीजे तेह नमीजे, सम्यग्दर्शन नाम रे ॥ भ० ५३ सि० ॥ मल उपशम क्षय उपशम जेहथी, जे होइ त्रिविध अभंग । सम्य-दर्शन तेह नमीजे, जिनधरमें दृढ रंग रे

॥ भ० ५४ सि० ॥ पांच वार उपशम लहीजे, क्षयउपसमीय असंख । एक वार क्षायक ते सम्यक्, दर्शन नमीये असंख रे ॥ भ० ॥ ५५ सि० ॥ जे विण नाण प्रमाण न होवे, चारित्र तरु नवि फलियो । सुख निरवाण न जेविण लहिये, समकित दरशन वलिओ रे ॥ भ० ५६ सि० ॥ सडसठ बोले जे अलंकरियो, ज्ञान चारित्रनुं मूल ॥ समकितदर्शन ते नित प्रणमूं शिवपंथनुं अनुकूल रे ॥ भ० ५७ सि० ॥

॥ ढाल ॥

समसंवेगादिक गुणा, क्षयउशम जे आवे रे । दर्शन ते हिज आतमा, स्युं होय नाम धरावे रे ॥ वी० ५८ ॥ ॐ ह्रीं प० दर्शन पदे अष्ट द्रव्यं यजामहे स्वाहा ॥ ६ ॥

अथ सातवीं ज्ञानपद-पूजा ॥

॥ दोहा ॥

सप्तम पद श्रीज्ञाननो, सिद्धचक्र तपमाह ।
आराधिजे शुभमने, दिन दिन अधिक उच्छाह ॥

॥ काव्य ॥

अन्नाण सम्मोहतमो हरस्स, नमो नमो नाण दिवायरस्स ॥ पंचप्पयारस्सु वगारगस्स, सत्ताणसव्वत्थपयासगस्स । होय जेह थी ज्ञान-शुद्धप्रबोधे, यथावर्णनासे विचित्रावबोधे ॥ तिणे-जाणीये वस्तुषट्द्रव्यभावा, न होवेवितत्था निजे-च्छास्वभावा ॥ ५६ ॥ होई पंचमत्यादि सुज्ञा-नभेदे, गुरुपासथी योग्यता तेहवेदे । वली ज्ञेय हेया उपादेयरूपे, लहेचित्तमां जेम ध्याने प्रदीपे ॥ ६० ॥

॥ ढाल ॥

भव्य नमो गुण ज्ञानने, स्वपरप्रकाशक

भावे जी। पर्याय धरम अनंतता, भेदा भेद स्वभावे जी ॥

॥ चाल ॥

जे मोक्ष परणति सकल ज्ञायक बोधवास विलासता, मति आदि पंच प्रकार निरमल सिद्धसाधन लंछना। स्याव्दादसंगी तत्वरंगी प्रथम भेद अभेदता, सवि कल्पने अविकल्प वस्तु सकल संशय छेदता ॥ ६१ ॥

॥ ढाल ॥

भक्ष अभक्ष न जे विण लहिये, पेय अपेय विचार। कृत्य अकृत्य न जे विन लहिये, ज्ञानते सकल आधार रे ॥ भ० ॥ ६२ सि० ॥ प्रथम ज्ञान ने पीछे अहिंसा, श्रीसिद्धान्ते भाख्युं ज्ञानने वंदो ज्ञान स निंदो, ज्ञानीये शिवसुख चाख्युं रे ॥भ० ६३॥ सि० ॥ सकल क्रियानुं मूल ते श्रद्धा, तेहनुं मूल-जे कहिये। तेह ज्ञान

नित नित वंदीजे, ते विन कहो किम रहिये रे ॥ भ० ॥ ६४ सि० ॥ पंच ज्ञानमांहे जेह सदागम, स्वपरप्रकाशक तेह । दीपकपर त्रिभुवन उपगारी, वलि जिम रवि शशि मेह रे ॥ भ०॥६५सि०॥ लोक ऊरध अधतिर्यग्ज्योतिष, वेमानिकने सिद्ध । लोक अलोक प्रगट सब जेहथी, ते ज्ञाने मुझ शुद्धी रे ॥भ०॥६६॥सि०॥

॥ ढाल ॥

ज्ञानावरणी जे कर्म छे, क्षय उपशम तसु थाये रे । तो होइ एहिज आतमा, ज्ञान अबोधता जाये रे ॥ वी० ॥ ६७ ॥ ॐ ह्रीं प० ज्ञानपदे अष्ट द्रव्यं यजामहे स्वाहा ॥ इति ॥

अथ आठवीं चारित्रपद–पूजा ॥

॥ दोहा ॥

अष्टम पद चारित्रनो, पूजो धरी ऊमेद ।
अनुभवरस मिले, पातिक होय उच्छेद ॥

॥ काव्य ॥

आराहिया खंडिअ सक्कियस्स, नमो नमो संजमवीरिअस्स। सब्भावणासंग विवट्टिअस्स, निव्वाणदाणाइ समुज्जयस्य ॥ वलि ज्ञानफलते धरिये सुरंगे, निरासंसता द्वार रोधे प्रसंगे ॥ भवांभोधि संतारणो यान तुल्यं, धरुं तेहचारित्र-अप्राप्तमूल्यं ॥६८॥ होइ जास महिमाथकी रंक-राजा, वलि द्वादशांगी भणी होय ताजा। वलिपापरूपोपि निप्पाप थाये, थई सिद्ध ते कर्मने पारजाये ॥ ६९ ॥

॥ चाल ॥

चारित्रगुण वलि वलि नमो, तत्वरमण-जसु मूलो जी। पर रमणीयपणो टले, सकल सिद्धि अनुकूलो जी ॥

॥ उल्लालो ॥

प्रतिकूल आश्रव त्याग संजम तत्व थिरता

दमसयी, शुचिपरम खंति मुनींद संपद पंच संवर उदचयी ॥ सामायिकादिक भेद धरमें यथाख्याते पूर्णता, अकषाय अकुलस अमल उज्वल काम कस्मल चूर्णता ॥ ७० ॥

॥ ढाल ॥

देशविरत ने सर्वविरत जे, ग्रही यतिने अभिराम । ते चारित्र जगत जयवंते कीजै तास प्रणाम रे ॥ भ० ॥ ७१ ॥ सि० ॥ तृण परे जे षट्खंड सुख छंडी, चक्रवर्त पिण वरियो, ते चारित्र अखय सुखकारण, ते में मन-मांहि धरिओ रे ॥ भ० ॥७२॥सि०॥ हुवा रंक पणे जे आदर, पूजत इंद-नरिंद ॥ अशरण श-रण चरण ते वारू, वरिओ ज्ञान आनन्द रे ॥भ०॥ ७३ ॥ सि० ॥ बार मास पर्याये तेहने, अनुत्तर सुख अतिक्रमिये । शुक्ल शुक्ल अभि-जात्य तें ऊपर, ते चारित्रने नमिये रे ॥ भ० ॥

७४ सि० ॥ चयते आठ करमनो संचय, रिक्त करे जे तेह ॥ चारित्र नाम निरुक्ते भाख्युं, ते वंदू गुणगेह रे ॥ भ० ॥७५ सि०॥

॥ ढाल ॥

जाणि चारित्र ते आतमा, निजस्वभावमांहि रमतो रे। लेस्या शुद्ध अलंकर्यो. मोहवने नवि भमतो रे ॥ वी० ७६ ॥ ॐ ह्रीं प० चारित्रपदे अष्ट द्रव्यं यजामहे स्वाहाः ॥

अथ नवमी तपपद-पूजा ॥

॥ दोहा ॥

करमकाष्ट प्रति जालवा, परलिग्य अगनि समान ।
ते तपपद पूजो सदा, निर्मल धरिये ध्यान ॥

॥ काव्य ॥

कर्म्मद्रुमोन्मूलन कुंजरस्स, नमो नमो तिव्वतवोभरस्स। अणेगलद्धीण निबंधणस्स, दुस्सज्झअत्थाणय साहणस्स ॥ ७७ ॥ इय नमपय-

सीद्धीं लद्धि, वीजासमीद्धं पयमीय सरवग्गं ह्रीं-
तिरेहसमग्गं । दिसिवइ सुरसारं खोणिपीढाव-
यारं, तिजय विजयचक्कं सिद्धचक्कं नमामि ॥७८॥
त्रिकालिकपणे कर्मकषाय टाले, निकाचितपणे
वाधिया तेह बाले । कह्यो तेह तप बाह्य अभ्यं-
तर दुभेदे, क्षमायुक्ति निर्हेत दुर्ध्यान छेदे
॥७९॥ होइ जास महिमा थकी लब्धि सिद्धि,
अवांछपणे कर्म आवर्ण शुद्धि । तपो तेह तप
जे महानंद हेते, होई सिद्ध सीमंतनी जिम
संकेते ॥८०॥ इम नव पद ध्यावे परम आनंद
पावे, नव भव शिव जावे देव नर भवज
पावे । ज्ञानविमल गुण गावे सिद्धचक्र
प्रभावे, सवि दुरित समावे विश्व जयकार
पावे ॥ ८१ ॥

॥ ढाल ॥

इच्छारोधन तप नमो, बाह्य अभ्यन्तर भेदे

जी । आतम सत्ता एकत्वता, पर परणति उछेदे जी ॥ १ ॥

॥ उल्लालो ॥

उछेद कर्म अनादि संतति जेह सिद्धपणो वरे, शुभ योग संग आहार टाली भाव अक्रियता करे । अंतरमुहूरत तत्व साधे सर्व संवरता करी, निज आत्मसत्ता प्रगट भावे करो तपगुण आदरी ॥ ८२ ॥

॥ ढाल ॥

इम नवपद गुणमंडलं, चउ निक्षेप प्रमाणे जी ॥ सात नये जे आदरे, सम्यग्ज्ञाने जाणे जी ॥

॥ उल्लालो ॥

निरधारसेती गुणे गुणनो करइ जे वहुमान ए, जसु करण ईहा तत्व रमणे थाये निरमल ध्यान ए ॥ इम शुद्धत्ता भलो चेतन सकल

सीद्धीं लद्धि, वीज्जासमीद्धं पयमीय सरवग्गं ह्रीं-तिरेहसमग्गं। दिसिवइ सुरसारं खोणिपीढाव-यारं, तिजय विजयच्चक्कं सिद्धचक्कं नमामि ॥७८॥

त्रिकालिकपणे कर्मकषाय टाले, निकाचितपणे बांधिया तेह बाले। कह्यो तेह तप बाह्य अभ्यं-तर दुभेदे, क्षमायुक्ति निर्हेत दुर्ध्यान छेदे ॥७६॥ होइ जास महिमा थकी लब्धि सिद्धि, अवांछकपणे कर्म आवर्ण शुद्धि। तपो तेह तप जे महानंद हेते, होई सिद्ध सीमंतनी जिम संकेते ॥८०॥ इम नव पद ध्यावे परम आनंद पावे, नव भव शिव जावे देव नर भवज पावे। ज्ञानविमल गुण गावे सिद्धचक्र प्रभावे, सवि दुरित समावे विश्व जयकार पावे ॥ ८१ ॥

॥ ढाल ॥

इच्छारोधन तप नमो, बाह्य अभ्यन्तर भेदे

जी । आतम सत्ता एकत्वता, पर परणति उछेदे जी ॥ १ ॥

॥ उल्लालो ॥

उछेद कर्म अनादि संतति जेह सिद्धपणो वरे, शुभ योग संग आहार टाली भाव अकियता करे । अंतरमुहूरत तत्व साधे सर्व संवरता करी, निज आत्मसत्ता प्रगट भावे करो तपगुण आदरी ॥ ८२ ॥

॥ ढाल ॥

इम नवपद गुणमंडलं, चउ निक्षेप प्रमाणे जी ॥ सात नये जे आदरे, सम्यगज्ञाने जाणे जी ॥

॥ उल्लालो ॥

निरधारसेती गुणे गुणनो करइ जे वहुमान ए, जसु करण ईहा तत्व रमणे थाये निरमल ध्यान ए ॥ इम शुद्धसत्ता भलो चेतन सकल

सिद्धि अनुसरे, अक्षय अनंत महंत चिदघन परम आनंदता वरे ॥८३॥

॥ कलश ॥

इम सयल सुखकर गुणपुरंदर सिद्धचक्र-पदावली, सविलद्धिविज्जा सिद्धि मंदिर भविक पूजो मन रली। उवझाय वर श्रीराजसागर ज्ञानधर्मसु राजता, गुरु दीपचंद सुचरण सेवक देवचन्द्र सुशोभता ॥ ८४ ॥

॥ ढाल ॥

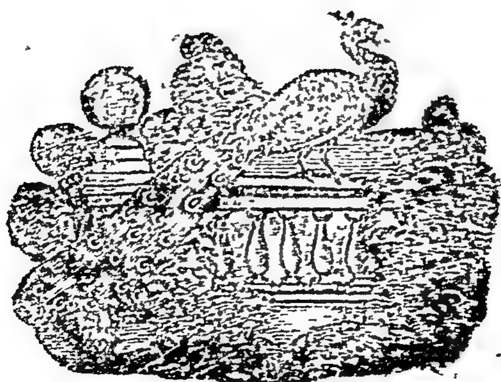
जाणंता त्रिहुं ज्ञाने संयुत, ते भवसुगति जिनंद ।जेह आदरे कर्मखपेवा, ते तपसुरतरु कंद रे ॥ भ० ॥ ८५ ॥ सि० ॥ करम निकाचित पिण क्षय जाये, क्षमासहित जे करतां, ते तप नमीये तेह दीपावे, जिनशासन उजमंता रे ॥ भ० ॥ ८६ ॥ सि० ॥ आमोसही पमुहा बहु लब्धि, होवे जास प्रभावे। अष्ट महासिद्ध

नवनिध प्रगटे, नमीये ते तप भावे रे ॥ भ० ॥ सि० ॥ ८७ ॥ फल शिव सुख मोटुं सुरनरवर संपति जेहनूं फूल। ते तप सुर तरु सरिखो वंदू, शम मकरंद अमूल रे ॥ भ० ॥८८॥ सि०॥ सर्व्व मंगलमाहि पहलो मंगल, वर्णवियो जे ग्रंथे। ते तप पद त्रिकरणों नमिये, वरसहाय शिवपंथे रे ॥ भ० ॥ ८९ ॥ सि० ॥ इम नवपद थुणतो तिहां लीनो, हुओ तनमय श्रीपाल। सुजस विलासे चौथेखंडे, एह इग्यारमी ढाल रे ॥ भ० ॥ ९० ॥ सि० ॥

॥ ढाल ॥

इच्छारोधन संवरी, परणित समता योगे र। तप ते एहिज आतमा, वरते निजगुण भोगे रे ॥ वी० ॥ ९१ ॥ आगमनो आगमतणो, भाव ते जाणो साचो रे ॥ आतमभावे थिर हुओ, परभावे मतराचो रे ॥ वी० ॥ ९२ ॥ अष्ट

सकल समृद्धिने, घटमांहे ऋद्धि दाखी रे। तिम नवपद ऋद्धि जाणजो, आतमराम छे साखी रे ॥ वी० ९३ ॥ योग असंख्य छे जिन कह्या, नवपद मुख्य ते जाणो रे। एहतणो अविलंबिने आतम ध्यान प्रमाणो रे ॥ वी० ॥ ९४ ॥ ढाल बारमी एहवी, चौथे खंडे पूरी रे। वाणी वाचक जसतणी, कोइय न रही अधुरी रे ॥ वी० ९५ ॥ ॐ ह्रीं प० तपपदे अष्ट द्रव्यं यजामहे। इति नवपद-पूजा समाप्त ॥



॥ अथ सुगुणचंद्रोपाध्याय कृत ॥

सिद्धाचलजीकी पूजा ।

—: तत्र :—

प्रथम ध्वज पूजा ।

॥ दोहा ॥

ऋषभादिक जिनवर नमी,
प्रणमी सदगुरु पाय ।
पुंडरीक गिरिरायनी,
पूजा करूं सुखदाय ॥ १ ॥
सजल सिखर गिरिवर सरस,
फरस्यां पाप पलाय ।
कनकाचल सहु शिरतिलो,
वंद्यां सहु दुख जाय ॥ २ ॥

नाम लिया सुख संपजे,
घर बैठा सुभ भाव ।
सफल जनम जात्रा करे,
भव जल तारन नाव ॥ ३ ॥
भव भव भमता मानवी,
पामे दुख्ख अनंत ।
पुंडरगिरि भेटे थके,
तुरत लहे भव अन्त ॥ ४ ॥
कलपवृक्ष चिंता मणी,
जन्त्र मन्त्र जग जोय ।
ए महिमा सहु कारमी,
गिरिवर सम नहिं कोय ॥ ५ ॥
प्रथम ध्वजा लेई करी,
चढो गिरिवर शृंग ।
विजय सदा जगमें हुवे,
दिन दिन अधिक सुरंग ॥ ६ ॥

॥ ढाल ॥

(चित्त हरख धरी, अनुभव रंगे, वीस परम पद सेविये, ए चाल) गिरिराज जयो, श्रीसिद्धाचल तीरथ, रयणे पूजीये। माहाराज जयो, श्रीरिसहेसर, भविजन भावे पूजीये ॥ वर मोहन ध्वज पूजा करीये; चित्त चोखे जगमें जस चरिये, जिनराज सरण भवि अनुसरिये ॥ गि० ॥ १ ॥ इहां पुंडरिक गणधर आया छै, तिण पुंडरिक नाम कहाया छै, सिद्धक्षेत्र नमी सुख पाया छै ॥ गि० ॥ २ ॥ विमलाचल गुण मणि दरियो छै, सुरगिरि महागिरि गुण भरियो छै, वलि पुन्यरास मन धरियो छै ॥ गि० ॥३॥ वलि श्रीपत परवत सुखकारी, वलि इंद्रप्रकास ते चित्त धारी, सास्वत ए गिरिवर वलिहारी ॥ गि० ॥४॥ दृढ़सक्ति मुक्तिनिलो कहिये, अरु पुष्फदंत मन

सरदेहिये, महापद्म सुठाम सदा कहीये ॥गि० ॥५॥ वलि पृथ्वीपीठ सुभद्र वारु, कैलासगिरि कहिये सुखकारु, पातालमूल भवि हे तारु॥गि० ॥६॥ वलि अकरम नामे एह जाणो, सर्व कामद वलि मनमें आणो, गिरि गुण गातां मन हुल-सागो ॥ गि० ॥७॥ ए इकवीस गिरंद नामा, ध्यावो भविजन तुमे सुख कामा, कहे सुमति सदाए अभिरामा ॥ गि० ॥ ८ ॥ इति ॥

॥ काव्य ॥

देवासुरेन्द्र नरनागरसर्चितेभ्यः, पापः प्रणा-सकरभव्यमनोहरेभ्यः । घंटाध्वजादि परिवा-रविभूषितेभ्यः, नित्यं नमो सिद्धगिरीन्द्रजि-नालयेभ्यः ॥१॥ ॐ ह्रीं श्रीपरमात्मने अनन्ता-नन्तज्ञानशक्तये जन्मजरा मृत्युनिवारणाय श्रीविमलाचल तीर्थस्थित जिनेन्द्राय ध्वजा यजामहे स्वाहा ॥ इति ध्वज पूजा ॥ १ ॥

अथ बीजी जल पूजा॥

॥ दोहा ॥

निर्मल जल कलसा भरी, पूजो श्रीजिनराय।
पूजत अनुभव गुण लहे, पाप पंक मल जाय॥

॥ ढाल ॥

(आज आयोरे उछाह, जीवडा नाच जिणंद आगे ए चाल) आज हरख धरी, गिरिवर पूजन करिये रे, आ०॥ कलस अठोतर सो मनरंग, निरमल जल भरिये अति चंग। आ० गंगादिक तीरथना जाण, अवर सुजल पूजो जगभाण॥ आ०॥ १ इण पर न्हवण करो जिनराज, भवियण सारो वंछितकाज॥ आ०॥ इण गिरि ऊपर ऋषभ जिणंद, समवसरया भवियण सुख-कंद॥ आ०॥ २॥ महियल मोटो ए गिरि जाण, भवियण भेटो सुखनी खाण॥ आ०॥

उपगारा । मैं वारीजाउं तु० ॥ बावनचंदन केसर घोली, कस्तुरी घनसारा ॥ मैं० ॥ भाव भगतसुं प्रभु गुण गावो, पूजो जग भरतारा ॥ मैं० अ०॥ १ ॥ मिथ्या तम सब दूर निवारी, सेवो प्रभु अवि कारा ॥ मैं० ॥ राज राजेसर जगपति जिनवर, चक्री अजित उदारा ॥ मैं० अ० ॥ २ ॥ पर उपगारी तू परमेसर, भेट्या जय जयकारा ॥ मैं० ॥ जिम जिम परिमल पसरे तेहथी, सोभा अधिक उदारा ॥ मैं० अ० ॥ ३ ॥ भूमंडल विचरंता प्रभुजी, बहु चेतन समझाया ॥ मैं० ॥ पुंडरीक पर अजित जिनेसर, चौमासे तिहां आया ॥ मैं० आ० ॥ ४ ॥ सिंहसेनादिक गणधर थापी, पंचाणू हितकारा ॥ मैं० ॥ एक लाख मुनि मुद्राधारी, भरीया गुण मणि धारा ॥ मैं० अ० ॥ ५ ॥ चौथा आराने मध्यज भागे, अजित हुवा अविकारा

॥ मैं० ॥ वोहत्तर लाख पूरवनो आउ, कीधा जग जयकारा ॥ मैं० अ० ॥ ६ ॥ सोलम जिन वर शांति जिनेसर, अचिरा नंद उदारा ॥ मैं०॥ विमल गिरंद पर कर चौमासो, करम कलंक निवारा ॥ मैं० अ० ॥ ७ ॥ विश्वसेन कुल भाण विराजे, जगजीवन हितकारा ॥ मैं० ॥ श्रीहथणापुर मंडण स्वामी, सुमति सदा दातारा ॥ मैं० अ० ॥ ८ ॥ इति ॥

॥ काव्यं ॥

देवासुरेंद्र नरनागर सर्चितेभ्य पापः प्रणासकर भव्यमनोहरेभ्यः । घंटाध्वजादि परिवार विभूषितेभ्यः, नित्यं नमो सिद्धगिरींद्रजिनालयेभ्यः ॥ १ ॥ ॐ ह्रीं श्रीपरमात्मने अनंतानंतज्ञान शक्तये जन्मजरामृत्युनिवारणाय श्रीविमलाचलतीर्थाय चन्दनं यजामहे स्वाहा ॥ इति चंदन पूजा ॥ ३ ॥

अथ चौथी पुष्प पूजा ।

॥ दोहा ॥

पूजा चतुर्थी इण परे, कुसुम सुगंधसु जोय ।
भव्य मनोरथ पूरवे, घर घर मंगल होय ॥

॥ ढाल ॥

(जिनराज नाम तेरा । हो महाराज नाम तेरा हो रा० ए चाल) विमल गिरि नाम तेरा, हो कनक गिरिनाम तेरा हो सेवो रे, उजल गिरि रसमें ॥ हो० उ० ॥ मचकुन्द कुन्द जाणो, चंपो गुलाब आणो, पूजो जिनन्द भाणो ॥ हो० उ० ॥१॥ विमला वसीजु राजे, जिनबिंब वहोत छाजे, जोतां मिथ्यात भाजे ॥ हो० उ० ॥२॥ मोती वसीजुहारो, मन कामना जुसारो, दिलमा हे एहि धारो ॥ हो० उ० ॥ ३ ॥ बाला वसी जिणंदा, निरख्याहि सुखकंदा, अढार चैत्य

सोहंदा ॥ हो० उ० ॥४॥ पेमा वसीजु प्यारा, भेटा जिनंद सारा, वंद्याथी सुखकारा ॥ हो० उ० ॥५॥ हेमावसीजु वंदो, अजितादि सुख-कंदो, सेवो जिनंद चन्दो ॥ ६ ॥ उजु वसीजु राजे, नंदीश्वर भाव छाजे, सेवो थे सुख काजे ॥ हो० उ० ॥७॥ साकर वसीजु भावे, भेख्यासु पाप जावे, देख्यासु सुख थावे ॥हो० उ० ॥८॥ छींपा वसीजु ध्यावो, वंछित सुख पावो, मनमाहि भाव लावो ॥ हो० उ० ॥६॥ खरतर वसीजु सोहे, जिनराज मन्न मोहे, नि-रख्यासुं सुख होवे ॥ हो० उ० ॥१०॥ इत्यादि भाव जाणो, गुरु ज्ञान मन्न आणो, संकादि चित्त नाणो ॥हो० उ०॥११॥ सुमतादि ध्यान ध्यावो, गुण नाथनाजु गावो, मन भाव एहि भावो ॥ हो० उ० ॥१२॥ इति ॥

॥ काव्य ॥

देवासुरेन्द्र नरनागरसमर्चितेभ्यः, पापः प्रणासकर भव्य मनोहरेभ्यः । घंटाध्वजादिपरिवार विभूषितेभ्यः, नित्यं नमो सिद्धगिरीन्द्र जिनालयेभ्यः ॥१॥ ॐ ह्रीं श्री परमात्मने अनंतानंत ज्ञानशक्तये जन्मजरा मृत्यु निवारणाय श्रीविमलाचल तीर्थाय पुष्पं यजामहे स्वाहा ॥ इति पुष्प पूजा ॥४॥

अथ पांचमी धूप पूजा ।

॥ दोहा ॥

धूप पूज ए पंचमी, करता भवि सुखदाय ।
धूप घटी जिम महमहे, तिम तिम पातिक जाय ॥

॥ ढाल ॥

(जात्रा निनाणु करिये विमलगिरि, जात्रा० ए चाल) इण विध पूजन करिये, विमलगिरि ॥ इ० ॥ कृष्णागरने मृगमद अंबर, गंध

वटो अनुसरिये ॥ वि० इ० ॥१॥ चीड सेल्हा रस तुरक भलेरो, इण विण धूपज करिये ॥ वि० इ० ॥ केसर चन्दन मृगमद कुंकम, भाव भले अनुसरिये ॥ वि० इ० ॥२॥ उज्जल असल अखंडित तंदुल, दीप अखंड ज धरिये ॥ वि० इ० ॥ पुष्प सुगंध गुलावना लेइ, पुजो इण गिरिवरिये ॥ वि० इ० ॥३॥ साधु साहमी भगत करीने, आतम निरमल करिये ॥ वि० इ० ॥ पांचे पांडव इण गिरिपूजो, नवनारद मुनिवरिये ॥ वि० इ० ॥ ४ ॥ गिरिवर ऊपर पांचे ठामे, पूजा करी अघ हरिये ॥ वि० इ० ॥ कलस अठोतरसो लेइ ने, न्हवण भली विध करिये ॥ वि० इ० ॥ ५ ॥ मूलनायक श्री आदि जिनेसर, इन गिरिपर समोसरिये ॥ वि०इ० ॥ भाव भगत सुं जिननी पूजा, करता सहु सुख वरिये ॥ वि० इ० ॥ ६ ॥ लहि अवतार ए

गिरिनहि फरसे, तो किम भवजल तरिये ॥ वि० इ० ॥ पुंडर गिरिनो ध्यान धरीने, पुन्य खजानो भरिये ॥ वि० इ० ॥ ७ ॥ ए गिरिनो आसातना टाली, जात्रा करी निसतरिये ॥ वि० इ० ॥ सगत छता जो संघ लेइने, आवे इण गिरिवरिये ॥ वि० इ० ॥ ८ ॥ द्रव्य भावसुं पूजन करिने, पाप पंक अपहरिये ॥ वि० इ० ॥ सुमति कहे धन धन ए गिरिवर, पूजो भवि सुख करिये ॥ वि० इ० ॥ ६ ॥ इति ॥

॥ काव्य ॥

देवासुरेंद्र नरनागरमर्चितेभ्यः, पापः प्रणासकर भव्यमनोहरेभ्यः । घंटाध्वजादि परिवार विभूषितेभ्यः, नित्यंनमो सिद्ध गिरीद्र जिनालयेभ्यः ॥१॥ ॐ ह्रीं परमात्मने अनंतानंत ज्ञानशक्तये जन्मजरामृत्युनिवारणाय श्रीविमलाचलतीर्थाय धूपं यजा महे स्वाहा ॥ इति धूप पूजा ॥५॥

अथ छट्ठी दीप पूजा ॥

॥ दोहा ॥

छट्ठी पूजा दीपनी, करो भविक सुखकार ।
विमल बोध पावो तुमें, ज्ञान दीप सुविचार ॥१॥

॥ ढाल ॥

(पास जिनंदा प्रभु मेरे मन वसिया ॥ पा० ए चाल) आदि जिनंदा प्रभु सेवो सुखकारी ॥ आ० ॥ निरमल बोध विकासक दीपक, दिन दिन जोत अधिक सुखकारी ॥ आ० ॥१॥ अनुभव दीपक प्रगट भयो है, सकल चराचर भाव विचारी ॥ आ० ॥ केवल ज्ञानी प्रथम तीर्थंकर, समोवसर्या भवियण हितकारी ॥ आ० ॥ २ ॥ फागण सुदि आठमने दिवसे, ऋषभदेव आया सुविचारी ॥ आ० ॥ भरतपुत्र चैत्री पुनम दिन, इण गिरि आया भवि मनधारी ॥ आ० ॥ ३ ॥ नमि विनमी राजा विद्या-

धर, पुंडरगिरि सेवे इकतारी ॥ आ० ॥ पोतरा प्रथम तीर्थंकर केरा, द्रावडने वारखील्ल विचारी ॥ आ० ॥ ४ ॥ काती सुद पूनम दिन सीधा, दस कोडी मुनि साथ उदारी ॥ आ० ॥ पांचे पांडव इण गिरि सीधा, नव नारद निज काज सुधारी ॥ आ० ॥ ५ ॥ सांब प्रद्युम्न गया इहां मुगते, आठ करम दल दूर निवारी ॥ आ० ॥ नेम विना तेवीस तीर्थंकर, समवसर्या भवियण उपगारी ॥ आ० ॥ ६ ॥ ए गिरिराजना गुण गण गाता, सफल हुवे आतम सुविचारी ॥ आ० ॥ ए गिरिराजनी पूजा जगमें, भव जल पार उतारण हारी ॥ आ० ॥ ७ ॥ द्रव्य भावसुं पूजन करिये, कुमति कुटलता दूर निवारी ॥ आ० ॥ कहे सुमति सेवो इकतारी, इण तीरथनी जाऊं बलिहारी ॥ आ० ॥ ८ ॥ इति ॥

॥ काव्य ॥

देवासुरेंद्र नरनागरमर्चितेभ्यः, पापः प्रणासकर भव्यमनोहरेभ्यः । घंटाध्वजादि परिवार विभूपितेभ्यः, नित्यंनमो सिद्ध गिरींद्र जिनालयेभ्यः ॥१॥ ॐ ह्रीं परमात्मने अनंतानंत ज्ञानशक्तये जन्मजरामृत्यु निवारणाय श्रीविमलाचलतीर्थाय दीपं यजामहे स्वाहा ॥ इति दीप पूजा ॥ ६ ॥

अथ सातमी अक्षत पूजा ॥

॥ दोहा ॥

उज्वल तंदुल लेइने, पूजो दीन दयाल ।
स्वस्तिककरता विस्तरे, घरघर मंगल माल॥१॥

॥ ढाल ॥

(तुम विन दीनानाथदयानिधि कौन खवर ले मेरी रे ए चाल) गिरिवर भेटण भविजन आवे, मन वंछित फल पावे रे । उज्वल

तंदुल थाल भरीने, वधावो गिरिराया रे ॥ अष्टमंगल प्रभु आगल धरिये, निरमल सुद्ध सुहागा रे ॥ गि० ॥ २ ॥ ए गिरि महिमा जिन मुख सुणाके, चक्री मन हुलसावे रे । भरथराय षट्खंडको नायक, संघ लेइ इहां आवे रे ॥ गि० ॥ २ ॥ सोनानो प्रासाद करावे, रयणानी मूरत ठावे रे ॥ भाव भगतसु पूजा रचावे, प्रभु चरणो चित्त लावे रे ॥ गि० ॥ ३ ॥ भरत तणो अष्टम पट सोहे, दंड विरज महाराजा रे । संघ लेई उद्धार करावे, संचे सुभ फल ताजा रे ॥ गि० ॥ ४ ॥ इसानेंद्र करायो तीजो, चोथो माहेंद्र करावे रे ॥ पांचमो उद्धार ब्रह्मइंद्रनो सुरनर मिल जस गावे रे ॥ गि० ॥ ५ ॥ छठो उद्धार भवन पतीनो, सातमो सगरनो जाणो रे । आठमो व्यंतर इंद्र करावे, भविजन मनमें आणो रे ॥ गि० ॥ ६ ॥ चंद्र-

जस राय उद्धार करावे, नवमो भवि सुखकंदा रे। संतनाथ सुत दसमो भावे, उद्धार रचे आनंदा रे ॥गि०॥७॥ दसरथ राय सुतन गुण आगर, रामचंद्र भल भावे रे। उद्धार इग्यारमो एह करायो, बारमो पांडु करावे रे॥ गि० ॥८॥ तेरमो उद्धार जावडसाहनो, चौदमो बाहड देहनो रे। समरेसाह करायो भावे, पंदरमो सुख दीनो रे ॥ गि० ॥ ६ ॥ संवत सतरेसे सित्यासे, वैशाख वदि शुभ वारो रे। करमे डोसी करायो भावे, ए सोलम उद्धारो रे॥गि० ॥ १० ॥ तिण कारण ए तीरथ मोटो, सहु तीरथ सिर राजा रे। कहे सुमति पूजो भल भावे, पावो ज्युं सुख ताजा रे ॥११॥ इति ॥

॥ काव्य ॥

देवासुरेन्द्र नरनागरमर्चितेभ्यः, पापः प्रणासकर भव्यमनोहरेभ्यः। घंटाध्वजादिपरि-

वार विभूषितेभ्यः, नित्यं नमो सिद्धगिरीन्द्र जिनालयेभ्यः ॥१॥ ॐ ह्रीं श्री परमात्मने अनंतानंत ज्ञानशक्तये जन्मजरा मृत्यु निवारणाय श्रीविमलाचल तीर्थाय अक्षतं यजामहे स्वाहा॥ इति अक्षत पूजा ॥७॥

अथ आठमी नैवेद्य पूजा ॥

॥ दोहा ॥

मोदक मोती चूरना, सिंहकेसरीया सार ।
इत्यादिक नैवेद्य ले, पूज करो सुखकार ॥

॥ चाल ॥

(सिद्धचक्र पद वंदो रे भविका ए चाल)

श्रीसिद्धाचल पूजो रे, भविका । इण सम गिरि नहीं दूजो रे, भविका रे ॥ श्री० ॥ मोदक मोती चूरना लेइ, नैवेद्य पूजा करिये रे ॥भ०॥ सिंहकेसरिया दालीया केइ, मोदक इण विध धरिये रे ॥ जा० ॥ श्री० ॥ ललित सरोवर

पेखो भावे, वलि सत्तानी वाव रे ॥भ०॥ तिहां विसरामो भविजन लेवे, वडने चोतरे आव रे ॥ भ० श्री० ॥२॥ सेत्रुंजानी पाजै चढ़तां, आनंद अंग न मावे रे। भ० दूर थकी सेत्रुंजो दीसे, सूंदर रूप सुहावे रे ॥भ० श्री० ॥ ३ ॥ हिंगलाजहडे चढ़के पूजो, कलिकुंड पास कुमार रे। भ० वारी मांहे पेसी भविजन, भेटो आदि दीदार रे ॥भ० श्री० ॥ ४ ॥ मरुदेवी टूंक मनोहर दीसे, गजपर बैठा सोहे रे ॥भ०॥ संतनाथ सोलम उपगारी, भविजनना मन मोहे रे ॥ भ० श्री० ॥ ५ ॥ वंस पुरवाडे जगत वदीतो, सोमजी साह मल्हार रे ॥ भ० ॥ रूपजी साह करायो वावे, चोमुख मूल उद्धार रे ॥ भ० श्री० ॥६॥ नेमनाथ चवरी देखीने, देखो धरम दुवार रे ॥ भ० ॥ आदीसरना चरण पखाली, पूजो विविध प्रकार रे ॥ भ० श्री०

॥७॥ भमतीं माहे बिंब विराजे, कहतां नावे पार रे ॥ भ० ॥ पुंडरीक गणधर गुरु पूजो, शांति नाथ सुखकार रे ॥ भ० श्री० ॥ ८ ॥ चेलण तलाइ सिद्धसिलाने, सिघवड जूनो कहिये रे ॥ भ० ॥ पुंडर गिरिनी भमती साहे, एह सहू सरदहिये रे ॥ भ० श्री० ॥९॥ उलका झोलने भाडव डुंगर, भेट्यां सहु सुख लहिये रे ॥ भ० श्री० ॥ १० ॥ घर बैठा जो भाव करीने, मन सुध भावना भावे रे ॥ भ० सुमति कहे ते धन धन कहिये, जात्रानो फल पावे रे ॥ भ० श्री० ॥११॥ इति ॥

॥ काव्य ॥

देवासुरेन्द्र नरनागरसर्चितेभ्यः, पापः प्रणासकर भव्यमनोहरेभ्यः । घंटाध्वजादि परिवारविभूषितेभ्यः, नित्यं नमो सिद्धगिरींद्र जिनालयेभ्य ॥ १ ॥ ॐ ह्रीं श्रीपरमात्मने अनंतानंत-

ज्ञानशक्तये जन्मजरामृत्यु निवारणाय श्री-विमलाचलतीर्थाय नैवेद्य यजामहे स्वाहां॥ इति नवेद्य पूजा ॥ ८ ॥

अथ नवमी फल पूजा ॥

॥ दोहा ॥

निर्मल फल पूजा करो, उत्तम फल सुख काज।
भविजन पूजो भावसुं, सरे लहु सुभ काज ॥

॥ ढाल ॥

(रामत रमवा मैं गइ थी, मोरी सहीयर कै० ए चाल) आदिसर पूजा करो, एतो सिद्धगिरीनो रायो हे माय। सद गुरुने परसाद थी, एतो दरसण देवनो पायो हे माय ॥ आ० ॥१॥ आंबा दाडिम लेइने, एतो फल पूजा इम कीजे हे माय ॥ श्रीफल पुंगी फल भला, एतो भेट करी फल लीजे हे माय ॥ आ० ॥ २ ॥

न दूजो रे, भविका ॥ श्री० ॥ सुरभि गंधोदक लेई भावे, छिडको जिनवर अंग रे ॥ भ० ॥ कुसुमे वासित उत्तम जलनी, वृष्टि करो मन-रंग रे ॥ भ० श्री० ॥ १ ॥ आदीसरना चरण पखालो, पूजो उठ परभात रे ॥ भ० ॥ गुणनो लख नवकार गुणी जे, दोय अट्ठम छठ सात रे ॥ भ० श्री ॥२॥ रथ जात्रा परदक्षणा दीजे, पूजा विविध प्रकार रे ॥ भ० ॥ धूप दीप फल नैवेद्य मूकी, नमीये नाम हजार रे ॥ भ० श्री० ॥ ३ ॥ आठ अधिक शत टूंक भलेरी, मोटी तिहां इकवीस रे ॥ भ० ॥ सेत्रुंजय गिरि टूंक ए पहेलुं, नाम नमो निसदीस रे ॥भ०॥ श्री० ॥ ४ ॥ सहस अधिक अठ मुनिवर साथे, बाहुबली शिव ठाम रे ॥ भ० ॥ तिण कारण ए गिरिवर कहिये, बीजो मरु देवी नाम रे ॥ भ० श्री० ॥५॥ पुंडरीक गिरि नाम ए चोथुं

पांच कोड मुनि सिद्ध रे॥ भ० ॥ पांचमी टुंक रेवत गिरि कहिये, तिण ए नाम प्रसिद्ध रे॥ भ० ॥ श्री० ॥६॥ विमलाचल सिद्धराज भगीरथ, प्रणमी जे सिद्ध क्षेत्र रे ॥ भ० ॥ छहरी पाली इण गिरि भेटो, करिये जनम पवित्र रे ॥भ० श्री०॥७॥ पूजा करी प्रभुना गुण गावो, साधो काम अनेक रे॥ भ ॥ पुंडरगिरिना गुण गण गातां, निरमल आत्मविवेक रे ॥ भ० श्री० ॥८॥ देवकी नन्दन पूजो भावे, थूलभद्र मुनिराय रे ॥ भ० ॥ सुमति मंडण जिनराज पसाये, दिन दिन आनन्द थाय रे ॥भ० श्री०॥ ९ ॥ इति ॥

॥ काव्य ॥

देवासुरेंद्र नरनागर मर्चिंतेभ्य पापः प्रणासकर भव्यमनोहरेभ्यः। घंटाध्वजादि परिवार विभूषितेभ्यः, नित्यं नमो सिद्धगिरींद्रजिनालये-

भ्यः ॥१॥ ॐ ह्रीं श्रीपरमात्मने अनंतानंतज्ञान शक्तये जन्मजरामृत्यु निवारणाय श्रीविमलाचलतीर्थाय सुगंधोदकं यजामहे स्वाहा ॥ इति गुलाब जल पूजा ॥ १० ॥

अथ इग्यारमी वस्त्रयुगल पूजा ।

॥ दोहा ॥

प्रभु पूजा इग्यारमी, क्षोम युगल लेई सार ।
निरमल गुण धारी करी, पूजो जग भरतार ॥

॥ ढाल ॥

(राग घाटो मेरो मन वस कर लीनो, जिनवर प्रभु पास, ए चाल) गिरिवर मंडण आद, मुझ मन थासु लागो ॥ मु० ॥ विमलाचल तीरथ राजे, तीन भुवन आल्हाद ॥ मु० १ ॥ सूरत मोहनी लागे, जागे प्रीत अनाद ॥ मु० ॥ सुरनर वंदन आवे, पावे प्रभु पर साद ॥ मु० ॥२॥ देस देसका जात्री आवे, पावे हरष अपार ॥

मु० ॥ मरु देवीनो नंदन वंदो, गावो गुण गण सार ॥ मु० ॥ ३ ॥ हेमनी चोरी कीनीं, ए आलोयण तास ॥ मु० ॥ चढ चैत्रि पूनम भावे, करे एक उपवास ॥ मु० ॥ ४ ॥ वस्त्रनी चोरी रे जेणे, किनी भोले भाव ॥ मु० ॥ वर सात आंवल करीये, भवियण सुभ मन भाव ॥ मु० ॥ ५ ॥ रतननी चोरी कीनी, ते जन सुध इम होय ॥ मु० ॥ गिरिपर तपस्या कोजे, आतम निरमल होय ॥ मु० ॥ ६ ॥ पितलादि चोरी कीनी, ते सुद्ध थाये केम ॥ मु० ॥ पुरमड्ढ सात जु करीये, धरीये मनमें प्रेम ॥ मु० ॥ ७ ॥ मोतीनी चोरी जु कीनी, आंवल कर भवि तीन ॥ मु० ॥ धानादि चोरी कीनी, देते वस्तु प्रवीण ॥ मु० ॥ ८ ॥ देवादिधन जो वंछे, ते सुध थाये एम ॥ मु० ॥ अधिक वित्त जो खरचे, मुनि पोषे वहु प्रेम ॥ मु० ॥ ६ ॥

चोपद चोरी कीनी, देते वस्तु दान ॥ मु० ॥ संधासु तपस्या कीजे, दीजे मुनि सनमान ॥ मु० ॥ १० ॥ पुस्तक पारका देखी, लिखे जो आपणो नाम ॥ मु० ॥ षट्मासी तपस्या कीजे, सामायक तिण ठाम ॥ मु० ॥ ११ ॥ कन्या परिव्राजका जाणो, सधव अधव गुरुनार ॥ मु० ॥ तिन संग व्रत जो भाजे, छ मासी तप सार ॥ मु० ॥ १२ ॥ गो स्त्री बालक ऋषिनी, आसातन जे कीन ॥ मु० ॥ वस्त्र पात्र मुनिने दीजे, भाव धरी लय लीन ॥ मु० ॥ १३ ॥ श्रीजिनपूजन कीजे, खोम जुगल अति चंग ॥ मु० ॥ इण विध पूज रचावो, सुमति कहे मनरंग ॥ मु० ॥ १४ ॥ इति ॥

॥ काव्य ॥

देवासुरेंद्र नरनागरमर्चितेभ्यः, पापः प्रणासकर भव्यमनोहरेभ्यः, धंटाध्वजादि परिवार

विभूषितेभ्यः नित्यं नमो सिद्ध गिरींद्रजिनाल-
येभ्यः ॥ १० ॥ ॐ ह्रीं परमात्मने अनंतानंत-
ज्ञानशक्तये जन्मजरामृत्यु निवारणाय श्री-
जिनेंद्रेभ्यः वस्त्रं यजामहे स्वाहा ॥ ११ ॥

॥अथ कलश॥

(राग धनाश्री)

(तेज तरण मुख राजे या चाल) प्रभुजी की पूजा रची सुख काजे, हां ओ सुख काजे । श्रीसिद्धाचल गिरिवर ऊपर, मंडप आदि विराजे, नाभ नृपति मरुदेविके नंदन, दरसण सुं दुख भाजे ॥ हां० प्र० ॥ १ ॥ बीकानेर नगर अति सुन्दर, मरुधर देस, विराजे, श्रीजिन सौभाग्य सूरि पटोधर, सकल गुणो करी गाजे ॥ हां०

प्र० ॥ २ ॥ श्रीजिनहंस सूरि खरतर पति, गुण गिरवा गुरु राजे । प्रीति सागर गणि सिष्य सुवाचक, अमृत धर्म सुछाजे ॥ हां० प्र० ॥ ३ ॥ तसु चरणांबुज सेवक अहनिस, धर्म विसाल विराजे ॥ हां प्र० ॥ ४ ॥ सुमति मंडण ए गिरिनी पूजा, रचीये संघ सुख काजे । कुशल निधान मुनि परखस्की, प्रेरणायासु समाजे ॥हां० प्र० ॥५॥ चूप धरी चोखे चित चाहे, लिखी सकल शुभ काजे । संम्वत सय उगणीस तीसमें पूज रची हित काजे ॥ हां० प्र० ॥ ६ ॥ जेठ सुदी तेरस रविवारे, सुणतां सहु दुख भाजे । भाव धरी गिरिना गुण गाया, दिन दिन अधिक दिवाजे ॥ हां० प्र० ॥७॥ इति श्री सिद्धगिरि पूजा संपूर्णम् ॥

अथ सुगणचन्द्रोपाध्याय कृत।

आबूजीकी पूजा।

—※.०:※—

प्रथम जल पूजा।

—*※※*—

॥ दोहा ॥

श्रीजिनवर आराधिये, धरिये हियडे ध्यान।
ऋषभ जिणंद दिणंद सम, दिन दिन चढते वान॥
आबू गिरिपूजन रचुं, महियल मोटो ठाम।
देस देसका संघवी, आवी करे प्रणाम॥ २॥
आबू अचलगढ़ दीपतो, महियल जाण सुनेर।
देलवाडो अति दीपतो, महिमा थइ चिहु फेर॥
विमलसाह मन्त्री थयो, मोटो पुन्य पसाय।
पातसाह बारे भणी, वस करिया सुख दाय॥

तिण ए तीरथ थापियो, आबू गिरि सिरदार ।
चैत्य कराया भावसुं, खर्चो द्रव्य अपार ॥
सुद्धोदक लेई करी, पूजो आदि जिणंद ।
स्नात्र करी जिनराजनी, पावो परमानन्द ॥

॥ ढाल ॥

(राग० इक सुन ले नाथ अरज मेरी इ० ए चाल) बलिहारी आबू गिरिवरकी ॥ ब० ॥ आबू गिरिपर अदभुत सोहे, मूरत आदि जिनेसरकी ॥ ब० ॥ आस पास बहु झाड़ी जंगी, मांहि गुफा जोगीसरकी ॥ ब० ॥ १ ॥ देस देसके जात्री आवें, पूजा रचे परमेसरकी ॥ब०॥ विमले मन्त्री वस कर लीनी, पातसाही बारे घरकी ॥ ब० ॥ २ ॥ तिण ए बिंब भराया भावे, महिमा आदि जिनेसरकी ॥ ब० ॥ आठ से बहुतर जिनवर छाजे, नदिया नीर सजल भूकी ॥ ब० ॥ ३ ॥ कोरणी खूब बणी अति

सुन्दर, दिल भर दरसण सुखकरको ॥ व० ॥ देरांणी जेठाणीरा आला, कोरणी करी हद वेसरकी ॥ व० ॥ ४ ॥ अंगी चंगो अजब वनी है, सोवन वरण रतनवरको ॥ व० ॥ सुमति कहे ए तीरथ उत्तम, इनकुं ओपम सुरगिरकी ॥ व० ॥ ५ ॥ ॐ ह्रीं श्री आबू गिरीन्द्राय श्रीयादीश्वराय तीर्थशिरोमणाय जलादि अष्टद्रव्यं यजामहे स्वाहा ॥ इति प्रथम जल पजा ॥१॥

अथ बीजी चंदन पूजा ।

॥ दोहा ॥

बावन चंदन चंदसे, पूजो श्री गिरिराज ।
पूजत अनुभव गुण लहे, तारण तरण जिहाज ॥
अचल गढे जिनराजनो, अति उतंग प्रासाद ।
देख भविक हरखित हुवे, पावे परम आल्हाद ॥

॥ ढाल ॥ राग सोरठ ॥

(कुंद किरण ससि उजलो रे देवा, ए चाल) आबू तीरथ पूजिये रे, वाल्हा ॥ तीरथ महिमा वंतो रे, आछो । जिनवर सहू भवि सेवियेरे, वा० ॥ आणी भाव अनंतो रे आछो ॥ आ० ॥ १ ॥ वस्तुपाल तेजपालजी रे, वा० लीनो लखमीनो लाहो रे, आछो । मुद्रा बहु खरची करी रे, वा० जस लीनो जगमाहे रे, आछो ॥ आ० ॥ २ ॥ कोरणी झीणी सुंदरु रे, वा० ॥ कीधी धर मन रंगे रे, आछो । सुर-गुरु पिण नहि कही सके रे, वा० ॥ महिमा अधिक सुरंगे रे, आछो ॥आ०॥३ ॥ बारे कोड ऊपर सही रे, वा० ॥ लागा तेपन लाखो रे, इतनो धन खरच्यो सही रे, वा० श्रीसंघ केरी साखो रे, आछो ॥आ०॥४॥ मूलनायक नेमी सरू रे, वा० ॥ ब्रह्मचारी सिरदारो रे, आछो । च्या-

रसे अडसठ सुंदरू रे, वा० ॥ जिनवर विंब उदारो रे आछो ॥ आ० ॥ ५ ॥ सुमति सदा इम वीनवे रे, वा० ॥ तीरथनी वलिहारी रे, आछो। मन वंछित सगला फले रे, वा० ॥ पूजत गिरि सिरदारी रे आछो ॥ आ० ॥ ६ ॥ ॐ ह्रीं आवू गिरीन्द्रा० श्रीआदि० तीर्थेशि० जलादि अष्ट द्रव्यं० ॥ इति चन्दन पूजा ॥२॥

अथ तीजो पुष्प पूजा।

॥ दोहा ॥

ब्रह्मचारी जोगीसरु, जगपति नेम जिणंद।
बावीसमा जिन पूजतां, नित प्रति होत आणंद॥१॥
चंपक केतकि केवडो, वउलसिरी मचकुंद।
मोगर मालती कुसमसे, पूजो भवि सुखकंद ॥२॥

॥ ढाल ॥

(सेत्रुंजानो वासी प्यारो लागे, म्हारा राजिंदा ए चाल) आवू तीरथ भेटो, मोरा

राजिंदा ॥ भे० आ० ॥ इण सम तीरथ और न कोई, मिथ्यातम सव मेटो ॥ मो० ॥ अमीझरो माहाराज कहावे, देख्यां अति सुख पावे ॥ मो० ॥ आ० ॥ १ ॥ मन सुद्ध जात्रा करो भवि प्राणी, सुर नर मुनि गुण गावे ॥ मो० सुंदर सूरत मूरत सोहे, देख्यां प्रीत लगावे ॥ मो० आ० ॥२॥ अवर अनेक जिन बिंब कहावे, दरस करत दुख जावे ॥ मो० ॥ ए गिरि सहु सिरदार कहावे, जोगीसर बहु ध्यावे ॥ मो० ॥ आ० ॥ ३ ॥ दूर थकी ए गिरिवर निरखी, मोतियन थाल भरावे ॥ मो० ॥ दानमान सनमान करीने, तीरथ महिमा गावे ॥ मो० आ० ॥ ४ ॥ विधसेती गिरिवर नित पूजे, लाभ अनंत उपावे ॥ मो० ॥ संघपति संघ लेके जावे धन धन तेह कहावे ॥ मो० आ० ॥ ५ ॥ पुष्प माल गुंथी भवि भावे, जिनवर पूज रचावे

॥ मो० ॥ सुमति कहे गिरिराजकुं ध्यावे, 'छित सफल लहावे ॥ मो० श्रा० ॥ ६ ॥ ॐ ह्रीं। श्रावुगिरींद्राय तीर्थंसीरो म० श्रीआदीश्व-राय पुष्पं यजामहे स्वाहा ॥इति पुष्प पूजा॥३॥

अथ चौथी धूप पूजा ॥

॥ दोहा ॥

धूप दशांग लेई करी, पूजो तीरथ राय।
सुरभि सुगंधी महमहे, इम भाखे जिनराय॥१॥
विमल श्रस्व वाहन धरी, सेव करे जिनराज।
श्रंबादेवी पूजतां, सफल करे सब काज ॥ २ ॥

॥ ढाल ॥

(मैं निरख्या गुरु महाराज, छतियां ह० ए चाल) दिलमें हरख धरी, भवि पूजो गिरिवर सार॥ दि० टेर॥ धूप दशांग लेई करी रे, पूजो जग भरतार। बोध बीज निरमल करो रे, सफल करो अवतार ॥ दि० भ० ॥ १ ॥

सुरनर सोहे, महिमा अधिक उदारी रे ॥ आ० ॥ ३ ॥ आसपास बहु झाडी सोहे, विच मंदिर मनुहारी रे । नाभिरायके नंदन कहिये, मरुदेवी मात मल्हारी रे ॥ आ० ४ ॥ जुगला धर्म निवारण स्वामी, त्रिभुवन जन हितकारी रे ॥ नगर अजोध्या आप विराजो, आदिनाथ उपगारी रे ॥ आ० ॥ ५ ॥ आदीसर अलवेसर कहिये, सबको तूं अवतारी रे ॥ सब जोगीसर तुमकुं ध्यावे, अदभुत कीरत थारी रे ॥ आ० ॥ ६ ॥ तुं भय भंजन तुंहि निरंजन, लोकालोक विहारी रे ॥ जोगीसर जिनराज जगत गुरु, नेमीसर ब्रह्मचारी रे ॥ आ० ॥ ७ ॥ तारण तरण दयानिधि स्वामी, सेवक जन साधारी रे ॥ सुमति कहे भवि निरमल भावे, सेवो प्रभु सुखकारी रे ॥ आ० ॥ ८ ॥ ॐ ह्रीं आबू गिरींद्राय तीर्थ शिरोमणाय श्रीआदीश्व-

राय दीपं यजामहे स्वाहा ॥ इति दीपक पूजा ॥ ५ ॥

अथ छट्ठी अक्षत पूजा ॥

॥ दोहा ॥

अक्षत पूजा साचवे, भविजन मंगल काज।
तीन पुंज प्रभु आगले, करो भविक सुख साज॥१॥
मंगल आठ करो सही, प्रभु आगे धर प्रेम।
अडसिध नवनिध संपजे, सुजस हुवे नित तेम॥२॥

॥ ढाल ॥

(तुम तो भले विराजो जी, सांवलिया माहाराज, ए चाल) सिखरपर भले विराजो जी, आवूके सिरदार, सिखर पर भले विराजो जी ॥ तु० ॥ नाभिरायके नंदन कहिये, तीन भवन विसरामी, केसर चंदन मृगमद घोली, पूजो अंतरजामी ॥ तु० ॥ १ ॥ विखम पहाडा विचमे राजे, साहिव तुं सिरनामी। आदीसर

जोगीसर पूजी, वंछित सगला पामी ॥ तु० ॥ २ ॥ द्रव्य भावसे पूजा रचावो, मनमें आणंद पावो । भर मुगताफल थाल वधावो, तीरथ महिमा गावो ॥ तु० ॥ ३ ॥ आबू गिरिको ध्यान धरावो, तपस्यासे फल पावो । घर सारु बलिदान दिरावो, संघ भगत करवावो ॥ तु० ॥ ४ ॥ अचलगढे जिन दरसण करवा, संघ सकल मिल आवे । आदीसर नेमीसर पूजी, मन वंछित सब पावे ॥ तु० ॥ ५ ॥ तीरथ महिमा भविजन करिये, दिलमें भावज धरिये । सुमति कहे तन मन कर उज्जल, पून्य खजानो भरिये ॥ तु० ॥ ६ ॥ ॐ ह्रीं आबूगिरींद्राय तीर्थ शिरोमणाय श्रीआदीश्वराय अक्षतं यजामहे स्वाहा ॥ इति अक्षत पूजा ॥ ६ ॥

अथ सातमो नैवेद्य पूजा ॥

॥ दोहा ॥

मोदक मोती चूरना, और सुगंध रसाल।
पूजो तीरथरायने, भाव करी गुण माल ॥ १॥
नैवेद्य पूजा सातमी, करो भविक धर प्रेम।
तीरथनी महिमा करा,गुण गाओ धर नेम ॥२॥

॥ ढाल ॥

(श्रीचंद्राप्रभु जिनवर साहिब, सुणिये अरज हमारी ॥ मैं वा० ॥ ए चाल) श्रीआदीसर जिनवर साहिब, तुम पर जाउं बलिहारा॥ मैं वारी जाउं तु० ॥ आबु गिरिपर आप विराजो, साहिब पर उपगारा ॥ मैं० श्री० ॥ १ ॥ तुंहि जिनेसर तुं परमेसर, अंतर प्राण आधारा ॥ मैं० ॥ जोगेसर तेरी लय जाणो, परमातम अविकारा ॥ मैं० श्री० ॥ २ ॥ मनमोहन तुं नाथ निरंजन, जग जीवन हितकारा

॥ मैं० ॥ सुरनर किन्नर सेव करत है, जय जय जग भरतारा ॥ मैं० श्री० ॥ ३ ॥ तेरी महिमा अधिक विराजे, सब जीवन सुखकारा ॥ मैं० ॥ अनंत ज्ञान दरसणको स्वामी, मन-मोहन सब प्यारा ॥ मैं० श्री० ॥ ४ ॥ लोक उचित व्यवहार प्रवर्त्यों, बोध बीज दातारा ॥ मैं० तुमकुं जो तन मनसे ध्यावे, पावे वंछित सारा ॥ मैं० श्री० ॥ ५ ॥ भविक लोकको तुम उपगारी, मिथ्यातम वन वारा ॥ मैं० सुमति कहे गिरि पूजा रचावो, ए गिरि सब सिरदारा ॥ मैं० श्री० ॥ ६ ॥ ॐ ह्रीं आबू गिरीन्द्राय तीर्थ शिरोमणाय श्रीआदीश्वराय नैवेद्यं यजामहे स्वाहा इति नैवेद्य पूजा ॥७॥

अथ आठमो ध्वजा, फल अष्टमङ्गल पूजा।

॥ दोहा ॥

प्रभु पूजा ए आठमी, मंगल आठ कराय।
पंच वरण ध्वज मोहनी, पूज करो सुखदाय ॥

आंवा दाडम आदिले, विविध भांत मनरंग ।
प्रभु आगल ढोवो सही, भाव धरी उछरंग ॥
सब सुन्दरी आवो सही, सज सोले सिणगार ।
रतन जडत कंचुक धरी, पेहरी नवसर हार ॥

॥ ढाल ॥

(पनरम पद गुण गाना हो ॥ भ० प० ए चाल) जिनगुण मंगल गाना हो भवि, ॥ जि० ॥ फल पूजा ए गिरिकी करके, जगमें सुजस वधाना हो ॥ भ० ॥ मंगल आठ रचो प्रभु आगल, चंदमुखी मन माना हो ॥ भ० जि० ॥ १ ॥ पंच वरणकी ध्वजवर कहिये, हित चितसे करवाना हो ॥ भ० ॥ सुन्दर नारी सब सिणगारी, प्रेम धरी सब आना हो ॥ भ० जि० ॥ २ ॥ कंचू कसिया हरख उलसिआ, आभूषण पहराना हो ॥ भ० ॥ रतन जडत सब सुन्दर चूडी, हाथे बहु सोभाना हो ॥ भ०

जि० ॥ ३ ॥ थेइ थेई तान करे प्रभु आगल, मधुर स्वरे गुण गाना हो ॥ भ० ॥ इंद्राणी मिल मंगल गावे, तिम तुमे भगत कराना हो ॥ भ० जि० ॥ ४ ॥ इत्यादिक गुण जिनके गावत, बोधि बीज उपजाना हो ॥ भ० ॥ सुमति कहे भवि पूजन करिये, मन वंछित फल दाना हो ॥ भ० जि० ॥ ५ ॥ ॐ ह्रीं आबू गिरीन्द्राय तीर्थ शिरोमणाय श्रीआदीश्वराय फलं ध्वज अष्ट मंगल यजामहे स्वाहा ॥ इति ध्वजा, फल अने अष्ट मंगल पूजा ॥८॥

अथ नवमी वस्त्रयुगल पूजा ।

॥ दोहा ॥

वस्त्रयुगल लेई करी, पूजो दीनदयाल ।
सुजस सुगंधी विसतरे, बोध बीज गुण माल ॥
रथयात्रा प्रभुनी करो, महिमा भगत कराय ।
लाभ अनंतो ऊपजे, समकित निरमल थाय ॥

॥ ढाल ॥

(दरसणके लोभी नैना दर० ए चाल)
हो पूजनके लोभी सेणा, लोभी० हो पू० ॥ पूजनकुं जिया नित २ चाहे, कुगुरु वचन तज देना ॥ हो पु० ॥ १ ॥ या पूजा समकितकी करणी, सुगुरु वचन सुण लेना ॥हो०॥ गिरिवर गढ गिरनार विराजे, नेमकुमर सुख देना ॥ हो० ॥ २ ॥ वस्त्र युगलकी पूजन करिये, तन मन उज्जल वेना ॥ हो० ॥ मिथ्या तम सब दूर निवारो, सुमति रमण संग रेहना ॥ हो० ॥ ३ ॥ सरधा केसर रंग घोलके, जिन आतम रंग लेना॥ हो० ॥ विमल गिरी अष्टापद पूजो, आदीसर सुख देना ॥ हो० ॥ ४ ॥ सिखर समेत वडो जगसाहे, वीस प्रभु हित देना ॥ हो० ॥ आबू गिरिको महिमा अदभुत, मानो हमारा केना ॥ हो० ॥ ५ ॥ रथजात्रा

जिनवरकी करके, पाप पडल हर लेना ॥हो०॥ कुगुरु कुमतिको संग छोड़के, जिन गुणमें दिल देना ॥ हो० ॥ ६ ॥ आदीसर अलवेसर कहीये जग तारक जगसेना ॥ हो० ॥ सुमति सदा प्रभुके गुणगावत, बोध बीज मुझ देना ॥हो०॥ ७ ॥ ॐ ह्रीं आबू गिरीन्द्राय तीर्थ शिरोमणाय श्रीआदीश्वराय वस्त्रं यजामहे स्वाहा ॥ इति वस्त्रयुगल पूजा ॥ ६ ॥

अथ दशमी गुलाव जल पूजा ।

॥ दोहा ॥

समकित निरमल कारणे, सुरभी सुगंधी लेह ।
छिरको श्रीगिरिराजकुं, भाव धरी गुण गेह ॥
गिरिवर भावे भेटिये, दीजे वंछित दान ।
गीत गान भल गाइये, ज्युं पावो बहुमान ॥

॥ ढाल ॥

(थारी गइरे अनादि नींद, जरा टुंक जोवो

तोसहीजोवो० ए चाल) तुम करो रे सुमतिको संग, रंगीला सेवो तो सही, सेवो तो सही। म्हारा चेतन, सेवो तो सही॥ सेवो० म्हा० तु०॥ मुनिवरकी करणी हितवरणी, लेवो तो सही। मिथ्या तम करणी दूर हियामें, देखो तो सही॥ दे० म्हा० तु०॥ १॥ आतम कर निज गुण धरणी, देवो तो सही॥ तु कह्यो रे हमारो मान सुज्ञानी, वे वो तो सही॥ वे० म्हा० तु०॥ २॥ समकित सुध करणी भव हरणी, लेवो तो सही॥ द्रोपदी जिम जिन राज भगतिकर, सेवो तो सही॥ म्हा० तु०॥ ३॥ राग कतरणी जग जस भरणी, जोवो तो सही॥ अकलंकित गुण होय भरम सब, धोवो तो सही॥ धो० म्हा० तु०॥ ४॥ सब मन हरणी गुणमणि धरणी, पावो तो सही॥ कूड कपट कर दूर हियामें, लावो तो

सही ॥ ला० म्हा० तु० ॥ ५ ॥ आबू गिरिनो पूजन करणी, ध्यावो तो सही ॥ तनमन प्रीत लगाय जिणंद गुण, गावो तो सही ॥ गा० म्हा० तु० ॥६॥ अनुपम सुख करणी अघ हरणी भावो तो सही ॥ तुम करो रे सुगंधी पूज, भविक सुख पावो तो सही पा० म्हा० तु ॥७॥ इम गुण वरणी पूजन करणी, गावो तो सही । सुमति रंगीला सेण हियामें लावो तो सही ॥ ला० म्हा० तु० ॥ ८ ॥ ॐ ह्रीं आबुगिरीद्राय तीर्थ सिरो० श्री आदीश्वराय सुगंधिजलं ढोकयामिः ॥ इति गुलाबजल पूजा ॥ १० ॥

अथ इग्यारमी वाजित्र पूजा ।

॥ दोहा ॥

नंदी घोष वजावतां, थाये लाभ अनंत ।
प्रकारे पूजतां, बोध बीज विकसंत ॥१॥

॥ ढाल ॥

(चाल अंगरेजी वाजेकी। पूज पूज जिनराज, काज सार तुं, का० ए चाल) सार सार जिनराज, तार तार तुं ॥ ता० भला है ता०॥ जग जस धार सार, जयकार तुं॥ सरणाइ मृदंग चंग, सार तुं ॥ सा० भ० सा० ॥२॥ तुंहि है जिनंद चन्द, आदिकार तुं। जगत उधार सार, अविकार तुं ॥अ० भ० सा०॥३॥ समकित धार सार, सुखकार तुं ॥ गुणको निधान सार, भरतार तुं ॥भ० भ० सा०॥४॥ सुरनर देव सार, किरतार तुं। आवूके जिणंद चन्द, मुनिसार तुं ॥ मु० भ० सा० ॥ ५ ॥ परम आधार सार, जिन तार तुं। सुमति विचार धार, सुखकार तुं ॥ सु० भ० सा० ॥६॥ ॐ ह्रीं आबू गिरीन्द्राय तीर्थ सिरोमणाय आदीश्वराय वाजित्र गुण वरणन पूजा ॥१२॥

अथ बारमो नृत्य पूजा ।

॥ दोहा ॥

सुर सुन्दर हरखे करी, सज सोले सिणगार ।
ताल मृदंग हि लेईने, भगति करे बहु सार ॥
भाव धरी प्रभु आगले, अष्टापद गिरि सार ।
रावणने मंदोदरी, नृत्य करे गुण धार ॥

॥ ढाल ॥

(जिन गुण गावत सुर सुन्दरी रे, ए चाल)
भगति करे मिल सुर सुन्दरी रे ॥ भ० ॥ सुर सुन्दरी रे देवा, सु० भ० हीर चीर पाटंबर, पहरी रमझम घुघर नाद करी ३ ॥भ० स०॥१॥ चंद वदन मनमोहन गहरी, मृग नैनी श्रृंगार धरी रे ॥ भ० बांह बाजू बंध कंचन चूडी, वेसर मोती लाल जरी रे ॥ भ० सु० ॥ २ ॥ चंपक वरणी मन वसकरणी, प्रभु आगे गुण गावे खरी रे ॥ भ० सु० ॥ ३ ॥ जिन गुण गावत

हरख वधावत, थेई थेई नाचत भाव धरी रे ॥ भ० ॥ असरण सरण तुहिं जग दीपक, तुंही निरंजन सुखकारी रे ॥ भ० तु० ॥ ४ ॥ भविजन ध्यावत हरख उपावत, गावत गुण सुभ राग करी रे ॥भ०॥ गजगति गामनी सब मिल भामनी, ठम ठम नाचत सुर महरी रे ॥ भ० सु० ॥५॥ अष्टापद गिरि रावण राजा, मंदोदरी जिम भगति करी रे ॥भ०॥ सुमति सदा जिनके गुण गावत, लुल २ जिनजीके पाय परी रे ॥ भ० सु० ॥ ६ ॥ ॐ ह्रीं आबूगिरींद्राय तीर्थ शिरोमणाय आदीश्वराय गीत गुण वर्णन पूजा॥१२॥

॥ अथ कलश ॥

॥ राग रेखता ॥

(जिनंद जस आज मैं गायो ए चाल)

गिरींद जस आज मैं गायो, भेटतां हरख अति

॥ ढाल ॥

(पूर्वमुख सावनं करिदर्शन पावनम् । ए देशी) पूर्वभवी शुचिथई । शुद्ध अनुभव लई करधरि कलस शुचिजल उदारम् हांरे अइओ शुचि जलउदारं ॥ १ ॥ पहिर खीरोदकं । बांधि मुहकोशकं ॥ धूपवाशित सदोत्तरीय सारं हांरे अ० स० ॥ २ ॥ गंगासिंध्वादिना । खीरसागरतणा । तीर्थजल औषधी सिश्रकीजे ॥ हां० अ० मि० ॥ ३ ॥ आठ जातीतणा । कलश भरी सुरगणा स्नात्र प्रभुनी रचे सुर गिरीन्दे हांरे० अ० सु० ॥ ४ ॥ इम भविभावकरि । शुद्ध समकित धरि । जिनतणी पूजा करो चित्त धारी । हांरे अ० चि० ॥ ५ ॥ ॐ ह्रीं श्रीपरमात्मने अनंतानंत ज्ञान शक्तये गिरिनारगिरौ श्रीनेमिजिनेद्राय जलं यजामहे स्वाहा ॥ १ ॥

अथ २ केसर चंदन पूजा ।

॥ दोहा ॥

नेमिजिणंद दिणंदसम, शिवसुख तरुनोकंद ।
रेवतगिरिवर मंडणो, पूजनकरो अखंड ॥ १ ॥
घसकेशर मृगमदवलि, बावनचंदन संग ।
अम्बर घनसार मेलवी, करो विलेपन अंग ॥२॥

॥ रागनी भैरवी ॥

विलेपन करिये, प्रभुजीके अंग ॥ वि० ॥ जिनवरको तनु फरसन सेती । पामेजिन गुण संग ॥ वि० ॥ पारसफरसत लोहा कंचन, तिम होवे कीटक भृंग ॥ वि० ॥ २ ॥ शिवादेवी अंगज हो प्रभु, श्यामवरण द्युति चंग । वि० ॥ ३ ॥ चरण युगल कच्छपसम प्रभुना । कर पंकज जल संग । वि० ॥ ४ ॥ वदनचंद्र अकलंकित कीनो । भालअर्ध शशि अंग । वि०॥५॥ निलोत्पलसम नेत्रयुगल फुनि, कामराग थयो

भंग । वि० ॥ ६ ॥ केशरचंदन मृगमद अम्बर । प्रभुपूजो मनरंग । वि० ॥ ७ ॥ ॐ ह्रीं केशर-चंदनं यजामहे स्वाहा २

अथ ३ पुष्प पूजा ।

॥ दोहा ॥

तृतीय पूजा जिनवरतणी, करे भविक उजमाल।
फूल सुगंधी लेइने, चाढे भरि भरि थाल ॥
समवसरणमां सुरकरे, पुष्पवृष्टिधरिभक्ति ।
तिमश्रावक शुभ भावथी, पूजा करे यथाशक्ति॥

॥ रागनी वृंदावनी सारंग ॥

प्रभु अरचा रचो मिल भविजना । नाना-विधना फूल सुगंधी । लेई तुम थाओ इकमना प्रभु० ॥१॥ त्रिकरण योगकरी प्रभुपूजो । चित-धरी शुभ भावना ॥ प्रभु० ॥ २ ॥ च्यारनिक्षेपे जिनवर जाणी मनमंदिरमें लावना ॥ प्रभु० ॥ ३ ॥ अनुयोगद्वार आवश्यकसूत्रे । वेदनिक्षेप

सुहावना ॥ प्रभु० ॥ ४ ॥ ठवणा समवसरण त्रिहुं दिशिमां । प्राची भावकहावना ॥ प्रभु० ॥ ५ ॥ द्रव्येजिनवर श्रेणिक पमुहा । नाम ऋषभादि सुहावना ॥ प्रभु० ॥ ६ ॥ इनविधि प्रभुकी भक्ति करीये । शमरस अमृत आवना ॥ प्रभु० ॥ ७ ॥ कृपा करिने साहिब मुझने । कीजे कृतार्थ पावना ॥ प्रभु० ॥ ८ ॥ ॐ ह्रीं पुष्पं यजा० ॥ ३ ॥

अथ चर्थी पूजा ।

॥ दोहा ॥

यादव कुलनो चन्दलो, ब्रह्मचारी शिरमोड ।
बावीसमा जिनवरतणी, पूजा करो कर जोड ॥

॥ सोरठा ॥

अगर चन्दन घनसार, सेल्हारस मांहि मेलिये । मृगमद अम्बर सार ॥ धूपघटा करि-पूजिये ॥ २ ॥

॥ रागनी सोरठ ॥

सेवोभविने जिणंद सुखकारा, करि धूप धूम मनुहारा। सेवोभवि० ॥ १ ॥ गिरिनार गिरि मंडण दुख खंडण। भविजन कीधसु-धारा। कर्म प्रबल दलदाह करनमिस। धूप दहो सुविचारा। सेवो भवि० ॥ २ ॥ सोरी पुरमें जन्म प्रभुनो, समुद्र विजय कुल भाणा। शिवादेवी उदर शुक्ति मुक्ताफल। चित्रानक्षत्र वखाना। सेवोभवि० ॥ ३ ॥ च्यवन जन्म कल्याणक प्रभुना। सोरीपुरमे जाना। गिरनार गिरि पर सहसा वनमें। दीक्षाग्रही सुख खाना ॥ सेवोभवि० ॥४॥ चोसठ इन्द्र करे उछरंगे। जिन सेवा मनुहारा। कृपा चन्द्र ए प्रभुने जाणो। निश्रेयस दातारा। सेवोभवि० ॥ ६ ॥

ॐ ह्रीं धूपं पूजा ४

अथ पांचमी दीपक पूजा ॥

॥ दोहा ॥

पांचमी पूजा दीपनी, प्रकटे ज्ञान उद्योत ।
करो भविक जगनाथनी, मन वांछित सुखहोत
शिवादेवीनो लाडला, अतुल बली वडवीर ।
श्यामसलुणो नाहलो, नेमीनाथ सुखसीर ॥

॥ रागनी कल्याण ॥

अहो प्रभु पूजा रचो चित्त चंगे ॥ अहो०॥ रेवत गिरि पर नेमि जिनेश्वर । केवल लह्यो सुखसंगे अहो प्रभु० ॥ १ ॥ च्यार निकायके सुरसुरी मिलके । त्रिगडो रचे अतिरंगे अहो प्रभु० ॥ २ ॥ समवसरणमें राजे प्रभुजी । देशना दे भवभंगे अहो० ॥ ३ ॥ साधु साधवी वेमानिक देवी । अग्निकूण उमंगे ॥ अहो ॥ ॥ ४ ॥ ज्योतिषि भवनपति व्यन्तर सुरी । रहे नैरित जिन संगे ॥ अहो० ॥ ५ ॥

वायव विदिशे एहिज देवो, जिनवाणी सुणे रंगे ॥ अहो० ॥ ६ ॥ वैमानिक सुर मानव— स्त्रीजन ईशान दिशिमें संगे ॥ अहो०॥७॥ चार-पर्षदा जिनवाणीसुण, मगन हुवे मन रंगे । अहो ॥ ८ ॥ गोघृत भरि मणिपात्र अनूपम । दीपक करो मन चंगे । अहो० ॥ ९ ॥ ॐ ह्रीं दीपं यजामहे स्वाहा ॥ ५ ॥ इति ॥

अथ छट्ठी अक्षत पूजा ॥

॥ दोहा ॥

अक्षत अक्षत लेईने, स्वस्तिक रचो विशाल ।
ज्ञानादिक त्रण पुंजथी, पामो मंगल माल ॥१॥
राजीमतीको छोडके, नेमि चढ्या गिरनार ।
रथनेमि राजीमती, लीधो संयमभार ॥२॥

॥ रागनी माड ॥

नेमिजिन पुजो तो सही । प्रभु रैवतगिरि सिणगार । नेमि जिन० आंकणी ॥ उत्तम-

शालि प्रमुख बहुध्यशनं। चांढो तो सही ॥ अक्षयसुख कारण जगतारण । जिनवर शरण ग्रही । प्रभु ॥ १ ॥ आधेय थी आधार अनोपम। जगमें सोभ लही ।श्रीगिरनार नेमि फरशनते। कीर्त्ति व्याप रही । प्रभु ॥ २ भरत नरेश्वर संघ लेई ने, शेत्रुंजे यात्रा लही। चैत्य निर्मापण नवीन करीने, रेवंत मार्ग ग्रही । प्रभु०॥ ३ ॥ स्वर्णगिरि पर नेमि जिणंदनो ।मणि कनकादि मयी । देरासर नवीन रचीने । नेमिनी पडिमा ठहीं ॥ प्रभु० ॥ ४ ॥ क्रोड देवसे ब्रह्मेन्द्र आयो, भतरनो सुजस कही । पहिलो उद्धार प्रथम चक्रिनो ॥ एम अनेक लही ॥प्रभु०॥५॥ गिरिवर मंडण नेमि जिनेशर। भेटो भावे लही। सिद्धि सौध चढ़वा मनरंगे । सोपानपंक्ति कहीं प्रभु० ॥ ६ ॥ ॐ ह्रीं अक्षत यजामहे स्वाहा ॥ ॥

॥ रागणी काफी त्रिताल ॥

उज्जयंत गिरिगुण गावो । तुमें मणिमा णिकसे वधावो । उज्जयंत० नेमिजिनेसर जग-अलवेसर, मन मंदिरमां लावो । जिनवर चरणनो शरण ग्रहीने । समरणमां लयलावो ॥ मणिमा० ॥ १ ॥ तीर्थपती बावीसमा स्वामी, नेमि निरंजन ध्यावो ।भविक जीव सुखकारण तारण, जिनदरशन मन भावो मणि० ॥ २ ॥ दोय भेद दरशनना जाणो। शुद्धाशुद्ध स्वभावो, शुद्ध दरशनथी निज गुण प्रकटे । आतमगुण-हुलसावो । मणि० ॥ ३ ॥ काल अनादि भव-वनमें भटकता ।कर्मरिपु गण दहवो ।कृपाकरी मुज दरशन दीजे। अनुभव अमृत पावो ॥ मणि० ॥ ४ ॥ नाना जातीना फल लेईने, आगल प्रभुजीने ठावो । कृपाचंद्र फल पूजासे, यह मनवांछित फल पावो।

मणि० ॥ ५ ॥ ॐ ह्रीं इत्यादि फलं यजामहे स्वाहा ॥ ६ ॥

अथ नवमी ध्वज पूजा ॥

॥ दोहा ॥

नवमी ध्वजनी पूजना, लावो जिन दरबार ।
सधवस्त्री लेई करी, करे प्रदक्षणा सार ॥
धवल मंगल गातां छतां, वाजित्र विविध प्रकार ।
कैलास गिरिना शिखरपर, आरोपो सुविचार ॥

(राग श्री)

जिनगुणगानं श्रुत अमृतं । ए देशी । ध्वजपूजन करो सुख सदनं ॥ ध्व० ॥ सहस्र योजन दंड मनोहर । सुवरणमय जनमन हरणं ॥ ध्व० ॥ १ ॥ किंकिणी रणकत शब्द मनोहर दिव्यध्वनि सुखकर श्रवणं ॥ ध्व० ॥ २ ॥ एक हजारके अष्ट उपर वलि । सोहे पताका पंच-वरणं । ध्व० ॥ ४ ॥ मनमोहन ए ध्वजनिर-

खीने । भविने परमानन्द करणां । ध्व० ॥ ५ ॥ इण गिरिके षट्नाम सुहंकर । नन्दभद्र गिरि-सुखकरणां ॥ ध्व० ॥ ६ ॥ अषाढ सुदी अष्टमी दिनकीनो । शिवरमणीको कर ग्रहणां । ध्व० ॥ ७ ॥ पांचसे षट् त्रिंशत मुनि साथे । सादि-अनन्त स्थितिवरणां । ध्व० ॥ ८ ॥ ॐ ह्रीं इत्यादि ध्वजं यजामहे स्वाहा ॥ इति ॥८ ॥

अथ दशमो अष्ट मङ्गल पूजा ।

॥ दोहा ॥

दशमी मंगल पूजना, अष्टमंगल लिखसार ।
रजतना तंदुल लेईने, अखंड उज्वल मनुहार ॥
पुष्पवृष्टि करें सुरगणा, पंचवर्ण सुविशाल ।
योजन भूमंडल प्रमित, पूजो जगत दयाल ॥

(पास जिनंदा प्रभु मेरे मन वसिया । इस चालमें) चालो भविकजन यात्रा करिये यात्रा करिशिव संपदा वरिये ।

चालो०। जीर्णदुर्गना चैत्य जुहारी। तल-हट्टिये जइ रात्रि रहिये ॥ चालो०॥ १ ॥ श्रेणीसोपान चढी शुभ भावे। नेमिजिनंदको ध्यान जो धरिये। चालो० ॥२॥ प्रथम टूंकमें विम्बप्रसुना। अद्भुत आदि प्रलंव मन धरिये ॥ चालो०॥ ३ ॥ मेरुवसी पमुहा जिनमन्दिर। निरख निरख भवि मनसां ठरिये चालो०॥४॥ यहां अनेक जिनचैत्य नमीने। वीजी टूंक जिन-चरणाकुं करिये। चालो० ॥ ५॥ रथनेमीजीको दरस सरसकरी। तृतीय शिखर शासन सुरि-सरिये। चालो० ॥६॥ चौथी नेमिवीर जिनेसर पंचमी टूंक नमी दुख हरिये। चालो ॥ ७ ॥ सहसावन जिनचरण नमीने। चैत्यप्रवाडको इनपरि करिये। चालो० ॥८॥ गजपद कुंडनो नीर लेईने। स्नात्रमहोत्सवकरि सुख वरिये। चालो० ॥ ६ ॥ मंगल पूजनारिष्ट निवारक।

कृपाचन्द्रशिवपद्द अनुसरिये । चालो ॥ १० ॥
ॐ ह्रीं० अष्टमगलं यजामहे ॥ १० ॥

॥ कलश ॥

—*:०:*—

॥ रागनी धन्याश्री ॥

प्रभुजीको सुयश अम्बरघन गाजे । रैवत-गिरिवरको प्रभु मंडण । नेमिजिनन्द विराजे, तीर्थपतिना गुणगावंतां । रसना सफल कहाजे प्रभु० ॥ १ ॥ श्रीखरतरगण नायक लायक । जिन चारित्र सुरिराजे । गिरनारगिरिनी स्तवनाकीनी । श्रीसंघभक्तिने काजे । प्रभु० ॥२॥ पंचतीर्थनी रचना रंगे । कीनी भविक हित काजे । दरशन देखत अनुभव प्रकटे । जिम-साक्षात गिरि ठाजे प्रभु० ॥ ३ ॥ भगवइ अंगे

सालबागमें । सांभल्यो संघ सुकाजे। मुंबई बंदर रहिचोमासो संपूरण हित काजे। प्रभु० ॥ ४ ॥ सम्वत उगनीसे उपर बहोत्तर । पोषधवल भृगु छाजे, दशमीदिन गिरिना गुण गाया । भावभले सुसमाजे । प्रभु० ॥ ५ ॥ श्रीजिनकीर्त्ति रत्न शाखाधर, । युक्ति अमृतगुरुराजे । कृपाचन्द्र जिनस्तवना कीनी । निजगुण निर्मल काजे प्रभु० ॥ ६ ॥ इति श्रीगिरनारपूजा ।

अथ आरती ।

जय जय जिनराया ॥ श्री नेमिजिनेश्वर राया । भविमिल गुण गाया० जय ॥१॥ मंगल आरति पूजा करता । भविने सुख छाया मोक्षमारग दीपाया । राजुलपतिराया ॥ जय०

॥ ५ ॥ सिवादेवी नंदन वंदन । समुद्र विजय राया ॥ सौरीपुरमें जाया। द्वारिकापुरी आया । ॥ जय० ॥ ३ ॥ रैवतगिरिके सहसा वनमें । दीक्षा सुरराया । केवल रमणी पाया । शिव-नगरी धाया ॥ जय जय० ॥ ४ ॥ इन विध पूजा आरती करीने। सुख संपति पाया। मुम्बई पुरमें सुहाया । पंचतीरथ राया ॥ जय जय० ॥ ५ ॥ भाव भले जिन भक्ति करतां । भवि-जनमन भाया । कृपा चन्द सूरिराया । मंगल वरताया ॥ जय० ॥ ६ ॥ इति



अथ चन्द्रोपाध्याय कृत।

समेतशिखरगिरि पूजा।



प्रथम पूजा।



॥ दोहा ॥

चोवीसे जिनवरतणा, प्रणमी भावे पाय।
समेतशिखर गिरिरायनी, पूज करु मन लाय॥
शिखर समेत सिरोमणी, ए गिरवर केलास।
अति उत्तंग मनोहरु, ए जोगीन्द्र विलास॥
वीस प्रभु सुगते गया, कर अणसण इह ठोर।
ताते सुर किन्नर सवे, वंदत है कर जोर॥
महिमा जाकी महियले, कहन सके कवि कोय।
मुक्ति महलनी श्रेणिकी, ए तीरथ जग योथ॥

मिथ्या मत राची रह्या, तिनकुं ए न सुहाय।
घूक तणो मन किम गमे, दिनकर सब सुखदाय॥
अजित जिणंद दिनंद सम, दुसम सुखमा काल।
कुशल करण भव भय हरण, प्रगट भए प्रतिपाल॥

॥ ढाल॥

(हां हो रे देवा, बामन चन्दन घस कुम-कुमा ए चाल) हां हो रे देवा, समेतशिखर गिररायना, गुण गावो मन धर प्रेम ए॥ हां हो० सुरगुरु पिण ए गिरतणो, बहु महिमा वरणे केम ए॥ १॥ हां हो० बीस प्रभु मुगते गया, अजितादिक श्रीजिनचन्द ए॥ हां हो० इण कारण ए गिरवरु, निश्रेयस सुरतरु कंद ए॥ २॥ हां हो० कोडाकोडी मुनिवरु, सीधा बहु इण गिर आय ए॥ हां हो० ए गिर फर-स्यां भावथी, पापी पिण पावन थाय ए॥३॥ हां ०श्रावक संघ समकित धरे, प्रेम ए॥४॥ इति

॥ ढाल बीजी राग देशाख ॥

(पूर्व मुख सावनं, करि दशन पावनं ए चाल) अजित जिनचन्द सुर वृन्द सेवित सदा, सुभग पदकज तणी सेवना ए॥ हां रे अइयो से० जगत दुर्लभ मणी रत्नपर जीवकुं, पूजिये चरण जिन देवना॥ हां रे अ० दे० ॥ १ ॥ तरण तारण भवोदधि भविक जीव केइ, परम उपगार कर नीस्तार्या॥ हां रे अ० नि० ॥ २ ॥ अष्ट विध पूजना द्रव्य भावे करे, भाव मन सोच धर जे नरा॥ हां रे अ० जे० ॥ ३ ॥ ते सिखर तीर्थे शिव सौख्य संपद वरे, वाल जिन भक्त वत्सल करा॥ हां रे अ० व० ॥ ४ ॥ इति ॥ ॐ ह्रीं श्रीपरमा० श्रीअजितजिनेंद्राय अष्टद्रव्यं यजामहे स्वाहा॥ इति प्रथम पूजा ॥ १ ॥

अथ बीजी पूजा ॥

॥ दोहा ॥

श्रीसंभव भव दव अनल, जलधर सम जिनराज।
पर उपगारी परम गुरु, भए भविक सुख काज॥

॥ ढाल ॥

(राग वेलाउल, विलेपन कीजे श्री जिनवर अंगे ए चाल) पूजिये जिन मन रंगे, जिनेसर ॥पू०॥ जल कुंकुमाक्षत धूप दीप करि, नेवज फल मन चंगे ॥जि० पू०॥१॥ सेना मात जितारी तात सुत, श्रीसंभव जिन अंगे । हार मुगट कुंडल वर भूषण, चाढो भवि शुभ ढंगे ॥जि० पू० ॥२॥ शिखर २ पर शिखर भए हे, अनंत चतुष्क सुरंगे, बालचन्द्र प्रभु अधम उधारन, प्रभुता परम प्रसंगे ॥जि० पू०॥३॥इति॥ ॐ ह्रीं श्रीप० संभव जिनेन्द्राय अष्ट द्रव्यं यजामहे स्वाहा ॥ इति दूजी पूजा ॥ २ ॥

अथ तीजी पूजा ।

॥ दोहा ॥

अभिनन्दन जिनचंदकी, महिमा वरणी न जाय ।
परम रूप परमातमा, सदानंद सुखदाय ॥

॥ ढाल ॥

(राग सारंग ॥ सांझ समे जिन वंदो ए चाल) अभिनंदन जिन वंदो, भविजन अ० । संवर तात सिद्धारथ माता, जाके कुल नभ चंदो ॥ भ० अ० ॥ १ ॥ अधम उधारण भव दुख वारण, शिव सुरतरुनो कंदो । इंद्र चंद्र असुरेन्द्र नमे नित, वंदित सुरनर वृंदो ॥ भ० अ० ॥ २ ॥ समेत शिखर पर शिव सुख पायो, मिट गयो भव भय फंदो । वालचंद्र प्रभु तरण तारणको, पूजन करी चिरनंदो ॥ भ० अ० ॥ ३ इति ॥ ॐ ह्रीं श्रीपरमा० श्रीअभिनंदन

जिनेंद्राय अष्टद्रव्यं यजामहे स्वाहा ॥ इति तीसरी पूजा ॥ ३ ॥

अथ चौथी पूजा ॥

॥ दोहा ॥

सुमतिनाथ सम संपदा, सदा सुमती दातार ।
सेवे सुरनर अमर सहु, चरण सरण चित धार ॥

॥ ढाल ॥

॥ राग सारंग ॥

(चरणकी २ चरणकी, वारीजाउं में गुरु राय च० ए चाल) वलिजाउं मैं सुमति जिणंदको, व० ॥ पूरण ब्रह्म भए परमातम, मेघकुला वर चंदकी ॥ व० ॥ १ ॥ भवि कुल कमल विकास करणकुं, प्रगट प्रताप दिणंद की । सब गुण लायक वंछित दायक ॥ शासन सुरतरु कंद की ॥ व० ॥ २ ॥ चरण सुसेवा खेचर अमर नर, मात सुमंगला

नंदकी। वालचन्द्र प्रभु पतित उधारन, सव गुण रतन समंदकी ॥ व० ॥ ३ ॥ ॐ ह्रीं परम० श्रीसुमति जिनेंद्राय अदे द्रव्यं यजामहे स्वाहा ॥ इति चौथी पूजा ॥ ४ ॥

अथ पांचमो पूजा ।

॥ दोहा ॥

पद्म प्रभु पद पद्मको, सरण गही सुखदाय ।
दर्शन विन अन देवको, संग कवू न सुहाय ॥

॥ ढाल ॥

(राग सोरठ मल्हार ॥ अणियारे नेण जिणके, सखि मुनि संग वालक किणके ए चाल) प्रभु सेती प्रीत लागी, मेरी भाग्यदशा अव जागी रे ॥ प्र० ॥ पद्म प्रभुजीके दरसण अंतर, आगल मेरी भागी रे ॥ प्र० ॥ १ ॥ प्रभु परमातम मैं वहिरातम, अनुभव आतम सागी ॥ प्रगट प्रताप प्रभू प्रभुता लख, अव मैं

भयो अनुरागी रे ॥ प्र० ॥ २ ॥ अंतरगतकी वे हीज बूझे, क्या बूझे जो दागी । बालचंद्र निज नाथ निहारत, कुमति कुटलता त्यागी रे ॥ प्र० ॥ ३ ॥ ॐ ह्रीं परमा० श्रीपद्म प्रभु जिनेंद्राय अष्टद्रव्यं यजामहे स्वाहा । इति पांचमी पूजा ॥ ५ ॥

अथ छठी पूजा ॥

॥ दोहा ॥

लोह धातु सम आतमा, परमातम चिद्रूप ।
कंचन रुप करे प्रगट, श्रीसुपास जिन भूप ॥
श्रीसुपास जग जीवके, पारस सम जिनराज ।
अणघड आतम लोहकूं, कंचन करे सुकाज ॥

॥ ढाल ॥

(राग वसंत, दादा कुसल सुरिंद, तुम दरसणतें परमानंद ॥ दा० ए चाल) भवि पूजो सुपास, सहुनी वंछित पूरे आस ॥ भ० ॥ जाको

कमल सम सुगंध सास, आहार निहार अदृश्य है जास ॥ भ० ॥ १ ॥ न घटे न वधे नख केश पास, मांसासृग् उज्वल वर्ण तास ॥ भ० ॥ अतिसय चोतीस तणो प्रकास, तरण तारण जग जस सुवास ॥ भ० ॥ २ ॥ समेत शिखर पर करके निवास, प्रभु पायो मुक्ति महल सुवास ॥ भ० ॥ प्रभुके समरणसे कर्म नास, बाल, कहे मैं प्रभुको दास ॥ भ० ॥ ३ ॥ ॐ ह्रीं परमा० श्रीसुपार्श्व जिनेंद्राय अष्टद्रव्यं यजामहे स्वाहा ॥ इति छठी पूजा ॥ ६ ॥

अथ सातमी पूजा ॥

॥ दोहा ॥

चंद्राप्रभुकी चंद्र सम, मुख शोभा मनुहार ।
देखत दृग आनंद लहे, सूरत अति सुखकार ॥

॥ ढाल ॥

(राग, मल्लि मनोहर तुज ठकुराइ ॥म०॥

ए चाल) श्रीचंद्राप्रभु अरज सुणीजे। श्रीचं० त्रिभुवन नाथ गरीबके ऊपर, दीनदयाल निवाजस कीजे ॥ श्रीचं० ॥ १ ॥ अधम उधारण विरुद तुमारो, मोसो अधम न और कहीजे ॥ श्रीचं० ॥ इह संसार अपार अगाधमें, साहिव सरणागत रख लीजे ॥ श्रीचं० ॥ २ ॥ मो पतितनकूं पार उतारो, निज निर्यामक विरुद वहीजे ॥ श्रीचं० ॥ बालचंद्र प्रभु शिवसुख दायक, आतम संपद अव मोहे दीजे ॥ श्रीचं० ॥ ३ ॥ ॐ ह्रीं पर० श्रीचंद्राप्रभु जिनेंद्राय अष्टद्रव्यं यजामहे स्वाहा ॥ इति सातमी पूजा ॥ ७ ॥

अथ आठमी पूजा ।

॥ दोहा ॥

सुविध जिनंद दिनंद सम, जगजीवन हितकार ।
मिथ्या मोह अज्ञान तम, दूर हरण दिनकार ॥

॥ ढाल ॥

(राग, जिया चतुर सुजाण नवपदके गुण गाय रे, ए चाल) भेटो भविक सुजाण, सुविध जिणंद सुभ भाव रे ॥ भे० ॥ उत्तम कुल नरभव ते पायो, फिर एसो नहीं दाव रे॥ भे० ॥ १ ॥ भक्त उधारण भवि निस्तारण, भव सागरको नाव रे ॥ भे० ॥ तन मन वस कर निज आतमकुं, प्रभु समरण लय लाव रे ॥ भे० ॥ २ ॥ द्रव्य भावयुत पूजन करिये, मन धर अधिक उच्छाह रे ॥ भे० ॥ बालचंद्र प्रभु पतित उधारन, मिल गए पुन्य पसाय रे ॥ भे० ॥ ३ ॥ ॐ ह्रीं पर० श्रीसुविध जिनेंद्राय अष्टद्रव्यं यजामहे स्वाहा ॥ इति आठमी पूजा ॥ ८ ॥

अथ नवमी पूजा ॥

॥ दोहा ॥

श्रीशीतल मुनिइंद्रकी, महिमा अजब अपार ।
ज्ञाना नलथी जिण दिया, कर्म अष्टेंधन जार ॥

॥ ढाल ॥

(सिद्धाचल गिरि भेट्या रे धन भाग्य हमारा । सि० ए चाल) श्रीशीतल जिन वंदो रे, भवि जन सुखकारा ॥ श्री शी० ॥ पतित उधारण दुरगति वारण, दायक शिव सुख सारा रे ॥ भ० श्रीशी० ॥ १ ॥ भक्त भविक भव भय अपहारी, ए प्रभु परम सुप्यारा रे ॥भ०॥ मिथ्या ग्रीषम ताप निवारण, प्रभु चंदन अनुकारा रे ॥ भ० श्रीशी० ॥ २ ॥ पर उपगारी परम महागुरु, परमातम अविकारा रे ॥भ०॥ बाल कहे प्रभुको भव भवमें, चरण सरण मन धारा रे ॥ भ० श्रीशी० ॥ ३ ॥ ॐ ह्रीं

परमा० श्रीतल जिनेंद्राय अष्ट द्रव्यं यजामहे स्वाहा ॥ इति नवमी पूजा ॥ ९ ॥

अथ दशमो पूजा।

॥ दोहा ॥

श्रीश्रेयांस जिणंदना, चरण सरण सुखकार।
पुन्य प्रसाद मिल्यो मुझे, भव२ सुख दातार ॥

॥ ढाल ॥

(दादा चिरंजयो, सेवक जन सुखदाई, दरसण सदा दियो। ए चाल) भवि भाव धरो, श्रीश्रेयांस जिनेसर पूजो मन रली ॥ भ० ॥ ए प्रभु सम अवर न को देवा, जाकी चौसठ इन्द्र करे सेवा, ते लहे सुरसुख शिवसुख मेवा ॥ भ० ॥ १ प्रभु परतिख सुरतरु सम स्वामी, जाकी पुन्य प्रसाद सेवा पामी, प्रभु जगजीव न अन्तरयामी ॥ भ० ॥ २ ॥ प्रभु दीनदयाल परम दाता, जग वत्सल जगवंधव त्राता, कहे

वाल सकल दायक साता ॥ म० ॥३॥ ॐ ह्रीं श्रीपरमात्मने अ० श्रीश्रेयांस जिनेंद्राय अष्ट द्रव्यं यजामहे स्वाहा॥ इति दशमी पूजा ॥१०॥

अथ इग्यारमी पूजा ॥

॥ दोहा ॥

परमातम परमेसरू, श्रीतेरम जिनराज ।
ध्यावो सेवो भविक जन, ज्युं पावो सुख साज॥

॥ ढाल ॥

(राग कानडो मेरी लागी लगन जिन चरणे, हो मे० ए चाल) मन मोह्यो री मेरो जिन चरणे, हो म० ॥ दुख दोहग सब हरणे हो मन० ॥ विमल जिणंदकी अदभुत तनु छवी, सोभत सोवन वरणे॥ हो० मन० ॥१॥ दीन दयाल दयानिध दाता, सब जीवन सुख करणे ॥ हो म० ॥ परमातम प्रभु परम परम गुरू, प्रभु भये तारण तरणे ॥ हो मन०

॥ २ ॥ पुन्य प्रसाद लह्यो प्रभु दरसन, शाश्वत शिव सुख धरणो ॥ हो मन० ॥ बाल कहे प्रभु सेवक जाणी, रख लीजे मोह सरणो ॥ हो मन० ॥ ३ ॥ ॐ ह्रीं परमात्मने श्रीविमल जिनेंद्राय अष्टद्रव्यं यजामहे स्वाहा ॥ इति ग्यारमी पूजा ॥ ११ ॥

अथ बारमी पूजा ।

॥ दोहा ॥

श्रीअनंत जिनदेवकी, सेव करो मन लाय ।
मनवंछित सुख जिम लहे, दुरगति दूर पलाय ॥

॥ ढाल ॥

(राग मालवी गौडी । सब अरति मथन मुदार धू करतगं० ए चाल) ध्यावो सेवो भविजन भक्ते, अनंत जिनंद महाराज रे देवा अनं० ए सुरतरु सम जगमे जिनवर, तारण-तरण जिहाज रे देवा ॥ ता० ध्या० ॥१॥ कृपा

॥ ढाल ॥

(राग गौडी । केसरीयाने जिहाजको लोक तिरायो ॥ ए चाल) शांति जिनेसर ध्यावो, भविजन शां० ॥ तरण भव सागर जिनको, तीन जगत् जस चावो ॥ शां० ॥१॥ शान्ति सुधारस नाम प्रभुको, समरण कर मन भावो । कर्म कोट सत खंड हुवे तब, शुद्ध सरुपी थावो ॥ भ० शां० ॥ २ ॥ भक्ति करो मन सुध भगवन्तकी, मन सुध प्रभु गुण गावो बाल कहे प्रभुके सेवनसे, मन वंछित फल पावो ॥ भ० शां० ॥३॥ ॐ ह्रीं श्रीपरमा० श्रीशांति जिनेंद्राय अष्टद्रव्यं यजामहे स्वाहा ॥ इति चोदमी पूजा ॥ १४ ॥

अथ पनरमी पूजा ॥

॥ दोहा सोरठा ॥

कुंथु जिनेसर देव, भविजन पूजो भावथी।
चरण कमलकी सेव, इंद्रादिक नित प्रति करे॥

॥ ढाल ॥

(राग सोरठा, कुंद किरण शसि उजलो जी देवा ॥ ए चाल) चंद्र किरण जेसो उजलो रे देवा, जग जस प्रभु विस्तारो जी आछो। अनंत गुणे करी सोभता रे देवा, कुंथु जिनंद जग सारो जी आछो ॥ १ ॥ कामित दायक सुरतरु रे देवा, सर्व जीवन प्रतिपालो जी आछो। भविजन पूजो भावथी रे देवा, ए प्रभु परम आधारो जी आछो ॥२॥ शिवसुख दायक साहिबा रे देवा, पतित उधारण हारो जी आछो। बालचंद्र जिन चंदनो रे देवा, सरण गह्यो सुख कारोजी आछो ॥ चं० ॥ ३ ॥ ॐ ह्रीं श्रीपर-

सर, पूजो भविजन भाव रे ॥ जगतपति जिन-राज साहिब, भव समुद्रनो नाव रे ॥ न०॥१॥ इंद्र चंद्र सुरेंद्र नर सुर, पूजनको जसु चाव रे॥ तरण तारण कृपा सागर, सेवनको अब दाव रे ॥ न० ॥ २ ॥ पुन्य उदय प्रभु दरसन पायो, आनंदकंद सुभ भाव रे ॥ बाल कहे प्रभुके चरणकी, सरण मोहे सुहाव रे ॥ न० ॥ ३ ॥ ॐ ह्रीं श्री परमा० श्रीनमिजिनेंद्राय अष्टद्रव्यं यजामहे स्वाहा ॥ इति उगणीसमी पूजा ॥१६॥

अथ वीसमी पूजा ॥

॥ दोहा ॥

पारस पारसनाथका, गुण गाता गहगट्ट ।
कष्ट टले संपति मिले, मनवंछित फल थट्ट ॥

॥ ढाल ॥

(सांवरिया स्वामीजी अब मोही तारो । ए चाल) सांवरिया साहिबकी बलिहारी ॥

सां० ॥ अश्वशेन तात वामादेवी माता, पास जिणंद हे सुखकारी ॥ सां० ॥ १ ॥ जाके गुण-को पार न पावे, इंद्र नरिंद नमे नर नारी ॥ सां० ॥ भव भव भमतां प्रभु जी में पाया, दुरगति दूर निवारी ॥ सां० ॥ २ ॥ अबमें प्रभु विन ओर न चाहुं, एही मुझ मत इक-तारी ॥ सां० ॥ वाल कहे प्रभु साहिब मेरे, शिवसुख दो हितकारी ॥ सां० ॥ ३ ॥ इति ॥

॥ ढाल ॥

(वीजी । राग । तेज तरणि मुखराजे, हो प्रभु थारो ते० ए चाल) भविजन शिखर समेत वधावो ॥ भ० ॥ वीस जिनेसर सुगति सिधाए, ए तीरथ जग चावो ॥ भ० ॥ १ ॥ द्रव्य भाव करी पूजा रचावो, त्रिभुवनपति गुण गावो ॥ समकित पुष्टालंवन कारण, ए सम और न भावो ॥ भ० ॥ २ ॥ सकल संघ मक-

सूदावादमें, आनंद अधिक वधावो ॥ भक्ति भावसे प्रभुजीकुं पूज्यां, मन वंछित फल पावो ॥ भ० ॥ ३ ॥ संवत सिधि नभनिधि वसुधा सुभ, कार्त्तिक सुदि पण चावो । जिन सोभाग्य सूरीसर गुण निधि, खरतर गच्छपति चावो ॥ भ० ॥ ४ ॥ अमृत लाभ समुद्र पसाये, पूज रची मन भावो । बालचंद्र परमातम प्रभुका, हरख हरख गुण गावो ॥ भ० ॥ ५ ॥ इति ॐ ह्रीं श्रीपरमा० श्रीपार्श्वजिनेंद्राय अष्टद्रव्यं यजामहे स्वाहा ॥ २० ॥

॥ अथ कलश ॥

॥ राग कहरवो ॥

शिखर गिरि तीर्थंकर वीस जिनवर मुदा, भक्तिभर भविक वर पूज करिये । अष्टविधि

विविध धर सिद्धि नवनिधि सही, सुघट घट-संपदा प्रगट वरिये ॥ शि० ॥ १ ॥ विकट वट कर्मकी जोट दूरे करी, विवुध वुध आत्म निज सुद्धि धरिये । चरण जिन शरण गहि भवतरण जन लहे, चरण दरशन लही ज्ञान चरिये ॥ शि० ॥ २ ॥ धन्य दिन आज जिनराज गिरि-राज चढ, दरस लहि सरस संसार दरिये । धरस धर मगन जिन भक्ति पूरण अही, दुरति गति दुखसे दूर टरिये ॥ शि० ॥ ३ ॥ अष्ट नवनिधि सदा सिद्धि सुद मायमें, पूज कर शक्ति निज भक्ति भरिये । बाल प्रतिपाल सुविशाल गुण गावतां, धार भव वारिनिधि पार तरिये ॥ शि० ॥ ४ ॥ इति श्रीसमेत शिखर गिरि पूजा संपूर्णम ॥

॥ अथ पूजा विधि ॥

नालेर नंग २२, अंगलूहणा २१, रोकडी

थापना वास्ते ६), टके निछरावल वास्ते २१, मिठाई, चावल, वगेरे सब चीज २१ अष्ट प्रकारीकी लेणी । धजा नंग २० ॥ १) ज्ञान पूजाको विस्तार विधि गुरु मुखसे जाणना ॥



अथ बालचंद्रोपाध्याय कृत

पंचकल्याणक पूजा।

—*※*—

प्रथम च्यवन कल्याणक पूजा।

अष्टद्रव्यकी थाली लेकर खड़ा रहे॥

॥ दोहा॥

ज्योतिरूप जगदीशनु, अदभुत रूप अनूप।
प्रवचन प्रभुता प्रगट पण,जय जय ज्योति सरूप॥
चौवीसे जिनवर नमी, पंच कल्याणक रूप।
शासन नायक वरणवु, दर्शन ज्ञान सरूप॥
कल्याणक ओच्छव करे, इंद्रादिक जे देव।
ते भावे भवि जन करे, श्रीजिनवरनी सेव॥

॥ राग सरपदो॥

जोति सकल जगदीसनी। हां रे जगदी-

सनी ए ॥ चार निक्षेप प्रमाण । नाम जिनादिक जिन कह्या, आगम मांहि प्रधान ॥ ३ ॥

॥ गाथा ॥

नाम जिणाजिण नामा, ठवण जिणाओ जिणंद पडिमाओ । दव्वजिणा जिण जीवा, भावजिणा समवसरणत्था ॥ १ ॥

॥ ढाल तेहीज ॥

विन कारण कारज नहीं, हां रे का० ए ॥ ए सब लोक प्रसिद्ध । भाव निक्षेप प्रधानता, कारज रूपे सिद्ध ॥ १ ॥ विण आकारे द्रव्यनो ॥ हां ॥ द्र० ए ॥ न हुवे थापन सिद्ध ॥ नाम विना आकारनो, प्रगटपणो नवि वद्ध ॥ २ ॥ नामादिक कारण सही ॥ हां० ॥ का० ए ॥ इन विन भाव न होय । भाव विशुद्ध जिनतणी, पूज करो सहु कोय ॥ ३ ॥ व्यवहारे लहे ॥ हां० ॥ नि० ए ॥ कारण

कारज होय ॥ पावड शाला क्रम करी, सौध चढे सहु कोय ॥ ४ ॥

॥ दोहा ॥

ज्ञानकला कलितातमा, लोकालोक प्रकाश ।
व्यापकभावे थिर रह्यो, शुद्ध विकास विलास ॥

(राग सारंग)

हांहो रे देवा जोति सकल जिनराजनी, सहु लोकालोक प्रकाश ए। हांहो रे देवा राजत श्रीजिनराजजी, वाणी प्रवचन शुभवास ए ॥ १ ॥ हांहो रे देवा मात नमु नित शारदा, गुरु पंच कल्याणक सार ए। हांहो रे देवा तीर्थकरना वरणवु, गुण शास्त्र परंपर धार ए ॥ २ ॥

॥ दोहा ॥

शासन नायक जग धणी, तिभुवन पति परमेस ।
पर उपगारी प्रभु तणा, गुण गावत सहु वेस ॥

॥ ढाल ॥

(तेहीज) हांहो रे देवा वीश थानक करि सेवना, बांध्युं जिन नाम प्रधान ए ॥ हांहो० दिव्य अमर सुख अनुभवे, पाये प्रभु पुराय प्रमाण ए ॥१॥ हांहो० निरमलतर वरज्ञानना, धारक कारक शुभयोग ए ॥ हांहो० ॥ शब्द वरण रस गंधना, शुभ फरस तणा वर भोग ए ॥ २ ॥ हांहो० शाश्वत सिद्धायण तणा, नित उत्सव करत सुरंग ए ॥ हांहो० बालचंद्र पाठक कहे, नित मंगल होय सुचंग ए ॥ ३ ॥

॥ दोहा ॥

पुराय पूर्वभव प्रभु तणो, प्रगट्यो प्रगट प्रभाव ॥
सुरकुमरी नित प्रति करे, नाटक नव नव भाव ॥

(पूर्व मुख सावनं ॥ ए देशी)

शुद्ध निज दर्शने, करिय गुणकर्षना, जिनचरण सेवना विविधकारी । हे अर्ईयो

विविधकारी ॥ ए आं० ॥ एक जिन धर्ममय परम लय लीनता, दीनता सकल तज, रज निवारी ॥ हे अई० ॥ र० ॥ १ ॥ आत्मगुण अंतरातमपणे वृत्तिता, तजिय बहिरात्मजिन आण धारी ॥ हे अई० ॥ आं० ॥ २ ॥ शुद्ध सम्यक्तगुण, संपदा निज लही, सहीय शुद्ध धर्म रुचि, जोति झगमग जगे, चन्द्रिका भासभासित करारी ॥ हे अ० ॥ भा० ॥ ४ ॥ प्रवर कुल शुद्ध, राजन्य प्रमुखे मुदा, आयुकर्र बंध, नर भव सुधारी ॥ हे अ० ॥ न० ॥ गर्भ अवतार, निज मात उदरे लहे, वाल शुभ लग्न शुभ योगचारी ॥ हे अ० ॥ शु० ॥५॥ सुपारी ५ पान ५ पुष्प अतर चढावे ॥

॥ दोहा ॥

शुभदिन शुभ मुहूरत घड़ी, शुभ ऊंचे ग्रेह चार।
देवलोक चवि प्रभु लहे, मात उदर अवतार ॥

सुंदरवर प्रासाद महि, मध्यनिशा जिनमात ।
स्वप्न देख सुख सेजमें, जागत अति हरखात ॥

॥ राग काफी ॥

जिनजी भजो भवि प्यारा, याते आनंद अधिक अपारा ॥ जि० ॥ १ ॥ सुख सेज सूती जिन माता, देखे सुपना मन भाता। चित्त हरखित हुय तिण वारा ॥ जि० ॥ ५ ॥ गज वृषभसिंह सुरदेवी, वर पुष्प चंद्र रवि सेवी। ध्वज कुंभ पदमसर सारा ॥ जि० ॥ ३ ॥ वर क्षीर समुद्र विमानं, रयणोच्चय मेरु समानं निर्धूम पावक सुखकारा ॥ जि० ॥ ४ ॥ शिव धान्य मंगल श्रियकारी, जाणी अर्थ हृदय क्रमधारी, शुभसूचक पुण्य संभारा ॥ जि० ॥ ५ ॥ सुंदर बर सखियन संगे, करिधर्म जागरिका रंगे, निशि शेष गई तिणवारा ॥ जि० ॥ ६ ॥ ए भणी एकज पुष्पमाला चढ़ावियें ।

॥ दोहा ॥

परम पुरुप परमातमा, भावि भगवन भास।
प्रवचन प्रगटकरण प्रभु, पुराय तणे सुप्रकाश॥

(पूजा सतर प्रकारी, ए देशी,)

आज आनंद वधाई, भई त्रिभुवनमें चौद सुपन सूचित गुण जेहनां, अवतरे माता उदरनमें ॥ आ० ॥ १ ॥ नृपति सदन वहु सपन शास्त्र विद अर्थ विचार करि निज मनमें। पुत्र रतन फल वदत नृपति कुल, परम कल्याण होत जननमें ॥ आ० ॥२॥ प्रफुल्लित हरख भरत हिय उलसत, जिन जननी तात सुनी तनमें। दिन दिन वढत प्रवर धन जन मन, अधिक उत्साह घर घरनमें ॥ आ० ॥३॥ रूप्य रजत मणि माणक मोतियें, शंख प्रवाल शिल वरसनमें। धनद सुरइंद्र हुकमते, भरत भंडार नृपसदनमें ॥ आ० ॥ ४ ॥ ताल कंसाल

मधु वीणा बजावत, गीत गात तननमें । दुन्दुभि मुरज मृदंग घन गरजत, गरज गरज मानु जैसे घनमें ॥ आ० ॥ ५ ॥ सुर नर लोक माहें अधिक उत्साह वाह, निशिदिन होत जन जनपदनमें । इन्द्र इन्द्राणी नृप दोहद पूरत, मनोरथ होत जो जो मातु मनमें ॥ आ० ॥ ६ ॥ परम कल्याण शुभ योग संयोग भयो, शुभ घरि शुभ ग्रह शुभ दिनमें । वरण सके न ताहि कवि अवसरको, आनंद छायो तीन भुवनमें ॥ आ० ॥ ७ ॥ इति श्रीच्यवनककल्याणके ॐ ह्रीं श्री परमात्मभ्योऽनंतानंतज्ञान शक्तिभ्यो जन्मजरा मृत्यु निवारणकारणेभ्यो अष्ट द्रव्यं यजामहे स्वाहा॥ इति प्रथम च्यवन पूजा ॥१॥

हीरा चढ़ावे पुष्प गुलावजल वर्षा करे ।

अथ द्वितीय जन्मकल्याणक पूजा ।

॥ दोहा ॥

प्रगटे पतित पावन प्रभु, अधम उधारण काज ।
नृपकुलमाहें अवतरे, त्रिभुवनके शिरताज ॥

॥ राग सोरठी ॥

आज अधिक आनंद भयो रे वाला, आज सुरंग वधाई रे । जगपति जिनवर जनमिया रे वाला, सुरवधु वन मिल आई रे ॥ १ ॥ आछो आज आनंद घन उलट्यो रे देवा, दिशि कुमरी हरखाई रे । आछो दशदिश निर्मलता थई रे देवा, फूल रही वनराई रे ॥ २ ॥ फूले फूली वनलता रे वाला, मधु मालती महकाई रे । शालि प्रमुख सहु धान्यनी रे वाला, निपजी राशि सवाई रे ॥ ३ ॥ नारकी जीवे नरकमां रे वाला, क्षण इक शाता पाई रे । सब जन

मन हरषित भयो रे वाला, भूमंडल छवि छाई रे ॥ ४ ॥ शुभमुहूरत घड़ी रे वाला, शुभ ग्रह शुभ पल आई रे । जन्म थयो जिनराजनो रे वाला, प्रगटी पूर्व पुरायाई रे ॥ ५ ॥ ए भणी पुष्प तथा गुलाबजलनी वर्षा करे ।

॥ सोरठो ॥

त्रिभुवन मांहि सुरुप, जन्म समय जिनराजने ।
वाजित्र वाजत अनूप, सुखर कृत उत्सव हुवे ॥

(रावण निरत बणावे हो भलां ए देशी)

आज आनंद बधाई रे, देखो आज आनंद बधाई । जय जय कार भयोजिन शासन, सुरकुमरी हरखाई रे ॥ दे० ॥ १ ॥ घरघर गोरी मंगल गावत, मोतियन चोक पुराई रे । ईति उपद्रव भय सब भागे, खार समुद्र जाई रे ॥ दे० ॥ २ ॥ आज सनाथ भयो हे त्रिभुवन, जिनवर जनम्या भाई रे । आज अधिक जग

हर्ष भयो हे, धनधन मात कहाई रे ॥दे०॥३॥ जन्म महोत्सव करननकुं सब, दिशिकुमरी मिल आई रे। करि कदली गृह सुन्दर रचना, पावन कर भर लाई रे ॥ दे० ॥ ४ ॥ जिन-जननी जिनवरपय प्रणमी, मस्तक आण चढ़ाई रे। करि स्नान करावत उभय शरीरे, तेला-भ्यंग कराई रे ॥ दे० ॥ ५ ॥ भूषण भूपित अंग विलेपन, देव दूष्य पहराई रे। दर्प्पण ले मंगल घट थापी, चामर जुगल ढुलाई रे ॥दे० ॥ ६ ॥ पंच वरनके फूल सुगंधित, सुरकुमरी वरसाई रे। होम करी रक्षा पोटलिया, जिन-वर करे वधाई रे ॥ दे० ॥ ७ ॥ मंगल गावत जिन जग जननी, निजगृह माहे ठाई रे। सफल भयो निज आतम जाणी, दिशिकुमरी घर आई रे ॥ दे० ॥ ८ ॥ स्वस्तिक करे चमर ढोले इन्द्र वणी २ ॥

॥ दोहा ॥

अतिहि अधिक उत्सव करी, गई कुमरी निज थान।
इन्द्र हवे उत्सव करे, जन्म समय जिन जान ॥

॥ राग गोडी ॥

(सांझ समे जिन वंदो ए देशी) आज उच्छव मन भायो रे देखो माई । जगजननी जिन जायो रे ॥ दे० ॥ आ० ॥ त्रिभुवन माहि प्रकाश भयो है, इन्द्रासन थररायो रे ॥ दे० ॥ आ० ॥१॥ अवधिज्ञान धर जिनजीकुं निरखत, हृदय कमल उलसायो रे। हरिणगमेषी इन्द्र हुकमसे, घंट सुघोष घुरायो रे ॥ दे० ॥ आ० ॥ २ ॥ बनठन नव नव रूप मनोहर, सुरस-मुदय मन भायो रे। सुरकुमरी वरभूषण भूषित, अद्‌भुत रूप बनायो रे ॥ दे० ॥ आ० ॥ ३ ॥ नव नव यानवाहन रच सुरवर, सुर-गिरि शिखरे आयो रे। चौसठ इंद्र करत अति

उत्सव, मेघ घटा घररायो रे ॥ दे० ॥ आ० ॥ ४ ॥ काली घटा वरदामनी चमकत, दादुर मोर सुहायो रे। अतिहि सुगंध पुष्पव्रज वर सत, मोतियनकी भर लायो रे ॥ दे० ॥ आ० ॥ ५ ॥ इति ॥

(प्रभु प्रतिमा पंचतीर्थी अंदरथी लावे, सिंहासण उपर स्थापन करे, फिर स्नात्र पूजा करावे)

॥ दोहा ॥

शक्र जाय जिनवर गृहे, जिनजननी जिनराज।
प्रणमी श्रीमहाराजनी, भक्ति करे सुरराज ॥

(सुंदर नेम पियारो माई

ए देशी,) तुम सुत प्रान पियारो माई तु० ॥ ए आंकणी। जगवत्सल जगनायक निरख्यो, धन धन भाग्य हमारो माई ॥ तु० ॥ १ ॥ धन जगजननी तुम सुत जायो, अधम

उधारण हारो माई। धन धन प्रगट भयो जगदिनकर, त्रिभुवन तारन हारो माई ॥ तु० ॥ २ ॥ सब सुर चाहत स्नात्र करनकुं, सुरगिरि प्रभुजी पधारो माई ॥ कर जोडी प्रभु अरज करत हुं, सब जनकाज सुधारो माई ॥ तु० ॥ ३ ॥ मैं सेवक तुम सुत चरननको, आयो हूं अधिकारो माई ॥ इंद्र कहे पदपंकज प्रणमुं, भय सब दूर निवारो माई ॥ तु० ॥ ४ ॥ पांच रूप करी प्रभुजीकुं लावे, पांडुगवन सिणगारो माई ॥ चोसठ इंद्र महोत्सव करी हे, पूजन अष्ट प्रकारो माई ॥ तु० ॥५॥

॥ दोहा ॥

पंचरूप कर इंद्र जिन, पंडुग वन ले जाय।
सिंहासन उछरंग गहि, स्नात्र करे सुरराय ॥

(इतनो गुमान न करियें, छबीली राधा हे ए देशी) जिनजीको पूजन करिये, हां रे

हो रंगीले श्रावक हो ॥ जि० ॥ द्रव्य भाव वेहु भेदें करतां, भव सागर निस्तरिये ॥ जि० ॥ १ ॥ गंगाजल चंदन पुष्पादिक, अडविध मंगल धरिये ॥ भाव विशुद्धे जिन गुण गावो, नाटक नवनव करिये ॥ जि० ॥ २ ॥ बहुविध प्रभुकी भक्ति रचावत, वर्नन करनन तरिये। वो आनंद देखे सोई जाने, दुःख सब दूरे हरिये ॥ जि० ॥ ३ ॥ पूजन करी प्रभुकु घर ल्यावे, आतम पुण्यें भरिये ॥ करी अठाई महोत्सव आवत, सब सुर मिल निज घरिये ॥ जि० ॥ ४ ॥ ॐ ह्रीं श्रीप० अ० ज० जन्मकल्याणके अष्टद्रव्याणि यजामहे स्वाहा ॥ २ ॥

धजा अष्ट मंगल चढावे।

अथ तृतीय दीक्षा कल्याणक पूजा।

॥ दोहा ॥

सुरकृत उत्सव अति अधिक, भये अनंतर प्रात।

मात पिता उत्सव करे, निज कुलक्रम विख्यात ॥
पार नही धनको जहां, अगणित भरे भंडार ।
दान मनोवंछित दिये, दयावंत दातार ॥

(गात्र लूहे० ए देशी)

जिन जन्म महोत्सव रंगशु रे, भये प्रात करत उछरंगशु रे ॥ हां रे देवा रंगशु । नृप-उत्सव करे अति घणो ॥ १ ॥ पुत्रजनम कुल-क्रम करे रे देवा, जगजस्स कीरत विस्तरे ॥वि०॥ घरघर उत्सव रंगमें ॥ २ ॥ सुरवधु मिल सुर-संगशु रे ॥ सु० ॥ करे नाटक नवनव रंग शु रे ॥ रंग० ॥ हांरे बाललीला जिन संगमें ॥३॥ रूपातिशयें शोभता रे ॥ दे० ॥ इंद्रादिक मन मोहता रे वाला ॥ मो० ॥ विद्याप्रभु विस्मय-वता ॥ ४ ॥ परमप्रमोद प्रवीणता रे देवा, सुर क्रीडा अतिशयवता रे ॥ अ० ॥ वैक्रिय [illegible] शु रे ॥ ५ ॥ गावतगीत उमंगशु

रे देवा, वाजित्र नवनव रंगशुं रे ॥ र० ॥ वजि
त अहोनिशि संगशुं रे ॥ ६ ॥

॥ दोहा ॥

तीन ज्ञान अतिशय धरे, अतिशय कला सुधाम।
सुर सुसंग क्रीडातिशय, अतिशय गुण अभिराम॥

(पंच वरणी अंगी रची, ए देशी)

वरणी न जाती रे ॥ व० ॥ जिनजीकी
शोभा व० ॥ चित्रजात नर सुरासुर निरखत,
ओर न एसो जग भाती ॥ जि० ॥ १ ॥ अनं
त गुणों करि शोभित प्रभुजी, शुद्ध संवेग सोवन
जाती । शिव मारग शुध सेवत निशिदिन,
पुण्यपुरुष पायाराती ॥ जि० ॥ २ ॥ पर उप-
गारी परम पुरुषोत्तम, अद्‌भुत अनुभव रस
पाती । कामभोग वर त्रिवुध प्रकारे, प्राप्त भये
सुख संघाती ॥ जि० ॥ ३ ॥ जसु जस ख्यात
प्रगट त्रिभुवनमें, कुल राजन्योत्तम जाती ।

कारी ॥ क्या० ॥ २ ॥ नवलोकांतिक देव सवे मिल, हाजर होय सुचारी। जयजय मंगल शब्द उचारत, धर्म गहो सुखकारी ॥ क्या० ॥ ३ ॥ दान धर्म शिवमारग प्रभुजी, प्रगट कियो हितकारी। दाता दीनदयाल जगतमें, जिन समको सुविचारी ॥ क्या० ॥ ४ ॥ इन्द्रादिक सुरसुरी नर नारी, दीक्षोत्सव अति भारी। गान दान सनमान तान करी, प्रभुगति सकल सुप्यारी क्या० ॥ ५ ॥ तजि संसार लियो शुभयोगे, संयम सत्तर प्रकारी। मन पर्यव वर ज्ञान भयो तब, विहरत परउपगारी ॥ क्या० ॥ ॐ ह्रीं र० अ० ज० श्री० दी० अष्टद्रव्यं यजामहे स्वाहा ॥ ३ ॥

अथ, चतुर्थ केवलज्ञान, कल्याणक पूजा ।

॥ दोहा ॥

गजवर अश्व समूह रथ, पायक कोडाकोड ।
जिन दीक्षा महोत्सव समें, हाजर होय तिन ठोर ॥
इंद्रादिक सुर असुर नर, प्रभु कुं करे प्रणाम ।
नरनारी आशीष दे, जय जय त्रिभुवन साम ॥
तजि आश्रव संवर गहे, संयम भाव निधान ।
सव संसार तजी करी, भए अणगार प्रधान ॥

(तेरी पूजा वणी तेरसमें, ए देशी)

धारी धारी धारी, जिन भए संयमपट धारी ॥ चरन कमल वलिहारी ॥ जि० ॥ पंच सुमतिधर तीन गुपतिकर, सव जीवां सुखकारी ॥ जि० ॥ १ ॥ जीत लिये उपसर्ग परिसह, शत्रुसेना गणभारी । भयभैरवते निःप्रकंप भए, निर्मम निरहंकारी ॥ जि० ॥ २ ॥ क्रोध मान माया लोभ अकिंचन, आकिंचन ब्रह्म-

संयमने शुभ योगे, अनुत्तर गुणगणाधारा। पाठक विजयविमल कहे प्रभुके, चरणकमल वलिहारा रे ॥ सो० ॥ जा० ॥ ४ ॥

॥ दोहा ॥

घनघाती चउ कर्मको, क्षयकर क्षायिकज्ञान।
दर्शन लोकालोकको, प्रगटप्रकाशी भान ॥

॥ राग ठुमरी ॥

(वस मन खितरीकुंडके तीर भजले श्रीमहावीर, ए देशी) पायो प्रभु भवजलनिधिको तीर, अतुलीबल वडवीर ॥ पा० ॥ अनुत्तर जाके सुमति गुपति हे, अनुत्तरक्षमा सुधीर ॥ पा० ॥ १ ॥ मार्दव आर्दव अनुत्तर जाके, रोक्यो आश्रव नीर। संवरजोग क्रिया सब विणठी, रही ईर्यासुख सीर ॥पा०॥ २॥ घनघाती सब शत्रुविनाशी, केवलज्ञान सुधीर। पूरन दर्शन प्रकट भयो हे, निज आतम गुण-

चीर ॥पा०॥३॥ प्रातिहार्य अतिशय जिन संपद भयो अनुकूल समीर । दे उपदेश भविक प्रतिबोधत, वचनातिशय गंभीर ॥ पा० ॥ ४ ॥ लोकालोक प्रकाश परम गुरु, कहि न शके मति सीर । पाठक विजयविमल परमातम, प्रभुता परम सुधीर ॥ पा० ॥ ५ ॥ ॐ ह्रीं परम० अ० ज० श्री म० केवलज्ञानकल्याणके अष्टद्रव्याणि यजामहे स्वाहा इति ॥ ॥ वासक्षेप चढ़ावे ॥

अथ पंचम निर्वाण कल्याणक पूजा ।

॥ दोहा ॥

इंद्रादिक सुर सब मिली, तीन भुवन शिरदार ।
सब दरसो सर्वज्ञनी, महिमा करे अपार ॥
(अतुल विमल मिल्या अखंड गुणें भिल्या ए देशी)

अतुल विमल प्रभुता प्रभुकी लख, चोसठ इन्द्र उच्छव धरे ए। चार प्रकारके सुर सब

मिल कर, समवसरण रचना करे ए ॥अ०॥१॥ कनक रत्न प्रकारे, कनक रत्नमणि कुंगरे ए। वृक्षअशोग सिहासन शोभित, तीन छत्र चामर ढुरे ए ॥ अ० ॥ २ ॥ दुंदुभि प्रमुख श्रवणसुख दायक, गहिर सुरे वाजित्र घुरे ए। जानुप्रमाण पुष्पघन वरसे जलज थलज विकसित सुरे ए ॥ अ०॥३ ॥ साधु साधवी श्रावक श्राविका, इन्द्रादिक सुरी सुर वरे ए। नरनारी तिर्यग विद्याधर द्वादशविध परिषद भरे ए ॥ अ० ॥ ४ ॥ भविजन धर्म तणो उपदेशे जोजन गामि मधुरगिरे ए। प्रतिबोधत चोमुख श्रीजिनवर, निज निज भाषा अनुसरे ए ॥अ०॥५॥ ए भणीने वासक्षेप कीजे ॥

॥ दोहा ॥

प्रगटपणे प्रभुकी प्रभा, प्रगट प्रकाशक रूप।
प्रभुता परमरसम, परमातम पद भूप ॥

(विगरी कौन सुधारे नाथ विन वि० ए देशी)

भूमंडल भविकमल विबोधन, दिनकर सम जिनराया रे ॥ भू० ॥ अणहुंते इक कोडि अमरपद, पंकज भमर लुभाया रे ॥ भू० ॥१॥ ग्राम नगर पुर पट्टण विचरत, त्रिभुवननाथ कहा रे। चोसठ इन्द्र करे जाकी सेवा, तन मनसे लयलाया रे ॥ भू० ॥ २ ॥ इन्द्राणी मिल मंगल गावत, मोतियन चोक पुराया रे। सर्व जीव हितकारक प्रभुजी, निःश्रेयस सुखदाया रे ॥ भू० ॥ ३ ॥ भवजल निधि निर्यामक जगगुरु, तारक सकल कहाया रे। शासन नायक संघसकलकुं, प्रवचन तत्व सुनाया रे ॥ भू० ॥ ४ ॥ अनंतगुणाकर प्रभुजीकी महिमा, वरने को कविराया रे। पर उपकारक प्रभुके पाठक, विजयविमल गुण गाया रे ॥ भू० ॥ ५ ॥ ए भणीने वासक्षेप करे।

॥ दोहा ॥

निज निज भाषा भविकजन तृपत न सुनतहि श्रोत
मीठी अमृत सम गिरा, समझत श्रम नहीं होत॥

॥ राग कहरवो ॥

जिनंदवा मिल गयो रे, दोय चरणु पर-ध्यान अचल मन गहगह्यो रे ॥ जि० ॥ ज्ञायक ज्ञेय अनंतनो रे, सब दरसी जिनचंद । सुरतरु सम जग वाल हो रे, सेवत सुरनर इन्द । धर्म में लहहो रे ॥ दो० ॥१॥ चौदम गुण थानक करे रे, आतम वीर्य अनंत । योग निरोधनकी क्रिया रे, सूखम बादरकंत । सब टर गयो रे, सरव संवरभयो रे ॥ दो० ॥ २ ॥ घन कर आदेशनो रे, कर शैलेशी करण। कर्म सकल दूरे किया रे, जीर्णवस्त्र जिम पर्ण, मुक्ति पद जिम लह्यो रे ॥ दो० ॥३॥ ज्ञान क्रिया कर कर्मकरी क्षय कर पर अनुबंध । निजआतम रूपे लह्यो

रे, शाश्वत सुख संबंध, सिद्ध शुद्ध बुध थयो रे ॥ दो० ॥ ४ ॥

॥ दोहा ॥

अकल अगोचर अगमगम,सिद्ध भए सुविशुद्ध ॥
परमातम प्रभु परमपद चिदानंद अविरुद्ध ॥

॥ राग धन्या श्री ॥

(तेजतरणि मुखराजे, ए देशी)

तेज तरणिसम राजे, प्रभुजीको ॥ ते० ॥ एक समय प्रभु ऊरध गतिकर, मुक्तिमहल सुविराजे ॥ प्र० ॥ ते० ॥ १ ॥ सादि अनंत सदा शाश्वतपद, अनंत महासुख छाजे। अचल अगोचर प्रभु अविनाशी, सिद्ध सरूप विराजे ॥ प्र० ॥ ते० ॥ २ ॥ निरुपाधिक निरुपम सुख प्रभुके कहि न सके कविराजे। अजर अमर अक्षय अविकारी, सकलानंद सहाजे ॥ प्र० ॥ते०॥३॥

अथ सुगणचंद्रोपाध्याय कृत
पांच ज्ञानकी पूजा।

—*※※*—

प्रथम मति ज्ञान अष्टद्रव्य पूजा॥

॥ दोहा ॥

वर्त्तमान जिनचंदकूं नमन करी मनरंग।
पूज रचूं भवि प्रेमसे, सांभलजो उछरंग॥
पांच ज्ञान जिनवर कह्या, मति श्रुत अवधि प्रधान।
मनपर्यव केवल वडो, दिनकर जोत समान॥
ज्ञान वडो संसारमें, गुरु बिन ज्ञान न होय।
ज्ञान सहित गुरु वंदिये, सुचि कर तनमन दोय॥
वीर जिणंद वखाणियो, नंदी सूत्र मझार।
भव्य सदा अनुभव धरो, पावो सुख श्रीकार॥
निरमल गंगोदक भरी, कंचन कलश उदार।
श्रुत सागर पूजन करो, भाव धरी भविसार॥

॥ ढाल ॥

(चित हरख धरी, अनुभव रंगे वीस परम पद सेवीये। ए चाल) मति अतहि भलो, सकल विमल गुण आगर, भवि जन सेविये। ए आंकणी ॥ ए मतिज्ञान सदा नमिये, निज पाप सकल दूरे गमिये, मन सुद्ध करी निज गुण रमिये ॥ म० ॥ १ ॥ व्यंजन कर अवग्रह इम जाणो, चउ भेद करी मनमें आणो, इम भाखे श्रीजिन जगभाणो ॥ म० ॥ २ ॥ अरथे करी भेद जिणंद आखे, पण इंद्री मनकर प्रभु दाखे, मुनि मानस ते दिलमें राखे ॥ म० ॥ ३ ॥ वलि पट् विध भेद इहां कहिये, पट् भेद अपाय करी लहिये, पट् विध धारणा भवि सरदहिये ॥ म० ॥ ४ ॥ इम भेद अठाइस भवि धारो, इम भाखे जिनवर सुखकारो, निश्चय व्यवहार ते अवधारो ॥ म० ॥ ५ ॥

वलि रतन जडित कंचन कलशे, भवि पूजन कर तनमन उलसे, चिदरूप अनूप सदा विलसे ॥ म० ॥ ६ ॥ ए ज्ञान दिवाकर सम कहिये, इम सुमति कहे दिलमें गहिये, एज्ञानथी अनुपम सुख लहिये ॥ म० ॥ ७ ॥ ॐ ह्रीं परमा० श्रीमतिज्ञानधारकेभ्योः जलं यजामहे स्वाहा ॥ १ ॥

अथ वीजी श्रुतज्ञान अष्टद्रव्य पूजा ॥

॥ दोहा ॥

श्रुतधारक पूजन करो, भाव धरी मनरंग ।
उपगारी सिर सेहरो, भाखे जिन उछरंग ॥
मृगमद चंदन वाससें, जो पूजे श्रुतअंग ।
अनुभव सुद्ध प्रगटे सही, पावे खौख्य अभंग ॥

॥ ढाल ॥

नाभिजीके नंदाजीसे लग्या मेरा नेहरा,

ना० ॥ ए चाल) श्रुत ज्ञानकी पूजाकर सीखो भवि सेहरा ॥ श्रु० ॥ विनय सहित गुरु वंदन करके, लुल२ पायनमें गुरु देवरा ॥ श्रु०॥ तीन तीस आसातन टाली, भगत करे भवि गुण-गण गहेरा श्रु० ॥ १ ॥ श्रीगुरु ज्ञान अखंडित वरते, ज्यूं पावस रुत वरसे महेरा ॥ श्रु० ॥ दश विध विनय करे श्रुत गुरुको, सेवे ज्युं अलि फूलने नेहरा ॥ श्रु० ॥ २ ॥ गुण मणि रयण भरयो श्रुतसागर, देख दरस हरखावे मेरा जियरा ॥ श्रु० ॥ पूछन वायन वलि वलि करिये, सीझे वंछित ज्युं सुनि सेवरा ॥ श्रु०॥ ३ ॥ गुरु भगती जेसी गणधरकी, वीर कहे सुण गौतम सेहरा ॥ श्रु० ॥ एसे गुरु भक्तिसे सीखो ए श्रुतज्ञान सकल सुख देहरा ॥श्रु०॥ २ ॥ गुरु विन और न को उपगारी, श्रीगुरुदेव नित गुणमणि जेहरा ॥ श्र० ॥ एसे गुरुकी

कीरत करके, सुमति धरो दिलमें गुण गेहरा ॥ श्रु० ॥ ५ ॥

॥ ढाल बीजी ॥

(नित नमिये थिवर मुनीसरा, नि० ए चाल) नित नमिये श्रुतधर मुनिवरा, नि० अरथे श्रीजिनराज वखाणे, सूत्रे श्रीगुरु गणधरा ॥ नि० ॥ १ ॥ मेघधुनी जिम भवि जन सुणके, हरखे ज्यूं केकीवरा । अंग इग्यारे गुणमणि धारक, बारे उपांग उजागरा ॥ नि० जगत उद्धारण तूं परमेसर, सकल विमल गुण आगरा, छेद पयन्ना नंदी सेवो, मूल सूत्र भवि गुणकरा ॥ नि० ॥ ३ ॥ श्रुतधारी गौतम गुरु दीवो, पूरवचौद विद्याधरा । पहिलो आचारांग वखाणे, चरण करण गुण सुखकरा ॥ नि०॥४॥ दूजो सुयगडांग सुणीजे, सेहतिसय तेसठ खरा। तीजो ठांणांग सूत्र विराजे, मुगता पाप मिटे-

परा ॥ नि० ॥ ५ ॥ चौथो समवायांग सुहावे, अर्थ अनेक करीवरा ॥ पांचमे भगवइ महिमा करा ॥ नि० ॥ ८ ॥ प्रश्नविचार कह्या जिन दशमें, अंगुष्टादिक सुभ तरा ॥ अंग इग्यारमें दाखे, कर्मविपाक विविध परा ॥ नि० ॥ ६ ॥ बारमो अंग जिणंद वखाणे, अतिशय गुण विद्याधरा । अक्षर श्रुत वलि सन्नी कहिये, सम्यक् भेद अधिक तरा ॥ नि० ॥१०॥ सादि भेद सपरजव लहिये, गम्यक् भेद सुणो नरा ॥ अंग प्रविष्ट कहे जिनवरजी, भेद चौद सुणजो खरा ॥ नि० ॥ ११ ॥ इम जो श्रीश्रुत ज्ञान आराधे, भाव भगत कर बहु परा । सुमति कहे गुरु ज्ञान आराधो, वंछित पूरण सुरतरा ॥ नि० ॥ १२ ॥ ॐ ह्रीं श्रीपर० श्रीश्रुतज्ञान-धारकेभ्यः अष्टद्रव्यं , यजामहे स्वाहा ॥ इति चंदन पूजा ॥ २ ॥

कीरत करके, सुमति धरो दिलमें गुण गेहरा ॥ श्रु० ॥ ५ ॥

॥ ढाल बीजी ॥

(नित नमिये थिवर मुनीसरा, नि० ए चाल) नित नमिये श्रुतधर मुनिवरा, नि० अरथे श्रीजिनराज वखाणे, सूत्रे श्रीगुरु गणधरा ॥ नि० ॥ १ ॥ मेघधुनी जिम भवि जन सुणके, हरखे ज्यूं केकीवरा । अंग इग्यारे गुणमणि धारक, बारे उपांग उजागरा ॥ नि० जगत उद्धारण तूं परमेसर, सकल विमल गुण आगरा, छेद पयन्ना नंदी सेवो, मूल सूत्र भवि गुणाकरा ॥ नि० ॥ ३ ॥ श्रुतधारी गौतम गुरु दीवो, पूरवचौद विद्याधरा । पहिलो आचारांग वखाणे, चरण करण गुण सुखकरा ॥ नि०॥४॥ दूजो सुयगडांग सुणीजे, मेहतिसय तेसठ खरा। ... ठाणांग सूत्र विराजे, सुणता पाप मिटे-

परा ॥ नि० ॥ ५ ॥ चौथो समवायांग सुहावे, अर्थ अनेक करीवरा ॥ पांचमे भगवइ महिमा करा ॥ नि० ॥ ८ ॥ प्रश्नविचार कह्या जिन दशमें, अंगुष्टादिक सुभ तरा ॥ अंग इग्यारमें दाखे, कर्मविपाक विविध परा ॥ नि० ॥ ६ ॥ बारमो अंग जिणंद वखाणे, अतिशय गुण विद्याधरा । अक्षर श्रुत वलि सन्नी कहिये, सम्यक् भेद अधिक तरा ॥ नि० ॥१०॥ सादि भेद सपरजव लहिये, गम्यक् भेद सुणो नरा ॥ अंग प्रविष्ट कहे जिनवरजी, भेद चौद सुणजो खरा ॥ नि० ॥ ११ ॥ इम जो श्रीश्रुत ज्ञान आराधे, भाव भगत कर वहु परा । सुमति कहे गुरु ज्ञान आराधो, वंछित पूरण सुरतरा ॥ नि० ॥ १२ ॥ ॐ ह्रीं श्रीपर० श्रीश्रुतज्ञान-धारकेभ्यः अष्टद्रव्यं यजामहे स्वाहा ॥ इति चंदन पूजा ॥ २ ॥

अथ तीजी अवधिज्ञान अष्टद्रव्य पूजा ॥

॥ दोहा ॥

अगर सेल्हारस धूपसे, पूजो अवधि उदार ।
बोध बीज निरमल हुवे, प्रगटे सुख्ख अपार ॥
नवल नगीने सारखो, ज्ञान वडो संसार ।
सुरनर पूजे भावसुं, महियल ज्ञान उदार ॥

॥ ढाल ॥

(निरमल हुय भज ले प्रभु प्यारा, सब । ए चाल) अवधिज्ञानको पूजन कर ले, ज्यूं पावो भव पार सलूणा ॥ अ० ॥ ज्ञान वडो सुख देगा जगतमें, उपगारी सिरदार सलूणा ॥ अ० ॥ भेद असंख कहे जिनवरजी, मूल भेद षट सार, स०॥अ०॥ वद्धमाण हियमाण वखाणे, सूत्रे श्रीगणधार, स० ॥ अ० ॥ २ ॥ सुरनर तिरी सहु अवधि प्रमाणे । देखे द्रव्य उदार ॥ स० ॥ अवधि सहित जिनवर सहु आवे । थाये

जग भरतार ॥ स० ॥ ३ ॥ ज्ञान विना नर-
मूढ कहावे। ढोर समो अवतार ॥ स० ॥
ज्ञान दिपक सम जग मांहे। दिन दिन
अधिकी सार ॥ स० ॥ ४ ॥ मूलमंत्र जग
वस करवाको, एहीज परम आधार, स० ॥
अ० ॥ ५ ॥ ज्ञाननी पूजा अहनिस करिये,
लीजे वंछित सार, स० ॥ ज्ञानने वंदी बोध
उपावो, करम कलंक निवार, स० ॥ अ० ॥६॥
इत्यादिक महिमा भवि सुणके, पूजो अवधि
उदार, स० ॥ सुमति कहे भवि भाव धरीने,
सेवो ज्ञान अपार स० ॥ अ० ॥ ७ ॥ ॐ ह्रीं
परमा० श्रीअवधिज्ञान धारकेभ्यः अष्टद्रव्यं
यजामहे स्वाहा ॥ इति तीजी पूजा ॥ ३ ॥

अथ चौथी मनपर्यवज्ञान अष्टद्रव्य पूजा ॥

॥ दोहा ॥

केतकी दमणो मालती, अवर गुलाब सुगंध ।
भाव धरी पूजन करो, हरे कुमति दुरगंध ॥
मनपर्यव पूजा करो, विविध कुसुम मनरंग,
महके परिमल चिहुं दिसे पामे सुजस अभंग ॥ २ ॥

॥ ढाल ॥

(सेत्रु जानो वासी प्यारो लागे मोरा राजिंदा ॥ से० ॥ ए चाल) जिनजीरो ज्ञान सुहावे मोरा राजिंदा ॥ जि० ॥ जिन जीरो ज्ञान अनंतो सोहे, कहता पार न आवे ॥ म्हा० जि० ॥ १ ॥ सन्नी नर मन परजय जाणे ते मुनि ज्ञान कहावे ॥म्हा०॥ विपुलमतिने ऋजु- मति कहिये, ए दुय भेद लहावे ॥ म्हा० जि० ॥ २ ॥ अंगुल अढिए ऊणो देखे, ते ऋजु नाम

धरावे ॥ म्हा० ॥ संपूरण मानव मन जाणे, तेही विपुल कहावे ॥ म्हा० ॥ मनगत भाव सकल ए भाषे, ते चोथो मन भावे ॥ म्हा० ॥ एहनी महिमा नित २ कीजे, तिम भवि नाम धरावे ॥ म्हा० जि० ॥ ४ ॥ जगजीवन जग-लोचन, कहिये,मुनिजन ए नित ध्यावे ॥म्हा०॥ दीक्षा ले जिनवर उपगारी, चोथो ज्ञान उपावे ॥ म्हा० जि० ॥ ५ ॥ मनका संसा दूर करत हे, सुणतां आण मनावे ॥ म्हा० ॥ तन मन सुचिकर पूजन करले, जनम जनम सुख पावें ॥ म्हा० जि० ॥ ६ ॥ विविध कुसुमसे पूजा करतां, बोध लता उपजावे ॥ म्हा० ॥ सुमति कहे भवि ज्ञान आराधो, श्रीजिन देव बतावे ॥ म्हा० जि० ॥ ७ ॥ ॐ ह्रीं श्रीपरमा० श्री मनपर्यवज्ञान धारकेभ्यः अष्टद्रव्यं यजामहे स्वाहा ॥ इति चोथी पूजा ॥ ४ ॥

अथ पांचमी केवलज्ञान अष्टद्रव्य पूजा ॥

॥ दोहा ॥

प्रभु पूजा ए पंचमी, पंचमज्ञान प्रधान ।
सकल भाव दीपक सदा, पूजो केवल ज्ञान ॥
फल दीपक अक्षत धरी, नैवेद्य सुरभि उदार ।
भाव धरी पूजन करो, पावो ज्ञान अपार ॥

॥ ढाल ॥

(तुम बिन दीनानाथ दयानिध कोन खबर ले० ॥ ए चाल) तूं चिदरूप अनूप जिनेसर, दरसणकी बलिहारी रे ॥ तु० ॥ निरमल केवल पूरण प्रगट्यो, लोकालोक विहारी रे । केवल ज्ञान अनंत विराजे, ज्ञायक भाव विचारी रे ॥ तु० ॥ १ ॥ ज्योत सरूपी जगदानंदी, अनुपम शिव सुख धारी रे । जगत भाव परकाशक भानू, निज गुण रूप सुधारी रे ॥ तु०

॥ २ ॥ सकल विमल गुण धारक जगमें, सेवत सब नरनारी रे, आतम सुद्ध सरूपी भविजन गुण मणिरयण भंडारी रे ॥ तुं० ॥३॥ केवल केवल ज्ञान विराजे, दूजो भेद न धारी रे। आतम भावे भविजन सेवो, जगजीवन हितकारी रे ॥ तुं० ॥ ४ ॥ अवर ज्ञान सब देश कहावे, केवल सरव विहारी रे। सर्व प्रदेशी जिनवर भाखे, साखे श्रीगणधारी रे ॥ तुं॥५॥ भए अयोगी गुणके धारक, श्रेणी चढ़ी सुखकारी रे। अष्ट कर्मदल दूर करीने, परमातम पद धारी रे ॥ तुं० ॥ ६ ॥ एसे ज्ञान वडो जगमांहे, सेवो शुद्ध आचारी रे। सुमति कहे भविजन सुभ भावे, पूजो कर इकतारी रे ॥ तुं० ॥ ७ ॥ फल अक्षत दीपक नैवेद्यसे, पूजो ज्ञान-उदारी रे। पूजत अनुभव सत्ता प्रगटे, विलसे सुख ब्रह्मचारी रे ॥ तु० ॥ ८ ॥ ॐ ह्रीं

श्रीपरमात्म० श्रीकेवल ज्ञानधारकेभ्यः अष्ट-द्रव्यं यजामहे स्वाहा ॥

अथ कलश ॥

—*—

(केसरियाने जिहाजको लोक तिरायो । ए चाल) असरण सरण कहायो, प्रभु थारो ज्ञान अनंत सुहायो ॥अ०॥ मति श्रुति अवधि अने मनपर्यव, केवल अधिक कहायो । भव्य सकल उपगार करत हे, श्रीजिनराज बतायो ॥ प्र० ॥ १ ॥ खरतर गच्छपति चंद्रसूरीश्वर, राजत राज सवायो । तेजपूंज रवि शशि सम सोहे, देखत दिल उलसायो ॥ प्र० ॥ २ ॥ प्रीतसागर गणि शिष्य, सुवाचक, अमृत धर्म सुपायो । शिष्य क्षमाकल्याण सुपाठक, सदगुरु

नाम धरायो ॥ प्र० ॥ ३ ॥ धरम विशाल दयाल जगतमें, ज्ञान दिवाकर ध्यायो। ज्ञान कियानो मूल जे कहीये। तत्वरसण मन भायो ॥ प्र० ॥ ४ ॥ बीकानेर नगर अति सुंदर, संघ सकल सुख दायो। शुद्धमति जिन धर्म आराधक, भगत करे मुनिरायो ॥ प्र० ॥ ५ ॥ उगणीसे चालीसे वरसे, आसु सुदि वरदायो। ज्ञान विजयकारक सव जगमें, नित प्रति होत सहायो ॥ प्र० ॥ ५ ॥ सुमति सदा जिन राज कृपासे, ज्ञान अधिक जस गायो। कुशल निधान मोहन मुनि भावे, ज्ञान तणो गुण गायो ॥ प्र० ॥ ७ ॥ इति श्री पांचज्ञान पूजा संपूर्णम् ॥

अथ पूजाविधि ॥

बाजोट पर पांच साथिया कीजे, उस पर चावलोका साथिया करणा, रु० ५) श्रीफल ५

थापना करणी, पीछे स्नात्र पढाणी, नालेर नंग ७, अंगलूहणा ३, चावल मिठाई, फल, बदाम, सुपारी, पुष्प मोली, कुंकुम, केशर, अंगो, घी, रोक टका वगैरह, विशेष विधि गुरु मुखसे जाणना ।



अथ पण्डित साधूकीर्ति मुनि कृत।

सत्तर भेदी पूजा प्रारंभ।

—*※※*—

॥ दोहा ॥

भाव भले भगवंतनी, पूजा सतरे प्रकार।
परसिध कीधी द्रौपदी, अंग छठे अधिकार॥

॥ राग सरपदो ॥

जोति सकल जग जागति ए सरसति समरि सुभिंद। सतर सुविधि पूजा तणो, पभणिस परमानंद॥ १॥

॥ गाथा ॥

न्हवण विलेवण वत्थजुग, गंधारुहणं च पुप्फरोहणयं। मालारोहण वन्नय, चुन्न पडागाय आभरणे॥ १॥ मालकलावं सघरं, पुप्फं पगरं च

अट्ठ गुण मंगलयं । धूव उक्खेवो गीयय, नट्टं वज्जं तहा भणियं ॥ २ ॥

॥ दोहा ॥

सतर सुविध पूजापवर, ज्ञाता अंगमभ्कार ।
द्रुपदसुता द्रौपदी परे, करिये विधि विस्तार ॥

॥ राग देशाख ॥

पूर्व सुख सावनं, करि दर्शन पावनं, अहत धोती धरी, उचित मानो । विहित मुख कोश के, खोरगंधोदके, सुभृत मणिकलश करि, विविध वानी । नमिवि जिनपुंगवं, लोम हच्छेनवं करिय वा वारि वारि । भणिय कुसुमांजली, कलशविधि मन रली, न्हवति जिन इंद्र जिम, तिम अगारी ॥ १ ॥

॥ दोहा ॥

पहिली पूजा साचवे, श्रावक शुभपरिणाम ।
शुचि पखाल तनु जिन तणी, करे सुकृत हितकाम ॥

परमानंद पीयूष रस, न्हवण मुगति सोपान।
धरम रूप तरु सींचवा, जलधर धार समान॥

॥ राग सारंग तथा मल्हार॥

पूजा सतर प्रकारी, सुणियोरे मेरे जिनवरकी। परमानंद अति छल्योरी सुधारस, तपत बुझी मेरे तनकी हो॥ पू०॥ १॥ प्रभुकुं विलोकि नमि जतन प्रमार्जित, करत पखाल शुचिधार विनकी हो। न्हवण प्रथम निजवृजिन पुलावत, पंककुं वरप जैसे घनकी हो॥ पू०॥ २॥ तरणि तरुण भव सिंधु तरणकी, मंजरी संपदफल वरधनकी। शिवपुर पंथ दिखावण दीपो, धूसरी आपद वेल मरदनकी हो॥ पू०॥३॥ सकल कुशल रंग मिल्योरी सुमतिसंग, जागी सुदशा शुभ मेरे दिनकी। कहे साधु कीरत सारंग भरि, करतां आस फली मेरे मनकी हो॥ पू०॥ ३॥

अथ द्वितीय विलेपन पूजा ।

॥ राग रामगिरी ॥

गात्र लूहे जिन मनरंगसु हो देवा । गा० सखरसुधूपित वाससु हां रे देवा वाससु । गंधक सायसु मेलिये, नंदन चंदन चंद मेलीये रे देवा ॥ नं० ॥ मांहे मृगमद कुंकुम भेलीय, कर लीये रयणपिंगाणी कचोलीये ॥ १ ॥ पग जानु कर खंधे सिरे रे, भाल कंठ उर उदरंतरे । दुख हरे हां रे देवा सुख करे, तिलक नवे अंग कीजिये । दूजी पूजा अनुसरे श्रावक, हरि विरचे जिम सुरगिरे । तिम करे जिणपर जन मन रंजीये ॥ २ ॥

॥ राग ललितमां ॥

॥ दोहा ॥

करहुं विलेपन सुखसदन, श्रीजिनचंद शरीर ।
तिलक नवे अंग पूजतां, लहेभवोदधि तीर ॥१॥

मिटे ताप तसु देहको, परम शिशिरता संग ।
चित्त खेद सवि उपसमे, सुखम समरसी रंग ॥

॥ राग बिलावल ॥

विलेपन कीजे जिनवर अंगे । जिनवर अंग सुगंधे ॥ वि० ॥ कुंकुम चंदन मृगमद यक्त-कर्द्दम, अगरमिश्रित मनरंगे ॥ वि० ॥ १ ॥ पग जानू कर खंधे सिर, भालकंठ उर उदरंतर संग । विलुपति अघ मेरो करत विलेपन, तपत वुझति जिम अंगे ॥ वि० ॥ २ ॥ नवअंग नव नव तिलक करत ही, मिलत नवे निधि चंगे, जैसे गंगतरंगे ॥ वि० ॥ ३ ॥

अथ तृतीय वस्त्रयुगल पूजा ॥

॥ दोहा ॥

वसनयुगल उज्वल विमल, आरोपे जिन अंग ।
लाभ ज्ञान दर्शन लहे, पूजा तृतीय प्रसंग ॥

चरण सेवाकी ॥ पूजा० ॥ २ ॥ कुंकुम चंदन-वासे पूजीये, जिनराज तत्ता थेई । चतुर्गति दुख गौरी चतुर्थी धनकी ॥ पूजा ॥ ३ ॥

अथ पंचम पुष्पारोहण पूजा ॥

॥ दोहा ॥

मन विकसे तिम विकसतां, पुष्प अनेक प्रकार ।
प्रभुपूजा ए पंचमी, पंचमि गति दातार ॥

॥ राग कामोद ॥

चंपक केतकी मालती ए, कुंद किरण मच कुंद । सोवन जाइ जूईका, बिउलसिरी अरविंद ॥ १ ॥ जिनवर चरण उवरि धरे ए, मुकुलित कुसुम अनेक । शिव रमणीसे वर वरे, विधि जिन पूज विवेक ॥ २ ॥

॥ राग कानडो ॥

सोहेरी माई मन मोहेरो वरणे । विविध कुसुम जिनचरणे ॥ सो० ॥ विकसी हसी जंपे

साहिबकुं, राखि प्रभ हम सरणे ॥ सो० ॥१॥
पंचमि पूज कुसुम मुकुलितकी, पंचविषय दुख
हरणे ॥ सो० ॥ कहे साधुकीरती भगति भग-
वंतकी, भविक नरा सुख करणे ॥ सो० ॥ २ ॥

अथ छठी मालारोहण पूजा ॥

॥ राग आशावरीमां दोहा ॥

छठी पूजा ए छती, महा सुरभि पुफमाल।
गुण गूंथी थापे गले, जेम टले दुखजाल ॥

॥ राग रामग्री गुर्जरी ॥

हे नाग पुन्नाग मंदार नव मालिका, हे
मल्लिकासोग पारिधे कली ए। हे मरुक दम-
णक बकुल तिलक वासंतिका, हे लाल गुल्लाल
पाडल भिली ए। हे जासुमण मोगरा वेउला
मालती, हे पंच वरणे गुंथी मालती ए॥ हे
माल जिन कंठ पीठे ठवी लहलहे, हे जाय
संताप सहु पालती ए॥ १ ॥

॥ राग आशावरी ॥

देखी दामा कंठ जिन अधिक एधति नंदे चकोरकु देखि देखि जिम चंदे । पंचविध वरण रची कुसुमाको जैसी, रयणावलि सुहमंदे ॥ दे० ॥ १ ॥ छठ्ठी रे तोडर पूजा तब डार धूजे, सब अरिजन हुइ हुइ छंदे । कहे साधु-कीरती सकल आतमा सुख, भगति भगति जेय जिण वंदे ॥ दे० ॥ २ ॥ इति ॥

अथ सप्तम वर्णपूजा प्रारम्भ ॥

॥ दोहा ॥

केतकि चंपक केवडा, शोभे तेम सुगात ।
चाढो जिम चढतां हुवे, सातमिये सुखशात ॥

॥ राग केदारो गोडी ॥

कुंकुम चर्चित विविध पंच वरणका, कुसुमसु हे । कुंद गुल्लाबशु चंपको दमणको, जासुसु ए । सातमी पूजमें अंगि, असंकिये ए ।

अंगि आसंक मिश माननी मुगति, आलिं-
गिये ए ॥ १ ॥

॥ राग भैरवी ॥

पंच वरणी अंगी रचि, कुसुमनी जाती। फूलनकी जाती ॥ पं० ॥ कुंद मचकुंद गुलाब शिरोमणी, कर करणी सोवनजाती ॥ पं० ॥ दमणक मरुक पाडल अरविंदो, अंस जूई चेउल वाती ॥पं०॥१॥ पारधि चरण कल्हार मंदारो, विण पट कूल वनी भांती ॥ पं० ॥ सुरनर किन्नर रमणी गाती, भैरव कुगति व्रतती दाती ॥ पं० ॥ २ ॥

अथ अष्टम गंधवटी पूजा ॥

॥ दोहा ॥

सोरठ राग सुहामणी, मुखे न मेलो जाय।
ज्यूं ज्यूं रात गलंतियां, त्यूं त्यूं मीठी थाय ॥

सोरठ थारा देशमें, गढ मोटो गिरनार ।
नित उठ यादव वांदस्यां, स्वामी नेम कुमार ॥
जो हूंती चंपो विरख, वा गिरनार पहार ।
फूलन हार गुंथावती, चढती नेम कुमार ॥
राजमती गिरवर चढ़ी, उभी करे पूकार ।
स्वामी अजहु न बाहुड़े, मो मन प्राण आधार ॥
रे संसारी प्राणिया, चढ्यो न गढ गिरनार ।
जैनधर्म पायो नहीं, गयो जमारो हार ॥
धन वा राणी राजी मती, धन वे नेम कुमार ।
शील संयमता आदरी, पहोतां भवजल पार ॥
दया गुणोंकी वेलडी, दया गुणोंकी खान ।
अनंत जीव मुगते गया, दया तणे परमान ॥
जगमें तीरथ दोइ वड़ा, सेत्रुंजो गिरनार ।
इण गिर रिषभ समोसरे, उण गिर नेम कुमार ॥

॥ दोहा सोरठो रागमां ॥

अगर सेलारस सार, सुमति पूजा

आठमी । गंधवटी घनसार, लावो जिम तनु भावशुं ॥ १ ॥

॥ राग सोरठ.॥

कुंद किरण शशि उजलो जी देवा, पावन घन घन सारोजी । आछो सुरभि शिखर मृग नाभिजा जी देवा, चुन्न रोहण अधिकारोजी ॥ आ० ॥ वस्तु सुगंध जव मोरियो जी देवा, अशुभ करम चूरीजेजी ॥ आ० ॥ आंगण सुरतरु मोरियोजी देवा, तव कुमति जन खीजें जी (पाठांतरे ॥ तव सुमती जन रीजें जी) १ ॥

॥ राग सामेरी ॥

पूजोरी माई, जिनवर अंगसुगंधे ॥ जि० ॥ पू० ॥ गंधवटी घनसार उदारे, गोत्र तीर्थंकर बांधे ॥ पू० ॥ १ ॥ आठमी पूजा अगर सेला रस, लावे जिन तनु रागे । धार कपूर

भाव घन बरषत, सामेरी मति जागे ॥ पू० ॥ २ ॥

अथ नवमो ध्वज पूजा ॥

॥ दोहा ॥

मन मोहन धर मस्तके, सूहव गीत समूल ।
दीजे तीन प्रदक्षिणा, नवमी पूज अमूल ॥

(राग मेघ गोडीमां वस्तु छंद)

सहस जोयण हेममय दंड, युतपताक पांचे वरण । घुम घुमंत घूघरी वाजे, मृदु समीर लहके गयण ॥ जाण कुमति दल सयल भांजे, सुरपति जिम विरचे धजा ए, नवमी पूज सुरंग ॥ तिण परे श्रावक ध्वज वहन, आपे दान अभंग ॥ १ ॥

॥ राग नट्टनारायण ॥

जिनराजको ध्वज मोहना, ध्वज मोहना रे ध्वज मोहना ॥ जि० ॥ मोहन सुगरु अधि-

वासियो, करि पंच सवद त्रिप्रदत्तिणा । सधव वधू शिरसोहणा ॥ जि० ॥ १ ॥ भांति वसन पांच वरण वन्यो री, विध करि ध्वजको रोहणां ॥ साधु भणत नवमी पूजा, नव पाप नियाणां खोहणां ॥ शिव मंदिरकुं अधिरोहण, जन मोह्यो नट्टनारायणा ॥ जि० ॥ २ ॥

अथ दशमी आभरण पूजा ।

॥ राग केदारामां दोहा ॥

शिर सोहे जिनवर तणे, रयण मुकुट झलकंत । तिलक भाल अंगद भुजा, श्रवण कुंडल अतिकंत ॥ १ ॥ दशमी पूज आभरण-की, रचना यथा अनेक। सुरपति प्रभु अंगे रचे, तिम श्रावक सुविवेक ॥ २ ॥

॥ राग अधरस वा गुंडमल्हार ॥

पांच पिरोजा नीलू लसणीया, मोती माणक लाल लसणीया, हीरा सोहे रे, मन

मोहे रे धुनी चुन्नीपुलक करकेतना, जातरूप सुभग अंक अंजना, मन मोहे रे ॥ १ ॥ मौलि मुकुट रयणे जड्यो, काने कुंडल हारे अति जुगते जुड्यो । उरहारू रे मनवारू रे ॥ २ ॥ भाल तिलक बांहे अंगदा आभरण दशमी पूजा मुदा । सुखकारू रे, दुखहारू रे ॥ ३ ॥

॥ राग केदारो ॥

प्रभु शिर सोहे, मुकुट मणि रयणे जड्यो। अंगद बांह तिलक भालस्थल, येहु नीको कोन घड्यो ॥ प्र० ॥१॥ श्रवण कुंडल शशि तरणि मंडल जीपे, सुरतरुसम अलंकर्यो । दुखके दार चमर सिंहासण, छत्र शिर उवरि धर्यो, अलंकृत उचित वर्यो ॥ २ ॥

अथ एकादश फूलघर पूजा ॥

॥ दोहा ॥

फूलघरो अति शोभतो, फूंदे लहके फूल।
महके परिमल महमहा, ग्यारमी पूजा अमूल॥

॥ राग रामग्री कौतकिया ॥

कोज अंकोल रायवेलि नव मालिका, कुंद मचकुंद वर विचिकलू हांरे ॥ अइ० वि० ए ॥ तिलक दमण कंदलं मोगरा, परिमलं कोमला पारिध पाडलू हांरे अ० पा० ए ॥ प्रमुख कुसुमैं रचे त्रिभुवनकुं रुचै, कुसुम गेहे विच तोरणूं, हांरे अ०तो० ए ॥ गुच्छ चंद्रोदयं झुंवक उन्नयं, जालिका गोख चित चोरणूं हांरे अ० चो० ए ॥ १ ॥

॥ राग रामग्री ॥

मेरो मन मोह्यो माईरी, फूलघर आणंद भिले। असत उसत दाम वधारी मनोहर,

देखत तबही सब दुरित खिले ॥ फू० ॥ १ ॥
कुसुम मंडप थंभगुच्छ चन्द्रोदय, कोरणि चारु
विनाण सझे । इग्यारमी पूज भणीहे रामगिरी
विबुध विमाण जै सेति पुरि भजे ॥ फू० ॥२॥
इति फूलघर पूजा ॥

अथ द्वादश पुष्पवर्षा पूजा ।

॥ दोहा मलार रागमां ॥

वरषे बारमी पूजमें, कुसुम वादलिया फूल ।
हरण ताप सवि लोकको, जानु समा बहु मूल ॥

(राग भीम मलार गुंढमिश्र, देशी कडखानी) मेघ वरसे भरी, पुष्फ बादल करी, जानु परिमाण करि कुसुम पगरं । पंच वरणे बन्यो, विकच अनुक्रम चणयो, अधो-वृते नहीं पाड पसरं ॥ मे० ॥ १ ॥ वास महके मिले, भमर भमरी मिले, सरस रसरंग तिण दुख निवारी । जिनप आगे करे, सुरप जिम

सुख वरे, बारमी पूज तिण पर अगारी ॥ मे० ॥ २ ॥

॥ राग भीम मलार ॥

पुष्फ बादलीया वरसे सुसमां ॥अहो पू०॥ योजन अशुचिहर वरसे गंधोदक, मनोहर जानु समा ॥ पु० ॥ १ ॥ गमन आगमनकी पीर नहीं तसु,इह जिनको अतिशय सुगुणे । गुंजत गुंजत मधुकर इम भणे,मधुर वचन जिन गुण थुणे ।पु०॥२॥ कुसुम सुपरि सेवा जो करे, तसु पीर नहीं सुमणे । समवसरण पंचवरण अधो-वृंत, विबुध रचे सुमना ॥ पु० ॥ ३ ॥ बारमी पूज भविक तिम करे, कुसुम विकसी हसी उच्चरे । तसु भीम बंधण अधरा हुवे, जे करे जै जै जिन नमा ॥ पु० ॥ ४ ॥

अथ त्रयोदशाष्ट मंगलिक पूजा ।

॥ दोहा राग कल्याणमें ॥

तेरमी पूजा अवसरे, मंगल अष्ट विधान ।
युगति रचे सुमते सही, परमानन्द निधान ॥

॥ राग वसंत ॥

अतुल विमल मिल्या, अखंड गुणे भिल्या सालि रजत तणा तंदुला ए । श्लषण समाजकं, पंच विध वर्णकं, चन्द्रकिरण जैसा ऊजला ए ॥ मेलि मंगल लिखे, सयल मंगल अखे, जिनप आगे सुथानक धरे ए ॥ तेरमी पूजविधि ते रमी मन मेरे, अष्ट मंगल अष्ट सिद्धि करे ए ॥ अतुल० ॥ १ ॥

॥ राग कल्याण ॥

हांहो पूजा बणी तेरी रसमें । अष्ट मंगल लिखे, कुशल निधान हे, तेज तरणके रसमें ॥ हा० ॥१॥ दर्प्पण भद्रासण नंद्यावर्त्त पूर्ण

कुंभ, मच्छयुग श्रीवच्छ तसुमें। वर्धमान स्व-स्तिक पूज मंगलकी, आनंद कल्याण सुखरसमें ॥ हा० ॥ २ ॥

अथ चतुर्दश धूप पूजा।

॥ दोहा ॥

गंधवटी मृगमद अगर, सेलारस घनसार।
धरि प्रभु आगल धूपणा, चउदमि अरचा सार॥

॥ राग वेलावल ॥

कृष्णागर कपूरचूर, सोगंध पांच पूर, कुंदरुक्क सेलारस सार, गंधवटी घनसार गंधवटी घनसार। चंदन मृगमदा रस भेलिये, श्रीवास धूप दशांग, अंबर सुरभि बहु द्रव्य मेलिये॥ मेलिय दंड कनक मंड, धूपधाणुं कर धरे। भक्तियुक्ति धूप करंति रोग सोग

॥ १ ॥

॥ राग मालवी गौडी ॥

सब अरति मथनमुदार धूपं, करति गंध रसाल रे ॥ देवा, कर० ॥ धाम धूमा वलीय धूसर, कलुष पातिक गाल रे ॥ देवा, स० ॥१॥ ऊर्ध्वगति सूचंति भविकुं, मघ मघे करनाल रे ॥ दे० ॥ चौदमी वासंग पूजा, दीये रयण विशाल रे। आरती मंगल माल रे, मालवी गौडी ताल रे ॥ स० ॥ २ ॥

अथ पंचदश गीत पूजा ।

॥ दोहा ॥

कंठ भले अलाप करी, गावो जिनगुण गीत ।
भावो अधिकी भावना, पनरमी पूजा प्रीत ॥

॥ श्री राग ॥

आर्यावृतं ॥ यद्दनंतकेवल, मनंत फल मस्ति जैनगुणगानं। गुणवर्णतानवाद्यै, र्मात्राभाषालयेयुक्तं ॥१॥ सप्त स्वरसंगीतैः, स्था-

नैर्जंयतादि तालकरणैश्च॥ चंचुरचारी चारै, गीतं गानं सुपीयूषं॥ २॥

॥ श्री राग॥

जिनगुण गानं श्रुत अमृतं, तार मंद्रादि अनाहत तानं, केवल जिम तिम फल अमृतं॥ जि०॥ १॥ विवुध कुमार कुमारी आलापे, मुरज उपंग नाद जनितं। पाठ प्रबंध धुआप्रतिमानं, आयति छंद सुरति सुमितं॥२॥ शब्द-समान रच्यो त्रिभुवनकुं, सुर न गावे जिन चरितं। ससस्वर मान शिवश्री गीतं, पनरमी पूजा हरे दुरितं॥ जि०॥

अथ षोडस नृत्य पूजा।

॥ दोहा॥

कर जोडी नाटक करे, सजि सुन्दर सिणगार।
भव नाटक ते नवि भमे, सोलमी पूजा सार॥

॥ राग शुद्ध नट्ट ॥

काव्यं । शार्दूलविक्रीडितं वृत्तं । भावा दिप्पिमणा सुचारु चरणा, सुंपुन्न चंदाननाः, सम्पिस्मासम रूप वेस वयसो, मत्तेभ कुंभ-थ्थणा लावराणा सगुणा पिकस्स रवई, रागाइ आलावणा कुम्मारी कुमरावि जन पुरश्रो, नच्च ंति सिंगारणा ॥१॥

॥ गद्यं ॥

तएणं ते अठसयं कुमार कुमरीओ सूरि-याभेणं देवेणं संदिठा रंग मंडवे पविठा जिणं नमंता गायंता वायंता नच्चंतित्ति ॥

॥ रागनट्ट त्रिगुण ॥

नाचंति कुमार कुमरी, द्रागडदि तत्ता थेइ, द्रागडदि द्रागडदो थोंग थोंगनि मुखे तत्ता थेइ ॥ ना० ॥ १ ॥ वेणु वीणा मुरज वाजे, सोलही सिणगार साजे, तन न्नन्नानेइ,

घणण घसाण घूघरी घमके, रणणंणणंणं ना नेइ ॥ ना० ॥ २ ॥ कसंती कंचुकी तरुणी, मंजरी झंकार करणी, सोभंति कुमरी, हस्तकृत हावादि भावे, ददंति भमरी ॥ ना० ॥ ३ ॥ सोलमी नाटक पूजा, सुरीयाभे रावण कीनी । सुगंध तत्त त्थेई, जिनप भगते भविक लीणा, आणंद तत्ता थेई ॥ ना० ॥ ४ ॥

अथ सप्तदशमी वाजित्र पूजा ।

सुरमद्दल कंसालो, महुरय मद्दल सुवज्जए पणवो । सुरनारि नंदि तूरो, पभणेइ तूं नंद जिणनाहो ॥

॥ दोहा ॥

ततघन सुपिरे आनघे, वाजित्र चउविध वाय ।
भगत भली भगवंतनी, सतरमी ए सुखदाय ॥

॥ राग मधु माधवी ॥

तूं नंदियानंदि बोलत नंदी, चरण कमल

जसु जगत्रय वंदी । ज्ञान निर्मल वावन मुख वेदी, तिवलि बोले रंग अतिही आनंदी ॥ तूं ॥ १ ॥ भेरी गयण वाजंती, कुमति त्याजंती । प्रभु भक्ति पसाये अधिक गाजंती, सेवे जैन जयणावंती, जैनशासन, जयवंत नंदंती । उदय-सिंघ परिपरिय वदन्ती ॥ तू० ॥ २ ॥ सेवि भविक मधु माधन फेरी, भवनी फेरी नप्पभणां ती, कहे साधु सतरमी पूज वाजित्र सव, मंगल मधुर ध्वुनिकर कहंती ॥ तू० ॥ १७ ॥

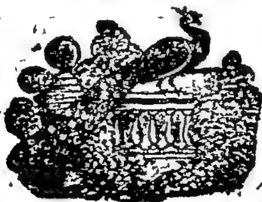
अथ कलश ॥

—※※—

राग धन्याश्री ॥

भवि तुं भण गुण जिनके सब दिन, तेज तरणि सुख राजे । कवित शतक आठ थुणत शक्रस्तव, थुय २ रंगे हम छाजे ॥ भ० ॥१॥

अणहिलपुर शांति शिवसुख दाई, नवनिधि सिद्धि आवाजे। सतर सुपूज सुविधि श्रावककी भणी मैं भगति हित काजे ॥ भ० ॥ २ ॥ श्री जिनचन्द्रसूरि खरतर पति, धरम वचन तसु राजे। संवत सोल अढार श्रावण धुरि, पंचमी दिवस समाजे ॥ भ० ॥ ३ ॥ दया कलश गुरु अमरमाणिक्यवर, तासु पसाय सुविधि हुइ गाजे। कहे साधु कीरति करत जिन संस्तव, शिवलीला सुख साजे ॥ भ० ॥ ४ ॥ इति सतरहभेदी पूजा संपूर्ण ॥



अथ पण्डित कपूरचन्दजी कृत ।

बारहव्रतकी पूजा ।

—*✻*—

प्रथम समकित व्रत षट्करण जल पूजा ।

॥ दोहा ॥

व्रत बारे आदर करी, पूजा तेर विधान ।
आनन्दादिक संग्रही, सप्तम अंग प्रधान ॥

॥ ढाल ॥

(राग सरपदो, ज्योति सकल जग जागती हां रे अइयो जा० इस चालमें) ज्योति विमल जग झलहले, हां रे अइयो झलहले ए सासनपति जिनचन्द, त्रिकरण प्रणमन करि नमूं ॥ वीर चरण अरविंद ॥ वि० ॥ १ ॥ न्हवण १ विलेपन २ वासनी ३ हां रे० मालं ४ दीवंच ५ धूवणीयं ६, फूल ७, सुमंगल ८

तंदुला ६ ए ॥ हां रे० ॥ अमसं दप्पणंच १० नैवज्जं ११, ॥ ५ ॥ ध्वज १२ फलवृंद १३ ए मेलिये, हां रे अ० ॥ पूजा त्रिदश प्रकार । व्रत अहि अणुव्रत अरचोये, जगपति जगदाधार ॥३॥ शिवतरु सुख फल स्वादनो, हां रे अ० । दायक गुणमणि खाण ॥ कुशल कला कलना थको, प्रगटे परम निधान ॥ ४ ॥ इति ॥

॥ दोहा ॥

समकित व्रत धुर आदरो, मेटो निजमन भर्म ।
दूर थको ए परिहरो, कुगुरु कुदेव कुधर्म ॥

॥ राग रामगिरी ॥

(गात्र लूहे, जिन मनरंगसूं रे देवा, ए चाल) धुर समकित त्रितमें धरो रे वाल्हा, भव भय दुखदल परिहरो । परिहरो, हां रे वाल्हा प० । शिव रमणी वर लीजिये ॥ १ ॥ वीर जिनेसर वंदिये रे वाल्हा, जिम चिरकाल

सु नंदिये । नंदिये, हां रे वाल्हा नं० ॥ कुमति दुरति सर कीजिये ॥ २ ॥ चरण करण गुण-मणि निलो रे वाल्हा, जगजन तारण सिर-तिलो ॥ सिरतिलो, हां रे० सि० ॥ सदगुरु चरण नमीजिये ॥ ३ ॥ जिन भाषित श्रुत सागरो रे वाल्हा, भेद विविधविधि आगरो ॥ आगरो, हां रे० आ० ॥ श्रवण जुगल-कर पीजीए ॥ ४ जिनसासन जिन धर्मनो रे वाल्हा, राग दलन वसु कर्मनो, हां रे० क० ॥ कुशल कला रस पीजिये ॥ ५ ॥ इति ॥

॥ दोहा ॥

सकल करम दल मल हरण, पूजा धुर जलधार ।
जगनायक जिन तुंगनी, उर धर भगति उदार ॥

॥ राग झिंझोटी ॥

(निरमल होय भज ले प्रभु प्यारा, सब०

ए चाल) जिनवर न्हवण करण सुखदाई, छूटे जनम मरण दुखदाई ॥ जि० ॥ ए टेर ॥ खीरजलधि गंगोदक मांहे, अमल कमल रस सरस मिलाई ॥ जि० ॥ १ ॥ निरमल शकल परम तीरथ जल, मणि जुत कंचन कलस भराई ॥ जि० ॥ २ ॥ या जिनजीके न्हवण करणते, भव भय दुखदल दाघ समाई ॥ जि० ॥ ३ ॥ द्रव्य भाव विध समकित फरसे, ते नर नरक निगोद न जाई ॥ जि० ॥ ४ ॥ याते भविजनके दुख नासे, कपूर कहे सुर होत सहाई ॥ जि० ॥ ५ ॥ इति ॥

॥ काव्य ॥

परमलंकुल संस्कृतश्रद्धया । स्नपति यो जिनवेंद्रमिमंमुदा ॥ भवभयं परिमुच्य सदोदयं । भजति सिद्धिपदं सुखसागरं ॥१॥ ॐ ह्रीं श्रीपरमात्मने अनं० जन्म० श्रीमत्समकितव्रत

दृढकरणाय जलं यजामहे स्वाहा ॥ इति प्रथम समकित व्रत पूजा ॥ १ ॥

अथ दूजी प्राणातिपात विरमणव्रत चंदन केशर विलेपन पूजा ।

॥ दोहा ॥

प्राणातिपात विरमण व्रते, छंडो जंतु विनास ।
इणसु शिवसुख ना मिले, हिंसा दोष विलास ॥

तिहां दर्शनाण सुचरण अणसण । धीर वोरज जानिये ॥ तप इम सकलना सिद्धि गजवसु, पणतिवार सुठानिये ॥ अतिचार वार निवार इणपर, तुर्य गुणपद मानिये । गुण पंचमो तिम थूल प्रत्या, ख्यान मान वखाणिये ॥ १ ॥

॥ राग वरवो ॥

(हमकूं छांड चले वन माधो, राधा, ए चाल) भविजन जीवदया व्रत धारो, सम परिणाम संभारो रे ॥ भ० ॥ टेर ॥ अपराधी

पिण जीव न हणिये, भाखे जगदाधारो रे। देशविरत धरने पिण भाख्यो, विन अपराध न मारो रे ॥ भ० ॥ १ ॥ गो गज सेंधव महिसादिकने, बंधन वध न विचारो रे। कीजे न अवयव छेद त्रिकाले, जलचारो नविसारो रे ॥ भ० ॥ २ ॥ कीडी कुंजरने सम गिणिये, सुख दुख जोग विकारो रे। थावर त्रस पंचेंद्रियादिकनो, होय रहिये हितकारो रे ॥ भ० ॥ ३ ॥ ए व्रत रत चित जे नर जगमें, सुर नर गण मन प्यारो रे। तेहिज लोभ महाभट मार्यो, सकल करम परिवारो रे ॥ भ० ॥ ४ ॥ थूल थकी ए व्रत जे पाले, ते लहे शिवसुख सारो रे। कुशलकला कलनाकर प्रगटे, अनुभव रंग उदारो रे ॥ भ० ॥ ५ ॥ इति ॥

॥ दोहा ॥

भव दव दाघ सवे मिटे, पूजो परम दयाल ।
भावठ भंजन सुखकरण, दूजी पूज रसाल ॥

॥ राग घाटो ॥

(जिनराज नाम तेरा, होरा० ए चाल)

पूजो जिनेंद्र प्यारा, हो तारो रे विकट भव-जलमें ॥ हो० ॥ टेर ॥ हां रे घनसार चंदन वासे, हां रे सुकुरंगनाभिजासे । दुख नारकादि नासे ॥ हो ता० ॥ १ ॥ घसि सूकडादि भेली, नाना सुगंध मेली, सिव देन कर्म ठेली ॥ हो ता० ॥ २ ॥ पूजा सदा रचावो, परभाव नापि भावो, शिव सौधसों सभावो ॥ हो ता० ॥३॥ विधि भाव द्रव्य धारो, हिंसा कुदोष वारो, प्रभु नाम ना विसारो ॥ हो ता० ॥ ४ ॥ तज पाप भार फंदा, शिवशंकलाप कंदा, साधे कपूर-२ ॥ हो तारो रे० ॥ ५ ॥ इति ॥

॥ काव्य ॥

अमलकुंकुमकेशरमिश्रितै । जिनपतेर्जुग-पादसमर्चनं ॥ हरति सो भवदाघमसंधरा रचति-यो घनसार सुचंदनैः ॥१॥ ॐ ह्रीँ श्रीपरमा० प्राणातिपात विरमणव्रत ग्रहणाय चंदनं यजा-महे स्वाहा ॥ इति प्राणातिपात विरमण व्रत पूजा ॥ २ ॥

अथ तीसरी मृषावादविरमण व्रत वासक्षेप पूजा ।

॥ दोहा ॥

मृषात्याग व्रत दूसरो, कुमति दुरति हरनार ।
भविजन भावे आदरे, शिवतरु सुख दातार ॥

॥ राग वसंत ॥

(सब अरति मथन सुदार धूपं, ए चाल)

सुण भविक नर धर दुतिय व्रत मन, मृखावाद न बोल रे, वाल्हा मृखा० ॥ टेर ॥ मृखावाद कुवाद शेखर, कुजसवाद न ढोल रे, वाल्हा

कुज० सु० ॥ १ ॥ सकल शिवसुख धामधूमा-
रवि, ढकण राहु निटोल रे। शिवपुर नगर
पथि शवर सरिखो, अरति व्यापन घोलरे ॥
वाल्हा अर० सु० ॥ २ ॥ निपट कूट कलाप
करिने, पर गुपत मत खोल रे। ऋण विधौ
धन धान्यनि करै, कपट कूट न तोल रे ॥
वाल्ह कप० सु० ॥ ३ ॥ कूट लेख कुसाख
भरिने, रचय मा डमडोल रे ॥ अन्य सिरसि
कलंक धरिने, चरित छांनु न छोल रे ॥ वाल्हा
चरि० सु० ॥ ४ ॥ वसु नरेसर वृथा रचिने,
लह्यो कुगति कचोल रे। दुतिय व्रत रस राग
भाखी, कुशल सार विमोल रे ॥ वाल्हा कु०
सु० ॥ ५ ॥ इति ॥

॥ दोहा ॥

जगदाधार जिनेन्दने, पूजो भाव रसेण।
शिव वनिता वस कीजिये, पूजा त्रयसमएण ॥

॥ राग गरबो ॥

(भवि चतुरसुजाण, परनारीसुं प्रीतडी कवहु न कीजीये, ए चाल) भवि भाव धरी भव सागर निसतारक जिन परि सेवीये ॥ भवि० ॥ टेर ॥ वावनचन्दन खंडन करिये, तेहमां वलि कुंकम रस भरिये, मृगमद परिमलता अनुसरिये ॥ भ० ॥ १ ॥ कंकोल सुवासित वलि कीजे, तिम विविध कुसुम रसकस दीजे, ए चूरण विधि निज वस कीजे ॥ भ० ॥ २ ॥ इम वास रसे जे जिन पूजे, तिणसे सवि करम सबल धूजे, सुख संपति जाय न घर दूजे ॥ भ० ॥ ३ ॥ सुर किन्नर नर शासन धारे, विन समर्यां सहु संकट वारे, ए पूजन मन वंछित सारे ॥ भ० ॥ ४ ॥ विमला कमला सवला पावे, जे प्रभु गुणगण भावन भावे, इम चन्दकपूर सुजस गावे ॥ भ० ॥ ५ ॥ इति ॥

॥ राग खंभायची ॥

(भव भय हरणा, शिव सुख करणा, सदा भजो ब्र० ए चाल) भविजन पूजो, जिन ग्रीवा धरी, वर फूलनकी माला, मैं वारी जाउं व० ॥ ए पूजन दुरगति घर छेदी, विरचे शिव सुख शाला ॥ मैंवा० विर भवि० ॥ १ ॥ चंपक मरुक तिलक चंपेली, पाडल लाल गुलाला ॥ मैं० पा० ॥ विमल कमल परिमल मदमाता, न तजे अलि मतवाला ॥ मैं० न० भवि० ॥ २ ॥ जाय दमण जूही कोरंटक, मालती मरुक रसाला ॥ मैं० मा० ॥ एसे पंच वरण कुसुमे करि, माल रचन परनाला ॥ मैं० मा० भवि० ॥ ३ ॥ ए माला पूजन करो नासे, कोटि करम दुख जाला ॥ मैं० को० ॥ सुमति सुरति अनुभव बलि प्रगटे, त्रासे कुमति कुचाला ॥ मैं० त्रा० भवि० ॥ ४ ॥

ए विधि संवर द्वार विकासे, पाप सदन मुख ताला ॥ मैं० पा० ॥ कपूर कहे प्रभु चरण सरणमें, मंगलमाल विशाला ॥ मैं० मं० भवि० ॥ ५ ॥ इति ॥

॥ काव्य ॥

सरससुन्दर चंपकपाडलै । मरुकमालति केतकोसत्कजै ॥ विधिविशुध्य जिनं परिपूजयेत् सृजमजसममीभिरजेच्छकः ॥ १ ॥ ॐ ह्रीं श्री पर० अदत्तादान मोचनाय मालं भजामहे स्वाहा इति अदत्तादान विरमणव्रत पूजा ॥ ४ ॥

अथ पांचमी मैथुन विरमण व्रत दीपक पूजा ।

॥ दोहा ॥

व्रत चोथे मैथुन तणो, भजो भविक भगवान ।
इणसुं नरक निवासमें, लहिये दुःख वितान ॥

॥ राग सोरठ ॥

(कुंद किरण ससी ऊजलो रे देवा, ए

चाल) मन वच काया थिर करी रे वाल्हा, कलुष कुशील निवारो रे आछो । पहु नरक रमणी तणो रे वाल्हा, शोदर अति हितकारो रे आछो ॥१॥ नृसुर पसु सहु जातनो रे वाल्हा, विषय कलित बहु दोषे रे आछो । ते परिहरीने थिर रहो रे वाल्हा, निज दारा संतोषे रे आछो ॥ २ ॥ लंकापति नरके गयो रे वाल्हा, ए मैथुन रस धारु रे आछो । एहने तजकर केइ लह्या रे वाल्हा, जीव सकल सुख सारु रे आछो ॥ ३ ॥ शीलरतन जतने धरो रे वाल्हा, तस दूषण सब छंडी रे आछो । कुशल कला करिने लहो रे वाल्हा, शिवसुख माल प्रचंडी रे आछो ॥ ४ ॥ इति ॥

॥ दोहा ॥

दीपक पूजा पंचमी, करे सकल दुख नास ।
लोका लोक विलोकने, प्रगटे बोध विकास ॥

॥ राग वरवो देस ॥

(केसरियाने जिहाजको लोक तिरायो, ए चाल) भाव धरी दीपक पूज रचावो, यातें शिवसुख संपति पावो ॥ भा० ॥ रक्तपित सित-वर्ण विचित्रित, सूतनी वाट वणावो । गो घृत मांहि अधिकतर करीने, सुभ मन दीप जगावो ॥ भा० ॥ १ ॥ दीपकने मिश मनमंदिरमें, ज्ञानको दीप जगावो । जडता तिमर कलाप हरीने, मंगलमाल वधावो ॥ भा० ॥२॥ अरति हरण रति दायक जगमें, ए पूजन मन भावो । सुरनर पाय नमें ततखिण ही, यातें नरक न जावो ॥भा०॥३॥ अनुभव भाव विसाल करीने, आतमसुं लय लावो । कपूर कहे भवि जनसे प्रभुके, वर गुणगण जस गावो ॥भा०॥ इति ॥

॥ काव्य ॥

आत्मप्रबोधैकविवर्द्धनाय । जाडयांधकार-

व्रजमर्दनाय ॥ भव्यं प्रदीपं कुरु भक्तिवृन्दै, प्रभोर्ग्रहैवायघतर्जनाय ॥ १ ॥ ॐ ह्रीं श्री-परमात्मने अनंतानंत० मैथुनपरिहरणाय दीपं यजामहे स्वाहा ॥ इति मैथुन विरमण व्रत पूजा ॥ ५ ॥

अथ छठी परिग्रह विरमण व्रत धूप पूजा ।

॥ दोहा ॥

भवि कीजे व्रत पंचमे, सकल परिग्रहमान ।
ए मोहादिक सबरनो, भूधर दुखनी खाण ॥

॥ राग वसंत ॥

(अतुल विमल मिल्या, अंखड गुणे०, ए चाल) सकल भविक भण्या, विमल गुणे वाल्हा, मान परिग्रहनो करो ए ॥ सक० ॥ टेर ॥ वज्र समान ए सम गिरि भेदन, दोष दिवसपति वासरो ए ॥ स० ॥ १ ॥ धन कण वसन गवादिक पसुनो, धातु निकर तिम

जाणिये ए। इत्यादिक नव भेद विधाने, दश वैकालिक भांणीये ए ॥ स० ॥ २ ॥ एहने मूल थकी जे हरे नर, तेहने मोक्ष मिले सही ए। सुचिरकाल गृहवास वसे जे, तेहने देश-विधे कही ए ॥ स० ॥ ३ ॥ नरक निवास इणो विन पाम्यो, मम्मण शेठ ते भाषिये ए। भविजन ए व्रत भावथी पालो, कुशल कला निज दाखिये ए ॥ स० ॥ ४ ॥ इति ॥

॥ दोहा ॥

छठी पूजन धूपकी, धूपो जिनवर अंग।
कुसुरभि करम तणी हरे, दायक है सुखचंग ॥

॥ राग देश ॥

(थांरी छिब वरणी न जाय, थांरे सुख-डारी हो वारी राज, ए चाल) एसी विध पूजन, भाई दिल धार, धूपधूम घनसार धार करी ॥ ए टेर ॥ याभवभीम वारि सागरमें,

तरण तरंडक तरल विचार ॥ धू० ॥ १ ॥ चंदन देवदारु बलि अंबर, मृगमद घनवटी घनसार ॥ धू० ॥ २ ॥ एसे सुरभि द्रव्य बहु मेली, तिणमें सेल्हारेस न विसार ॥ धू० ॥३॥ मणियुत कंचन धूपदानमें, विमलानलथी करी सुप्रचार ॥ धू० ॥ ४ ॥ कपूर करत नुतिया जिनपूजा, भविजन गणकी तारणहार ॥ धू० ॥ ५ ॥

॥ काव्य ॥

नानासुगन्ध वसुनिर्मित सारधूपं। चाकर्षितं भ्रमरवृन्दमभिर्हि येन ॥ श्राद्धाश्रये विधिनिवस्य विशालभक्त्या । धूपेर्जिनाधिपतिनं शिवदंमुदावै ॥ १ ॥ ॐ ह्रीं श्रीपर० परिग्रहमानव्रतधारणाय धूपं यजामहे स्वाहा ॥ इति परिग्रहपरिमाणव्रत पूजा ॥ ६ ॥

अथ सातमी दिशिपरिमाणव्रत कुसुम पूजा ।

॥ दोहा ॥

छठ्ठो व्रत दिशमानका, गमनागमन निवार ।
अकुशलता सवि उपसमे, श्रेय संपजे सार ॥

॥ राग गरवो ॥

(सिद्धाचलमंडण स्वामीरे, ए चाल)

श्रीशिवसुख संपति वरिये रे, भव भय दुख वारण करिये रे। कर दिसपरमाण जे चरिये ॥ रसीला, भाव विमल दिल धरिये रे, वाला धरिये तो समरस भरिये ॥ र० भा० ॥ १ ॥ अध उर्ध ने तिरछ वखाणो रे, दिशि विदिशिने तेम प्रमाणो रे, ए छे संकट जलधिनो राणो ॥ र० भा० ॥ २ ॥ एमां गमनागमन निवारो रे, ओ छे कुमति दुरगति भरतारो रे, इक चक्री लह्यो दुख भारो ॥ र० भा० ॥ ए व्रत शिवसाधन चंडो रे, तुमे भविजन एह न

खंडो रे, कहे कुशल कलानित मंडो ॥ र० भा० ॥ ४ ॥ इति ॥

॥ दोहा ॥

भवियण पूजा सातमी, कीजे भक्ति विसाल ।
ससुरभि नाना जालना, विमल कुसुम भर थाल ॥

॥ राग धन्याश्री ॥

(कबहु में नीके नाथ न ध्यायो, ए चाल)

प्रभुजीकी फूले पूजन सारो, प्र० ॥टेर॥ श्रीजिनजीके चरण कमलमें, अलि समता गुण धारो ॥ प्र० ॥१॥ चंपक कूंद गुलाब केवडा, पारधि नाग कलारो ॥ सासु दमण वासंति मोगरा, पाडल लाल मंदारो ॥ प्र० ॥ इस नानाविध कुसुम घटाकर, भाव विमलजल झारो, तो लहिये भविजन ध्रुव करिने, अचिरथकी भव पारो ॥ प्र० ॥ ३ ॥ व्रत धर फूल कलाप रुचिर ग्रहि, पूजत जे जग तारो ॥ कपूर कहत जिन

चरण सरण लहि, करम सकल दल मारो ॥
॥ प्र० ॥ ४ ॥ इति ॥

॥ काव्य ॥

गंधामलादि गुण लक्षणलक्षितै वैं पुष्पोत्करैरखिलगुंजित चंचरीकैः । संसेवयेद्विविध जाति समुद्भवैर्या । जैनेश्वरं व्रजति सो ह्यचिराच्छिवंना ॥ १ ॥ ॐ ह्रीं श्रीपर० दिसिपरिमाण व्रत ग्रहणाय पुष्पं यजामहे स्वाहा ॥ इति दिसि परिमाण व्रत पूजा ॥ ७ ॥

अथ आठमी भोगोपभोग विरमण व्रत अष्टमंगल पूजा ।

॥ दोहा ॥

जगनायक पद कमलमें, धरिये करि मन भृङ्ग ।
भोग अने उपभोगनो, ए सहु व्रत गिरिशृङ्ग ॥

॥ देशी ॥

(सिद्धचक्र पद वंदो रे भविका, ए चाल)
सकल सचित्त ने द्रव्य विकृति, वाहन वलि

तंबोल ॥ बसन कुसुमदल पानहि तिम वलि, सयण विलेवण घोल रे । भविका, इन व्रतमें मन मंडो, शिव सुख रयण करंडो रे ॥ भविका इ० ॥ १ ॥ ब्रह्मचर्य दिशि न्हाण भक्त इम, नियम चतुर्दश माल ॥ प्रतिदिन भाव हृदय धरि करिये, एहनी सार संभाल रे ॥भ० इ०॥ २ ॥ तिम ही अभक्त करोत्तर त्रिंसत, अखिल विपुल महि कंदो । कालक्षीण सहू द्रव्य अ-जाणयो, फल निशि भोजन छंदो रे ॥ भ० इ० ॥ ३ ॥ विविध अप्पोल दुप्पोल विभेदे, अश-नारंभ विसाल ॥ ए छंडे ते शिवसुख मंडे, प्रवदे त्रिजग कृपाल रे ॥ भ० इ० ॥ ४ ॥ इण व्रत करि चित मंदिर भरिये, तरिये भव-जल पार । अनुभव चन्द्र सुधा झड मंडे, कुशल कला निरधार रे ॥ भ० इ० ॥ ५ ॥ इति ॥

॥ दोहा ॥

मंगल पूजा आठमी, करम दलन असि धार।
करिये श्रीजिन आगले, वरिये शर्म्म अगार ॥

॥ राग ठुमरी ॥

(तुम विन दीनानाथ दयानिध, कोन खबर ले मेरी रे, ए चाल) भविजन भावे श्रीजिनवरको, मंगल पूजा कीजे रे ॥ वाल्हा मं० ॥टेर॥ श्लीलायन शरलाशन नंदा, वर्त्तकुंभ निरखीजे रे। मीनयुगल श्रीवच्छ सरावनो, संपुट स्वस्ति करीजे रे ॥ वाल्हा सं० भ० ॥ १ ॥ ए अड-मंगल मंडण कारण, कंचन थाल रचीजे रे। रुचिराखंड विमल गुणधारी, तंदुलसे लिख लीजे रे ॥ वाल्हा तं० भ० ॥ २ ॥ निज मन भक्ति भाव धर भविका, प्रभु सनमुख धर दीजे रे। तो सुखधाम मुक्तिपुट भेदन, निवसन कृत्य लहीजे रे ॥ वाल्हा नि० भ० ॥ ३ ॥

सुख ठाम। ए व्रत तणो भवोदधि तारण तरण प्रकाम, कुशल कला नित करतां प्रगटे अभि-नव माम ॥ ४ ॥ इति ॥

॥ दोहा ॥

नवमो श्रीजिनराजनी, पूजा परम विलास ।
विमला चत भरि भाजने, भविजन करे प्रकास॥

॥ राग पीलू ॥

(अब तो उधारचो मोहि चहिये जिनंद-राय, राखुं भरो० ए चाल) श्रीजिनवरजीकी सेवा सारे, सो भवभय दूख दूर निवारे ॥श्री०॥ टेर ॥ तंदुल विमल सकल गुण मंडित, खंडित दोषरहित उर धारे। कंचन पात्र भरि जिन आगे, ढोकन बुद्धि प्रबल सुविचारे ॥श्रीजि०॥ १॥ या पूजन जन तन मन रंजन, गंजन कुगति कुबोध विदारे। सबल करम नग भेदनहारो, सघन भवोदधि पार उतारे ॥ श्रीजि० ॥ २ ॥

सुमति सानुभव आण मिलावे, ते पिण पद शिवशर्म समारे । पोन महोदय धार भाव धरी चन्दकपूर सनूर निहारे ॥श्रीजि०॥३॥ इति ॥

॥ काव्य ॥

यो खंडजाति गुणवृन्द समन्वितानि । ना ढोकयेद्विपुल निर्मल तंदुलानि ॥ कस्मांवलिं झटति छेयहिमज्जिनाग्रे । सो वे भजेच्छिवसुखं सुतरामनन्तं ॥ १ ॥ ॐ ह्रीं श्रीपर० अनर्थदंडसमूलं मोचनाय अक्षतं यजामहे स्वाहा ॥ इति अनर्थदंड विरमण व्रत पूजा ॥६॥

अथ दशमी सामायक व्रत पूजा ॥

॥ दोहा ॥

नवमो नवधि जाणिये, सामायक व्रत सार ।
सुर जेहनी आसा करे, सुरतरु सम दातार ॥

॥ राग ॥

(आय रहो दिल बागमें, हो प्यारे जिनजी,

आ० ए चाल) सामायक व्रत पाल रे, भविक जन सामा० ॥ टेर ॥ त्रिकरण त्रिकयोगे इक महुरत, निरतीचारे चाल रे ॥ भ० सा० ॥ १ ॥ गृह व्यापार तजीने सुभ मन, धरि निरवद्य विसाल रे ॥ भ० सा० ॥ २ ॥ मन वच वपु प्रणिधान असेवन, स्मृति विहीनता टाल रे ॥ भ० सा० ॥ ३ ॥ द्वात्रिसत दूषण परिहरिने, पंचम गुण घर झाल रे ॥ भ० सा० ॥ ४ ॥ इम घनमित्र तणी पर सीझो, कुशल कला घरनाल रे ॥ भ० सा० ॥ ५ ॥ इति ॥

॥ दोहा ॥

दशमी दर्प्पण पूजना, कीजे श्रावक शुद्ध ।
सुर पादप शम शंकरण, हरण पाप संकुद्ध ॥

॥ राग कालिंगडो ॥

(नेम प्रभुजीसु कहज्यो जी म्हारा, ए चाल) जिन पूजनमें रहिये रे, म्हारा जि० ।

मन वंछित फल लहीये रे, म्हा० जि० ॥टेर॥ कंचन मणिरतनेकर जडियो, वर दरपण कर गहीये। जिनवर सनमुख दाखन विधिसें, सकल करम वन दहीये रे, म्हा० जि० ॥ १ ॥ प्रभुजीकी सेवा सब सुखदाई, भाव भक्ति उर चहीये। शिव वनिता तुम प्रेम विलूधे, अपर अधिक किम कहीये रे म्हा० जि० ॥ २ ॥ निजकशरीर प्रमाद वसे करि, भव दल भीति न सहिये। सुभ मन समकित वीर संग ले, चंद्रकपूर निवहीये रे ॥ म्हा० जि० ॥ ३ ॥ इति ॥

॥ काव्य ॥

रुचिर निर्मल दर्पणदर्शनं। विनयभूधिदयकिलकारये। जिनपतेरचिराद्भवसंगसं। स च निरस्य भजेच्छिवमंजसा ॥१॥ ॐ ह्रीं परः० सामायकव्रतमहण दृढकरणाय दर्पणं

यजामहे स्वाहा ॥ इति सामायकव्रत दृढकरण पूजा ॥ १० ॥

अथ इग्यारमी देसावगासीक व्रत नैवेद्य पूजा ।

॥ दोहा ॥

दसमो व्रत हिव भवियणा, धारो धरि वरभाव ।
संसारार्णव गहिरनो, तारण वरतर नाव ॥

॥ देशी ॥

(सिद्धाचल गिरि भेट्या रे, धन भाग हमारा, ए चाल) श्रद्धा धर मन भाजे रे, घन पाप तिहारा ॥ श्र० ॥ टेर ॥ विमल सकल सुभ विनय धरीने, गुरु मुख वचन हजारा । ए व्रत सुन्दर दिल धरो भविजन, देसावकास विचारा रे ॥ घ० श्र० ॥१॥ द्रव्यानयन प्रेत्त प्रयोगे, शब्द रूप अनुसारा । पुद्गल प्रेत्तण प्रभृति सकलना, तजिये दूषण धारा रे ॥ घ० श्र० ॥ २ ॥ परमोत्कृष्ट जघन्य प्रकारे, प्रत्या-

ख्यान प्रचारा। सहु व्रतनो आगमन ए व्रतमें,
गुण मणिरयण भंडारा रे ॥ घ० अ० ॥ ३ ॥
कर्म कषाय हरीने छेदे, चउ गति गेह विहारा।
अजरामर धन दे लह्यो निरमल, कुशल कला
करि सारा रे ॥ घ० अ० ॥ ४ ॥ इति ॥

॥ दोहा ॥

एकादसमी पूजमें, विविध भांति नैवेद्य।
मेलि करो जिनराजनो, दायक सुख निरवद्य ॥

॥ राग कल्याण ॥

(तेरी पूजा वणी हे रसमें ॥ हो ते०, ए
चाल) सेवा सारो श्रावक जिन चरणे ॥ हो
से० ॥ टेर ॥ मोदक लपनश्री वरघेवर, शिता
सुरस घृत झरणे। सुकच्चूर विंद्यादिक वहुतर,
नैवेद्य नानावरणे ॥ हो से० ॥ १ ॥ रयणांकि
त कंचन भाजन भरि, मन वच तनु थिर
करणे। करि ढोकन विधि परम विनय धरि,

रहिये नित प्रभु सरणो ॥ हो से० ॥ २ ॥ दुख-दल नासन या पूजन विधि, निर्वृति विशद सुख भरणो ॥ चंदकपूर कहत भवि जनके, कलि-मल माला हरणो ॥ हो से० ॥ ३ ॥ इति ॥

॥ काव्य ॥

धवलधाम शितापि समुद्भवैः । विमल भक्ति भरोन्वित कर्परैः । जिनपते विदधासि विपूजनं । स लभते शिवशं प्रवसन्नकैः ॥ १ ॥ ॐ ह्रीं श्रीपर० देशावगासी व्रत दृढ करणाय नैवेद्यं यजामहे स्वाहा ॥ इति देशावगासी व्रत दृढ-करण नैवेद्य पूजा ॥ ११ ॥

अथ बारमी पोषध व्रत ध्वज पूजा ।

॥ दोहा ॥

व्रत पोषध इग्यारमो, भाखो भविक विधान ।
ध्यावो ज्यूं द्रुत संहरे, प्राकृत कर्म वितान ॥

॥ देशी ॥

(इण सरवरियारी पाल, ऊभा दोय राजवो म्हारा ला०, ए चाल) भविजन भाव विशाल, प्रमाद निवारिये म्हारा लाल ॥प्र०॥ टेर ॥ पोसह व्रत चित माँहि, विनय धर धारिये ॥ म्हा० वि० ॥ ते पिण दुविध प्रकार चतुर न विसारिये ॥ म्हा० च० ॥ प्रति वासर प्रति पर्व, सजे तिम सारिये ॥म्हा० स०॥१॥ पडिलेहण धुर धार, सकल किरिया करो ॥ म्हा० स० ॥ परिठावण विधिवाद, मया वर आदरो ॥ म्हा० म० ॥ खटकाया संघट तजीने संवरो ॥ म्हा० त० ॥ अचपल थइ पचखांण, विविध मन संभरो ॥ म्हा० वि० ॥ २ ॥ वलि सहु दूषण टालिने, पाप निकंदिये ॥ म्हा० पा० ॥ चौगति च्यार कषाय, करम दल छंदिये ॥ म्हा० क० ॥ भवनिधि तारण तरण,

सुगरु पद वंदिये ॥ म्हा० सु० ॥ कुशल कला दल माल, करी चिरनंदिये ॥ म्हा० क० ॥३॥ इति ॥

॥ दोहा ॥

द्वादशमी ध्वज पूजमें, घोषण देई अमार ।
धरिये द्वादश भावना, तरिये भवजल पार ॥

॥ राग देशाख ॥

(कुबजाने जादू डारा, ए चाल) प्रभुजीसे प्रीत लाना, करि ध्वज पूजनविधाना हो ॥ प्र० टेर ॥ जोयण सहसमान मणि मंडित, कंचन दंड रचाना हो ॥ प्र० ॥१॥ पंच वरण युत वसन पताका, अधिवासित लहकाना हो ॥ प्र० ॥२॥ ढक्कनाद करि तीन प्रदक्षिण, रोहन विधि मन भाना हो ॥ प्र० ॥ ३ ॥ याविधि सकल करम रिपु दारण, ज्योतिमें ज्योति समाना हो ॥ प्र० ॥ ४ ॥ जगतारण

श्रीजिन दरसणसे, चन्दकपूर लुभाना हो ॥प्र०
॥ ५ ॥ इति ॥

॥ काव्य ॥

भव्यार्च्चति ध्वजवरैःससुभैः सजीलै, जैनेश्वरं-कनकदंडयुतैःससोभैः। कर्मारिवृन्दजयछद्म समन्वितैर्यो । वै सो भजेच्छिद्दिवादिसुराज्य लक्ष्मीः ॥ १ ॥ ॐ ह्री श्रीपर० पोपध व्रत दृढकरणाय ध्वजं यजामहे स्वाहा ॥ इति ॥ पोपध व्रत दृढकरण पूजा ॥ १२ ॥

अथ तेरमी अतिथिसंविभागव्रत फल पूजा ।

॥ दोहा ॥

द्वादशमो व्रत सुखफलद, साधु दान सनमान ।
अजरामर पद संपजे, सालिभद्र अनुमान ॥

॥ राग कजली ॥

(मेरो मन मोह्यो माई, आनंद झोले, आ० ए चाल) साधु दानव्रत भवि हृदय

धरो, रे भाई हृदय धरो ॥ सा० ॥ टेर ॥ व्रत संयमगत परलिंगीने, पडिलाभन मति रिजुत करो ॥ रिजु० भा० सा० ॥ १ ॥ जिनमत मुनिवर चरण नमीजे, असनादिक देइ सुकृत वरो ॥ सु० भा० सा० ॥ २ ॥ त्रलि पंचातिचार निवारी, परम विरतीना विघन हरो ॥ वि० भा० सा० ॥ ३ ॥ श्रीश्रेयांस ने चंदनबाला, अनुमाने पद निर्वृत्ति वरो ॥नि० भा० सा० ॥ ४ ॥ कुशल कला सुविसाल करीने, भवजल सागर झटति तरो ॥ झ० भा० सा० ॥ ५ ॥ इति ॥

॥ दोहा ॥

फल दल पूजा तेरमी, भरि भाजन कमनीय ।
भविक रचो भगवंतनी, भव विषधर दमनीय ॥

॥ राग ख्याल ॥

(लोभी नेना रे, लोभी नेना हो द०,

ए चाल) लोभी सेणा ॥ हो पू० टेर ॥ पूजन विधि प्रभुकी दिल धर ले, थिर कर मन तनु वैणा ॥ हो० पू० ॥ १ ॥ श्रीफल पूंगी बीज पूर नर, आम्र कदली फल लेणा हो पू० ॥२॥ इम नानाफल गहि प्रभु आगे, भरि भाजन धर देणा ॥ हो पू० ॥३॥ भक्ति विमल सुचितर धर मनमें, प्रभु समरण दिन रेणा ॥ हो पू० ॥ ४ ॥ कपूर कहे प्रभु पद पंकजमें, षट्पद भए युग नेणा ॥ हो पू० ॥ ५ ॥ इति ॥

अथ कलश ॥

हां हो यश धारा, प्रभुजीने, जगतारण यशधारा ॥ प्र० ॥ टेर ॥ सुरनर मुनि तिरियगवन सिंचन, वचन सजल घन भारा । हां

हो घ० प्र० ॥ विक्कमपुर श्रीत्रिशला नंदन, जिनवर त्रिभुवन प्यारा । द्वादश व्रत पूजन विधि पभणी, भवियण गण हितकारा ॥ हां हो हि० प्र० ॥ १ ॥ गुरु खरतर जिनचंद्र सूरिवर, राजे विगत विकारा । श्रीमति साधू-तिरादि कलितके, धरि मन वचन आगारा ॥ हां हो आ० प्र० ॥ २ ॥ संबत रस त्रिक निधि रात्रीकर, मासाश्विन अनुहारा । धवल पक्ष प्रतिपद तिथि शोभन, रजनीपति सुत वारा ॥ हां हो सु० प्र० ॥ ३ ॥ श्रीजिनरत्न सूरि शाखा धर, पाठक पद विसतारा । रूपचंद गणि चरण कमलमें, कुशलसार मधुकारा ॥ हां हो म० प्र० ॥ ४ ॥ अपर नाम करि चंदकपूरा, रचि जिनपति नुति सारा । कुशलनिधान प्रवर मुनिवरकी, प्रेरणाया सुविचारा ॥ हां हो सु० प्र० ॥ ५ ॥ इति ॥

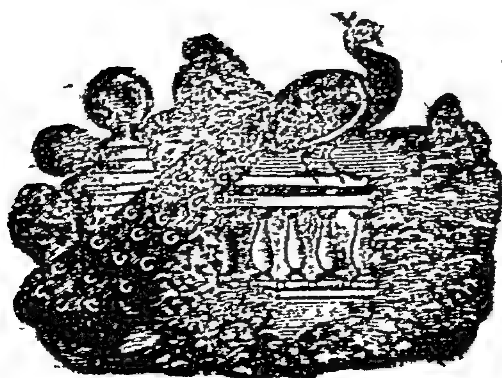
॥ काव्य ॥

जंव्वाम्रादिफलव्रजैः ससुरसै र्गंधादिभिर्मिश्रित।
नूंनं द्रव्यरुतुद्भवैश्च विधिना कुर्यात्प्रभोरर्च्चनं॥
सोभवत्यात्मनघश्रजोत्कर निरा संकृत्य सद्य लभे
च्छर्मस्वर्गतरारकं सुखफलागारं वरं निर्मलं॥
१॥ ॐ ह्रीं श्रोपर० अतिथिसंविभाग व्रतशोध
नाय फलं यजामहे स्वाहा॥ इति अतिथि
संविभाग व्रत पूजा॥ १२॥ इति श्री बारह
व्रत पूजा संपूर्णम्॥

॥ अथ पूजाविधि ॥

श्रीमहावीर स्वामीकी प्रतिमा त्रिगड़े पर स्थापनकर स्नात्र कराणो, डावे तरफ कल्पवृक्ष अष्टमंगलीक, धजा रखीजे, नालेर १५, रोक ३) अष्टद्रव्य, मोलि, कुंकु, घृत, पंचामृत,

पीछे पूजा पढणी, एक पट्ट पर चावलोका तेरह पूंज करणा, विस्तार विधिमें १३ अष्ट मंगलिकका रु० १३) धजा १३, सासन देवी, तेरह पूंजोपर एकेक चिठी धरणा ॥ ॐ ह्रीं श्रीसर्व धर्ममूल श्रीमद्दर्शनाय नमः ॥ या चीठी वीचमें, इसी तरह बारह व्रतोंकी १२, थोड़ा २ आठोही द्रव्य इन तेरह पूंजों पर चढाणा ॥ इति ॥ १२४ दीपक अथवा श्रेणीबंध बत्तिया जगाके मंडलके चोतरफ रक्खे ॥ बारहव्रत मंडल पूजाविधि संपूर्ण ॥ धजा सहरमें फिरावे ॥



सुगुणचन्द्रोपाध्यायजी कृत ।

संघ पूजा ।

—*※※*—

प्रथम जल पूजा ।

॥ दोहा ॥

संघ चतुर्विध वंदिये, भाव धरी भरपूर ।
कीर्ति जेहनी गावतां, दुख सब जावे दूर ॥
वीस जिनेश्वर शाश्वता, महाविदेह मझार ।
भविजन पूजो मन रली, जिम सुख पामो सार ॥
अष्ट द्रव्य लेई करी, पूजो दीनदयाल ।
पूजत अनुभव शुद्ध लहो, मिटे कर्म जंजाल ॥
कलश अठोतरसौ भरी, कंचन मय शुविशाल ।
गंगा मागध तीर्थना, लावो जलगुण माल ॥
साधु साध्वी श्राविका, श्रावक प्रभुना पेख ।
ए च्यारे नित वंदिये, आणी भाव विशेष ॥

॥ राग ॥

(पनिहारीकी, पूजो भविजन मन रली । सुखकारीरे लोय) पूजत परमाणंदी वारुजी । धर्म मूल जिनवर कह्यो । सुख कारीरे लोय । दीपे जेम दिणंद वा० ॥ १ ॥ सुरनर मुनिजन महनी ॥ सु० ॥ सेव करे निश दीश ॥ वा० ॥ महिमा दिन २ एहनी । सु० । अधिको होय जगीश । वा० ॥ २ ॥ सकल कला करि शोभता । सु० । भाखे शय गणीश । वा० । वेया वच्च दश भेदनी । सु० । करिये धरि मन रंग । वा० ॥ ३ ॥ साधु साध्वी श्राविका । सु० । श्रावक गुण भंडार । वा० । एह संघ मोटो कह्यो । सु० । शुभ रत्नोंकी खाण । वा० ॥४॥ सगपण मोटो एहनो । सु० । साधर्मी तणो गुण खाण । वा० । और अनेक संसारना ।सु०। कारमा कहे जग भाण । वा० ॥ ५ ॥ धणी

धणी सहुको कहे । सु० । ते किम साचा होय । वा० । तारक जेह संसार ना । सु० । साचा तेहिज जोय । वा० ॥ ६ ॥ पंचम अंग बखाणियो । सु० । संघ बड़ो सुखकार ॥ वा० ॥ संघ तणी रक्षा करे सुख कारोरे लो । ते मुनि अतिशय धार ॥ वा० ॥ ७ ॥ धर्म विशाल दयाल नो । सु० । सुमति कहे मन रंग ॥वा०॥ संघ तणी पूजा करो । सु० । ज्यों हुवे नित उछरङ्ग ॥ वा० ॥ ८ ॥ तीरथ २ सहु कहे । सु० । पिण साचो तीरथ एह । वा० । भव सागर तरवा तणो । सु० । कारण छे गुण गेह ॥ वा० ॥ ६ ॥ श्लोक ॥ ॐ ह्रीं० ॥ इति ॥

अथ बीजी चंदन पूजा ।

॥ दोहा ॥

कुंकुम चंदन मृगमदे, करहु विलेपन सार ।
कुमति कुगंधी उपशमे, प्रकटे सुमति उदार ॥

संघ वड़ो जग जाणिये, महिमा वंत महंत ।
उपगारो सिरसे हरो, पूजो सब मिल संत ॥

॥ ढाल ॥

संघ सदा जग मंगल कारण, पूजो भवि जन प्यारा । मैं वारि जाउं पूजो ॥ जिनवर गणधरनै इम भाखै, एहनौ फल विस्तारा । मैं वारि जाउं ए० ॥ १ ॥ समोसरणमें बैठत प्रभुजी, तीरथ नमना धारा । मैं० । श्रीजिनवर एहने प्रणमें, महिमा अधिक उदारा । मैं० ॥ २ ॥ सुरनर मुनिवर सबही सेवे, द्रव्य भाव कर सारा । मैं० । सुरपति मेरु सिखर पर जाई, पूजै विविध प्रकारा ॥ मैं० ॥ ३ ॥ मृग मद चंदनसे प्रभु पूजत प्रकटे लाभ अपारा ॥ मैं० ॥ बावन चंदन केसर लेई, पूजे जग भरतारा । मैं ॥ ४ ॥ चौसट इन्द्र आवे प्रभु हरखे, कंठ ठवै वरमाला । मैं० । बोधलता

जसु निर्मल प्रकटै पावै समकित सारा ॥ मैं० ॥ छट्ठे ज्ञाता अंगे देखो द्रोपदीने अधिकारा ॥ मैं० ॥ जिन प्रतिमा जिन सारखी जाणौं, पूजो विविध प्रकारा ॥ मैं० ॥ ६ ॥ विजय सुरे जिन प्रतिमा पूजी जीवाभिगम मझारा ॥ मैं० ॥ सुरियाभ सुरे जिननी पूजा, कीधी सत्तर प्रकारा ॥ मैं० ॥७॥ इत्यादिक आगम में भाखी, पूजा विधि विस्तारा ॥ मैं० ॥ मूढ मति तो एह उत्थापे, मिथ्याधर्म प्रचारा ॥ मैं० ॥ ८ ॥ हित सुख मोक्षने कारण कर्ता, सुरपति सब सिरदारा ॥ मैं० ॥ धन धन जे नर भाव धरीनै, पूजै जग भरतास ॥ मैं० ॥ ९ ॥ धर्म विशाल दयालनो नंदन, सुमति कहै वश सारा ॥ मैं० ॥ घरमें मंगल हरख वधाई, प्रकटे प्रेम अपारा ॥ मैं० ॥ १० ॥ श्लो ॥ ॐ ह्रीं० ॥ इति ॥

अथ तीजी पुष्प पूजा ।

॥ दोहा ॥

चंपो चंपेली मोगरौ, और गुलाब सुवास ।
ंच वर्ण कुसुमेकरी, पूजो अधिक उल्हास ॥
संघ बड़ो जिनवर कह्यो, सकल गुणोंकी खाण ।
अनंत जीव मुगते गया, संघ तणो परमाण ॥

॥ ढाल ॥

हां रे लाला संघ सदा मंगल कह्यो, श्रीमुख वीर जिणंद रे ॥ लाल ॥ एहनी महिमा अति घणी, कहतां न आवै पार रे ॥ ला०॥१॥ चार मंगल जिनवर कह्या,सुणजो चतुर सुजाण रे ॥ ला० ॥ अरिहंत सिद्ध साधु कह्या, वलि केवली धर्म वखाण रे ॥ ला० ॥ २ ॥ ए चारे मंगल कह्या, समयाँ जयजय कार रे ॥ ला० ॥ अनंत गुणे करि शोभता, एतो भरियो जलागार रे ॥ ला० ॥ ३ ॥ सुर गुरु जो ए गुण

कहे, तोही नावे छेह रे ॥ ला० ॥ भवसागर तरवा तणौ, कारण छे गुण गेह रे ॥ लाला ॥ ॥ ४ ॥ तीन पात्र जिनवर कह्या, ते सुण भवि चितलाय रे ॥ ला० ॥ उत्तम साधु पात्र छै, एते श्रावक श्राविका दोय रे ॥ ला० ॥ ५ ॥ मध्यम पात्र कह्या प्रभु, धारोते शुद्धमन होय रे ॥ ला० ॥ व्रत विना जे समकिती, तेतो जघन्य कह्या भगवान रे ॥ ला० ॥६॥ एहनी भक्ति सदा करो, थे टालो मिथ्या वास रे ॥ ला० ॥ पंच महाव्रत पालता, टालता दोष हमेस रे ॥ ला० ॥ ७ ॥ क्रोध कषाय निवारता चालता शास्त्र प्रमाण र ॥ ला० ॥ क्षमा करि नित शोभता, क्षोभता माया मान रे ॥ ला० ॥ ८ ॥ धर्म विशाल दयाल नो मुनि, सुमति कहै मन रंग रे ॥ ला० ॥ संघ सदा अविचल

कह्यो, मेरु समो उत्तंग रे ॥ ला० ॥६॥ श्लो० ॥ ॐ ह्रीं ॥ इति ॥

अथ चौथी धूप पूजा ।

॥ दोहा ॥

कृष्णागर मृग मद अगर, और सुगंध अनेक ।
धूप दशांग लेई करी, पूजो आण विवेक ॥
संघ गुणे करि उजलो, जैसो मोतीहार ।
चिहु दिशि महिमा जेहनी, वंदु वारंवार ॥

॥ ढाल ॥

द्वीप अढाईमें गुण मणि धारक, वंदो भविक उदारा ॥ मैं० ॥ द्वीप अढीमें ए जयवंता, जाणो बुध जन सारा ॥ मैं० ॥१॥ साधु साध्वी ने वलि श्रावक, श्रावकणी शुभकारा ॥ मैं ॥ कोड सहस्स नव मुनिवर वन्दो, प्रह उठी जयकारा ॥ मैं० ॥२॥ दोय कोड़ वलि केवली वन्दो, भविजन परम अधारा ॥ मैं० ॥ चउदे

सहस मुनिवर जयकारा, वर्त्तमान अविकारा ॥ मैं० ॥ ३ ॥ छत्तीस सहस श्रमणी नित वन्दो पंच महाव्रत धारा ॥ मैं० ॥ तीन लाख वसि सहस अठारै, श्रावकणी व्रतधारा ॥ मैं० ॥४॥ श्री जिनराज धर्म नित पाले, तजिया विषय विकारा । मैं० । ए जिन संघ सदा भवि वंदो, प्रेम धरी सुखकारा । मैं० ॥ ५ ॥ सुलसा रेवती ने जयवंती, वंदु वार हजारा ॥ मैं० ॥ धर्म विशाल नो नंदन पभणो, दो वंछित प्रभु प्यारा ॥ मैं० ॥ ६ ॥ इति । श्लोक ॥ ॐ ह्रीं ।

अथ पांचमो दीप पूजा ।

॥ दोहा ॥

दीपक पूजा पंचमी, करो भविक गुणवंत ।
मंगल कारण जाणिये, सेवो सुगुण महंत ॥
दीपक सम ए संघ है, हरे तिमिर अज्ञान ।
पाप पंक दूरे हरे, कारण परम कल्याण ॥

॥ ढाल ॥

हियड़े हरख धरी, भवि पूजो संघ उदार। हि०। वीसजिनेश्वर शाश्वता, महा विदेह मझार। हि० ॥ १ ॥ चोखे चितनित पूजतां रे, होवे जय जय कार। हि०। श्री मंधर युग मंधरा रे, बाहु सुबाहु सुजात। हि० ॥ २ ॥ छठो स्वयं प्रभ जाणिये रे, महिमा अधिक अपार। हि०। ऋषभानन अनंत वीरजी रे, सूर प्रभु महाराज ॥ हि० ॥ ३ ॥ दसमो देव विशाल छै रे, वंदू वार वार। हि०। वज्रधार चन्द्रानन वलि रे, चन्द्र बाहु सुखकार। हि० ॥ ४ ॥ भुजंग इश्वर जिन नेमजी रे, वीरसेन चित चार। हि०। महाभद्र जिनवंदिये रे, देव यश दिल धार। हि० ॥ ५ ॥ यशोधर जिन वीसमा रे, करुणारस भंडार। हि०। ए वीसे राजजी रे, तारण तरण जिहाज। हि०।

॥ ६ ॥ निश दिन वंदो एहने रे, मोक्ष नगरनी पाज । हि० । पांचसै धनुस प्रमाण छे रे, काया कंचन वान । हि० ॥ ७ ॥ मोह सुभट दूरे करी रे, आतम वीर्य उल्हास । हि० । श्रीयुत धर्म विशाल नो रे, सुमति कहै गुण रास । हि० ॥ ॥ ८ ॥ श्लोक ॥ ॐ ह्रीं ॥ इति ॥

अथ छठी अक्षत पूजा ।

॥ दोहा ॥

उज्वल तंदुल लेईने, पूजो संघ उदार ।
पूजत अनुभव शुध लहो, पामो लाभ अपार ॥
मंगल आठ करो सही, श्रीजिन आगम सार ।
स्वस्तिक करतां पामिये, संपद कमला सार ॥

॥ ढाल ॥

सुगुण निधान भविक नर करिये, पूजन विधि विस्तारा । मैं० । उज्वल चावल चोखा

ढोवो, प्रभु आगल भविसारा । में० ॥१॥ मंगल आठ रचो प्रभु आगल, पावो मंगल सारा । में । तीन पुंज प्रभु आगल करके, गुण गावो जयकार । में ॥ २ ॥ मंगल च्यार कह्या जिन वरजी जाणो ये भवि सारा । में० । पहिला मंगल श्रीजिनराजा, दूजा सिद्ध उदारा ॥ में ॥ ३ ॥ तीजो मंगल है मुनिराजा, पूजो भविजन प्यारा । में । चौथो मंगल केवली भाख्यो, धर्म सदा सुखकारा । में० ॥ ४ ॥ आणंदादिक श्रावक वंदो, मन शुद्ध भाव अपारा । में० । चंदन बाला महा गुणवंती, सतियोमें सिरदारा ॥ में० ॥ ५ ॥ सुलसा साची शील न काची, समकित छै मनुहारा । में० । वीर वखाणी चेलणा राणी, पूजो कर इकतारा ॥ में० ॥ ६ ॥ संघ चतुर्विध ए भवि पामो पद अविकारा । में० । धर्म विशाल

नो सुमति कहत है, संघ रहो जयकारा ॥ मैं०
॥ ७ ॥ श्लोक ॥ ॐ ह्रीं ॥ इति ॥

अथ सातमी नैवेद्य पूजा ।

॥ दोहा ॥

नैवेद्य पूजा सातमी, करिये अधिक सुरंग ।
वंछित सकल लहो सही, ध्याये लाभ अभंग ॥
श्रमण संघ नित वंदिये, द्रव्य भाव विहु भेद ।
अष्ट द्रव्य लेई करो, ढोवो अधिक उमेद ॥

॥ ढाल ॥

हांरे लाला चरण करण करि शोभता, सुमतावंत सहंत ए । हां० । प्रति रूपादिक जेहना, युगप्रधान कहंत ए ॥ हां ॥ १ ॥ संग्रह शील कहीजिये, विकथा कभी न करंत ए । हां ० ॥ तेज अधिक दीपै घणा, कमल समा विकसंत ए ॥ हां० ॥ २ ॥ मधुर वचन बोले सदा, क्षमा करि भरपूर ए ॥ हां० ॥ अतिशय

करिने राजता, दीपै जिम शशि सूर ए ॥ हां० ॥ ३ ॥ आगम अर्थ बखाणता, देता दान अनंत ए ॥ हां० ॥ हृदय गंभीर छै जेहनो, नहीं भाखै केहनौ मर्म ए ॥ हां ॥ ४ ॥ सागर जेम गंभीर छै, पाले श्रीजिन धर्म ए ॥ हां० ॥ प्रकृति सौम्य कही जिये, शीतलचंद समान ए ॥ हां० ॥ ५ ॥ चपलाई जे नहीं करे, नहीं धारे मन अभिमान ए ॥ हां० ॥ अपरिश्रवा गुण जेहनो, काम क्रोध नहीं धार ए ॥ हां० ॥ ६ ॥ सारण वारण चोयणा, पड़ि चोयणा करता सार ए ॥ हां० ॥ वाणी अमृत जेहनी, वरसे जिम जलधार ए ॥ हां० ७ ॥ सुणाकर भवि हरखै सदा, धारै व्रत बहु सार ए ॥हां०॥ धर्म विशाल दयाल नौ गणि, सुमति नमै हितकार ए ॥ हां० ॥ ८ ॥ श्लोक ॥ ॐ ह्रीं ॥

अथ आठमी फल पूजा।

॥ दोहा ॥

फल पूजा विधिसुं करो, भाव धरि मतिवंत।
उत्तम फल लेई करी, पूजो संघ महंत ॥

॥ ढाल ॥

फल पूजा इम करिये रे भविजन ॥फ०॥ शुद्ध मनसुं निस्तरिये० ॥भ०॥ श्रीफल विमलपुंगीफल लेई, जिनजीके आगल धरिये रे ॥ भ० ॥ दाडम द्राख खजूरी जंभीरी, शुभ फल संग्रह करिये ॥ भ० ॥ २ ॥ लूंग इलायची डोडा ढोवो, खारक भवि अनुसरिये ॥ भ० ॥ ३ ॥ अंब कदंब बिदाम फलादि, लेई पूजन करिये ॥ भ० ॥ ४ ॥ किसमिस पिस्ता और चारोली, शुभ फल आगल धरिये ॥भ०॥ ५ ॥ इण विधि पूजन भविजन करता, भव सागर निस्तरिये ॥ भ० ॥ ६ ॥ और अनुपम

फल सब लेई, संघ भगति भक्त करिये ॥भ०॥ ७ ॥ धर्म विशाल दयाल पसाये, सुमति सदा दिल धरिये ॥ भ० ॥ ८ ॥ द्रव्य भाव बिहु भेद करीने, भक्ति भली परे करिये ॥भ०॥६॥ ॥ श्लोक ॥ ॐ ह्रीं० ॥

अथ नवमी ध्वज पूजा ।

॥ दोहा ॥

ध्वज पूजन भविजन करो, प्रेम धरी गुण माल ।
पंच वर्ण सुन्दर सही, लावो अति सुविशाल ॥
सब सिणगार करी खरा, पहरो नवसर हार ।
ध्वज मस्तक धारण करी, लावे सुन्दर नार ॥

॥ ढाल ॥

ध्वज पूजन करले जिनेश्वरकी । ध्वज पूजनमें लाभ घणो है, संपदा लहे देवेसरकी १ ॥ ध्व० ॥ मस्तक थाल धरी कंचन मय,

गावत गीत भलेश्वरकी ॥ २ ॥ ध्व० ॥ सहस योजनकी ध्वजवर कहिये, चित्र लिखित सोहे फुरकी ॥ ३ ॥ ध्व० ॥ मंगल रूप कही जिन आगल पूज करो परमेश्वरकी ॥ ४ ॥ ध्व० ॥ सुन्दरी गावत, हरख वधावत, भक्ति करे अलवेसरकी ॥५॥ध्व०॥ सब सखियन मिल मंगल गावत, सोभा खुल रही केसरकी ॥ ६ ॥ध्व०॥ मंगल कारण ए ध्वज पूजन, वंछित पूरण हृदवेसरकी ॥ ७ ॥ ध्व० ॥ आज आनन्द मुझ हर्ष वधाई, पूजा रचूं परमेश्वरकी ॥८॥ध्व०॥ धर्म विशाल दयाल पसाये, भक्ति करी है जिनेश्वरकी ॥ ध्व० ॥ ६ ॥ भविजन सब मिल पूज रचावो, पावो सुख अखिलेश्वरकी ॥ध्व०॥ १० ॥ श्लोक ॥ ॐ ह्रीं० ॥

अथ दशमो नृत्य पूजा ।

॥ दोहा ॥

नृत्य करे प्रभु आगले, सुर सुन्दरी सुखकार ।
रावण ने मंदोदरी, करतां विधि विस्तार ॥

॥ ढाल ॥

नृत्य करे सुर रमणी खरी रे ॥नृ०॥ सुन्दर नारी सब सिणगारी, ठम ठम नाचत भक्ति करी रे ॥ नृ० ॥ चन्द्रवदनी सो है मृगनयनी कोयल कंठ मधुर सखरी रे ॥ नृ० ॥१॥ ताल मृदंग वीणास्वर बाजत, गावत सुन्दर राग करी रे ॥ नृ० ॥ कंचन जटित विराजत चूड़ो, दीसत रुड़ी रूप करी रे ॥ नृ० ॥ २ ॥ धप मप धप मप मादल बाजत, गावत प्रभुजीके आगे खड़ी रे ॥नृ०॥ राग आलाप करी निज भक्ते गुण गावत प्रभु प्रेम धरी रे ॥ नृ० ॥ ३ ॥

सरण तूंही परमेश्वर, जय जय तुं

प्रभु सुख करी रे ॥ नृ० ॥ ४ ॥ दीन दयाल कृपानिधि स्वामी, दीजे दर्शन महर करी रे ॥ नृ० ॥ इण परे भक्ति करे शुभ भावे, निज गुण अपनो शुद्ध करी रे ॥ नृ० ॥ जग जीवन जग लोचन कहिये, जग वल्लभ सब देव वरी रे ॥ नृ० ॥ ५ ॥ इण परि नृत्य करे सुर रामा, तन मन करे दिल हरख भरी रे ॥ नृ० ॥ धर्म विशाल दयाल पसाये, सुमति नमे प्रभु भाव धरी रे ॥ नृ० ॥श्लोक॥ ॐ ह्रीं० ॥

अथ कलश ॥

भवि तुम पूज करो हितकारी ॥ सकल प्रभु महिमा धारक, मंगल रुप उदारी ॥भ०॥ गुण इकवीस विराजत सुन्दर, निरख्या आनंद कारी ॥ भ० ॥ १ ॥ बीकानेर नगर अति

सुन्दर, संघ सकल जयकारी ॥ भ० ॥ खरतर गच्छपति कीर्ति सूरि, तेज अधिक सुखकारी ॥ भ० ॥ २ ॥ प्रीत सागर गणि शिष्य सुवाचक, अमृत धर्म उदारी ॥ भ० ॥ तास शिष्य गुण गणके धारक, क्षमा अधिक जसधारी ॥ भ० ॥ ३ ॥ तास शिष्य मुनि धर्म (विशाला) दयाला, धर्मतणा दातारी ॥भ०॥ तास चरण सेवक इम जंपे, सुमति सदा जयकारी ॥भ०॥ ४ ॥ सय उगणीसे इकसट वर्षे, माह बदी छठ सारी ॥भ०॥ पूज रची सबकुं सुखदाई, नित नित मंगल मंगलकारी ॥ भ० ॥ ५ ॥ महिमा उदय मुनि प्रवरको, प्रेरणया हितकारी ॥भ० भाव धरि ए पूजन करता, रिद्धि सिद्धि होत अपारी ॥ भ० ॥ ६ ॥ इति संघ पूजा ॥

अथ श्रीजिन हर्षसूरि कृत ।

विंशतिस्थानक पूजा ।



प्रथम पदे श्रीजिनेंद्रपद पूजा ।

॥ दोहा ॥

सुखसंपति दायक सदा, जगनायक जिनचंद ।
विघन हरण मंगल करण, नमो नाभि नृप नंद ॥
लोकालोक प्रकाशिका, जिनवाणी चित धार ।
विंशतिपद पूजन तणो, कहिस्युं विधि विस्तार ॥
जिनवर अंगे भाखिया, तप जप विविध प्रकार ।
विंशतिपद तप सारिखुं, अवर न कोइ उदार ॥
दान शील तप जप क्रिया, भाव विना फल हीन ।
जैसे भोजन लवण विन, नहीं सरस गुण पीन ॥
जे भवियण सेवे सदा, भावे स्थानक वीश ।
ते तीर्थंकर पद लहे, वंदे सुरनर ईश ॥

॥ ढाल ॥

श्रीअरिहंत पद सिधपद ध्यावो, प्रवचन आचारिज गुण गावो। स्थविर पंचम पद पुनरुवझाया, तपसि नाण दंसण मन भाया ॥ १ ॥

॥ उलालो ॥

मनभाव विनया, वश्यका मल, शील किरिया जाणिये। तप विविध उत्तम, पात्र वेया, वच्च समाधि वखाणिये। हित कर अपूरव नाण संग्रह, धरो मन सुजगीश ए। श्रुत भक्ति पुनि तीरथ प्रभावन, एह थानक वीश ए ॥ २ ॥

॥ ढाल ॥

एह थानक वीश जग जयकारा, जपतां लहीये जिनपद सारा। करम निकंदै विसवा ..., भाख्यां जगतारक जगदीशें ॥ ३ ॥

॥ उलालो ॥

जगदीश प्रथम, जिणंद जगगुरु, चरम जिनवरजी मुदा। भव तीसरे पद, सकल सेवी, लही जिनपति संपदा ॥ चावीश जिनवर, सकल सुखकर, इंद्र जसु गुन गाइये। इग दोय त्रिण, सहु पद जपीने, तीर्थपति पद पाइये ॥ ४ ॥

॥ दोहा ॥

अरिहंतादिक पद सदा, भजिये तप करि शुद्ध ।
अति निर्मल शुभ योगता, करिके तसु गुण लुद्ध ॥
विमल पीठ त्रिट तदुपरे, ठविये जिनवर वीश।
पूजन उपगरण मेलि करी, अरचीजे सुजगीश ॥
एक एक ए पद तणो, द्रव्य पूज परकार ।
पंच अष्टविध जाणिये, सत्तर इगविस सार ॥
अष्ट जातिना कलश करि, विमल जले भरपूर ।
पूजो भवियण सहु मुदा, होय सकल दुखदूर ॥

सोहे सहु परमेष्टिमें, जिनवरपद अभिगम ।
वेद निक्षेपे समरिये, वधते शुभ परिणाम ॥

॥ राग देशाख ॥

(पूर्वमुखसावन्नं, ए देशी) सकल जग-नायकं, परमपद दायकं, लायकं जिनपदं विमल-भानं । चतुरधिकतोस, अतिशय अमल वारगुण वचन पणतीस गुणमणिनिधानं ॥ अइयो ॥१॥ सुख करण जिन चरण पद्मसेवित सदा, अमर सुर असुर नर हृदयहारी । यह जिनवर तणी आण पुरण सदा, दाम जिम जगतजन शिरसि धारी ॥ अइयो ॥ २ ॥ जिनपयददरस, परस फरसते हुवे, प्रगट निज रूप परिणति विभासं । तजिय बहिरात्म, गिरिसारता भवि लहे, अनुपमं आत्मकंचन प्रकाशं ॥अइयो॥३॥ हुवई जिनराज पद, जाप रवि किरणतें, तुरत बहु दुरित भर तिमिर नाशं । घनचिदानन्द

वरकंदघन भवि लहे, तार्थकरचरण कमला-विलासं ॥ अइयो ॥४॥ वर विबुध मणि लही काच लघु शकलको, ग्रहण करवा कवण कर पसारे। तिम लहो जिन चरण, शरण शुभ योगसे, अवर सुरसरण कुण हृदय धारे ॥५॥ प्रभु तणे पंच, कल्याण केर दिने, प्रगट तिहुं लोकमें हुइ उजेरो। भविक देवपाल, श्रेणिक प्रमुख जिन नमी, वांधिया गोत्र जिनराज केरो ॥ ६ ॥ जेह क्रिया काल, नित नमें जिन हरखशुं, तेह भवजल तरे जनम त्रीजे। अधिक भव यदि करे, तदपि निश्चय करी, सत वलि अष्ट भव करीय सीझे ॥ ७ ॥

॥ काव्य ॥

णमो यांतविन्नाण, सद्दंसणाणां सयायांदिया सेस जंतूगणाणां ॥ भवांभोज विच्छयणे त्रार-

णाणं, णमो बोहियाणं वराणं जिणाणं ॥ ८॥ ॐ ह्रीं श्री अर्हद्भ्यो नमः ॥ इति जिनेन्द्र पूजा ॥ १ ॥

अथ द्वितीयश्रीसिद्धपद पूजा।

॥ दोहा ॥

तनु त्रिभागके घटनतें, घन अवगाहन जास।
विमल नाण दंसण कियो, लोकालोक प्रकाश॥
अविनाशी अप्रमित अचल, पदवासी अविकार।
अगम अगोचर अजर अज नमो सिद्ध जयकार॥

॥ राग सोरठ ॥

(कुंदकिरण शशि ऊजलो रे देवा, ए देशी) अनुभव परमानंदशु रे वाला, परमातम पद वंदो रे। करम निकंदो वंदीने रे वाला, लहि जिनपद चिरनंदो रे ॥ १ ॥ गगन पए संतर वली रे वाला, समयान्तर अणफरसी रे द्रव्य सगुण परजायना रे वाला, एक समय

विध दरसी रे ॥२॥ एक समय रुजुगति करी रे वाला, भए परमपद रामो रे। भांगे सादी अनंतमा रे वाला, निरुपाधिक सुखधामी रे ॥३ अखिण करममल परिहरी रे वाला, सिद्ध सकल सुखकारी रे। विमल चिदानन्द घन-थया रे वाला, वर इकतिस गुण धारी रे ॥४॥ उत्पन्नता वलि विगमता रे वाला, ध्रुवता त्रिपदी संगे रे। प्रभुमें अनंत चतुष्कता रे वाला, सोहे शलक्रम भंगे रे ॥ ५ ॥ पनर भेदे ए सिद्ध थया रे वाला, सहजानंद स्वरूपी रे। परम ज्योतिमें परिणम्या रे वाला, अव्याबाध अरूपी रे ॥ ६ ॥ जिनवर पण प्रणमे सदा रे वाला, एहने दिक्षा अवसरे रे। तिण प्रभुपद गुणमालिका रे वाला, कंठे धरिये सुपरे रे ॥ ७ ॥ हस्तिपाल भवि भगतिशुं रे वाला, सिद्ध परमपद भजिने रे। पद श्रीजिन

हरखे लहु रे वाला, परगुण परणति तजिने रे ॥ ८ ॥

॥ काव्य ॥

लोगग्गभागोपरि संठियाणं, बुद्धाणसिद्धाण मणिंदियाणं । निस्सेस कम्मक्खय कारगाणं । णमोसया मंगल धारगाणं ॥ १ ॥ ॐ ह्रीं श्रीसिद्धेभ्यो नमः ॥ २ ॥

अथ तृतीय प्रवचनपद पूजा ।

॥ दोहा ॥

पद तृतीय प्रवचन नमो, ज्यूं न भमो संसार ।
गमो कुमति परिणमनता, दमो करण भयकार ॥
जैसे जलधर वृष्टितें अखिल फलद विकसाय ।
तैसे प्रवचनभक्तितें, शुभ परिणति उलसाय ॥

॥ श्री राग ॥

(जिनगुणगानं श्रुत अमृतं, ए देशी)

ध्यानं सुखकरणं, परिहरिये सहु विषय

विकारं, करिये प्रवचन आचरणं ॥ प्र० ॥ १ ॥ सप्त भंगी भूषित ए प्रवचन, स्यादवाद मुद्राभरणं । सप्त नयात्मक गुणमणि आगर, बोधबीज उतपति करणं ॥ प्र० ॥ २ ॥ जैसे अमृत पान करणतें, हुवे सकलविषसंहरणं । तैसे प्रवचन अमृत पाने, कुमति हलाहल प्रविसरणं ॥ प्र० ॥ ३ ॥ प्रवचनको आधेय ए कहिये, सकलसंघ तसु अधिकरणं । तिण ए संघ चतुर्विध प्रवचन, ए पद अखिल कलुष हरणं ॥ प्र० ॥ ४ ॥ यदि भविजन तुम ए चाहतु है, सुगति रमणिको वशकरणं । करण तीन इक करि तद करिये, प्रवचन पद समरण धरणं ॥प्र०॥ ५ ॥ जिनवरजी पण ए तीरथने, प्रणमे मध्यसमवसरणं । भवजल तारण तरणि समानं, ए तीरथ अशरण शरणं ॥ प्र० ॥ ६ ॥ जिम भरतेसर

संघ भगति करी, लहियो पुगयफलाचरणां। चक्री पद अनुभवि वलि शिवपद, लीध करिय कर्म निर्जरणां ॥ प्र० ॥ ७ ॥ नरपति संभव-जिन हरखे करि, आराधो प्रवचन चरणां। करम निकंदी थया जगदीसर, जिनप रमा उर आभरणां ॥ प्र० ॥ ८ ॥

॥ काव्य ॥

अणांतसंसुद्ध गुणायरस्स, दुक्खंधयारुग्गदिवाय-रस्स। अणांतजीवाण दयागिहस्स, णमो णमो संघचउव्विहस्स ॥ ६ ॥ ॐ ह्रीं श्रीप्रवचनाय नमः ॥ ३ ॥

अथ चौथी आचार्य पद पूजा।

॥ दोहा ॥

पद चतुर्थ नमिये सदा, सूरीसर महाराज।
९ जंवू सारिसा, सकल साधु सिरताज ॥

सारण वारण चोयणा, पडिचोयण करतार।
प्रवचनकज विकसाववा, सहस किरण अवतार॥

॥ राग रामग्री ॥

(गात्र लूहे, ए देशी) आचारिज पद ध्याइये रे वाला, तास विमल गुण गाइये। पाइये हांहो रे वाला पाइये। जिनपति पद जग-शिर तीलो रे ॥ आ० ॥ १ ॥ जिन शासन अजुवालता रे वाला, सकलजीव प्रतिपालतां ॥ पालतां हां० ॥ पालतां चरण करण मग चालतां रे ॥ आ० ॥ २ ॥ सूरि सकल गुण सोहता रे वाला, सुरनर जन मन मोहता ॥ मोहता हांहो० ॥ भवियणने पडिबोहता रे ॥ आ० ॥ ३ ॥ पंचाचार विराजिता रे वाला, सजल जलद जिम गाजता ॥गाजता हांहो०॥ सूरि सकल सिर छाता रे ॥ आ० ॥ ४ ॥ उप-देशामृत वरसता रे वाला, दुरित ताप सहु

निरसता ॥ निरसता हांहो० ॥ परमातम पद फरसता रे ॥ श्रा० ॥ ५ ॥ धरम धुरंधरता धरा रे वाला, जग बांधव जग हितकरा ॥ हित-करा ॥ हांहो० ॥ स्वपर समय विहु गणधरा रे ॥ श्रा० ॥ ६ ॥ पद श्रीजिन हरषे ग्रह्यो रे वाला, सूरीसर पद तव वह्यो ॥ तव वह्यो हां हो०॥ पुरुषोत्तम नृप शिव लह्यो रे ॥श्रा०॥७॥

॥ काव्य ॥

कुवादि केली तरु सिंधुराणां, सूरीसराणां मुनि-वन्धुराणां। धीरत्तसन्तजिय मंदराणां, णमो सया मंगलमंदिराणां ॥ ८ ॥ ॐ ह्रीं श्री आचार्येभ्यो नमः ॥ इति ॥ ४ ॥

अथ पांचमी स्थविर पद पूजा ।

॥ दोहा ॥

द्विविध थिविर जिनवर कह्या, द्रव्य भाव परकार।
लौकिक लोकोत्तर वली, सुणिये भेद विचार ॥

जनकादिक लौकिक थिविर,लोकोत्तर अणगार।
पंचम पदमें जाणिये द्वितीय थिविर अधिकार॥

॥ राग सारंग ॥

(नित नमिर थिविर मुनोसरा)पंचमहाव्रत धारक वारक, कुमति जगत जन हितकरा ॥ नि० ॥१॥ संयम योगे सीदत बालक ग्लानादिक सहु मुनिवरा। एहने उचित सहाय दियण ते, वारे एहना दुःखभरा ॥ नि० ॥ २ ॥ पर्यय वय श्रुत त्रिविध ए थिविरा, बीसरु साठ समो परा। वयधर समवायाधिक पाठक, एह थिविर गुण आगरा ॥ नि० ॥३॥ त्रीज अंग कह्या दस थिविरा, रत्नत्रयीना गुणधरा। ते इह निर्मल भावे ग्रहिवा, भविक सराज द्विवाकरा ॥ नि० ॥ ४ ॥ क्षीरजलधिसम अतिहि गंभीरा, सुरगिरि गुरु धीरज धरा शरणागत तारणता धारा, ज्ञानविमल जल

सागरा ॥ नि० ॥ ५ ॥ श्रुत तप धीरज ध्यान धरणाते, द्रव्यादिक ज्ञातावरा। तेह स्वरुप रमण कह्या थिविरा, नहोय धवल केशांकुरा ॥ नि० ॥ ६ ॥ एह थिविरपद सेवो भगते, पद्मोत्तर वसुधेशरा। पद श्रीजिन हरखे तिण लहियुं, मुनिवर कुमुद निशाकरा ॥ नि० ॥ ७ ॥

॥ काव्य ॥

सम्मत्तसंयम, पतित भविजन, अतिहि थिर करता भला। अवगुण अदूषित, गुण विभूषित, चंद्रकिरण समुज्जला। अष्टाधिकादश सहस शीलांग, रथ रुचिर धाराधरा। भव सिंधु तारण, प्रवर कारण, नमो थिविर मुनीसरा ॥ ८ ॥ ॐ ह्रीं श्री स्थविराय नमः ॥ इति ॥ ५ ॥

अथ छठ्ठी उपाध्याय पद पूजा ।



॥ दोहा ॥

प्रवरनाण दरसण चरण, धारक यतिधर्म सार।
समितिपंच त्रिण गुप्तिधर, निरुपम धीरज धार॥
चरणकमल जेहनां नमे, अहोनिश सुर नर राय।
जडता गिरि दारण कुलिश, जयजय श्रीउवझाय॥

॥ राग भैरव ॥

(पंच वरणी अंगी रची, ए देशी.) भाव धरी, उवझाया वंदो, विजयकारी । श्रीउवझाय परमपद वंदी, लहो जिनपद अतिशय धारी ॥ भा० ॥ १ ॥ कुमति मदतरु भंजन सिंधुर, सुमतिकंद घन अवतारी । अंग दुवादस भणो भणावे, शिष्य भणी चित्त हितधारी ॥भा०॥ २ ॥ सकल सूत्र उपदेश दियणतें, वाचक अति विमलाचारी । भव त्रीजे अमृत सुख पावे, सुर

वरजिता, सत्त चालीश यति धर्म निधाना ॥ भ० ॥ २ ॥ मदन मद भंजता, कुमति जन गंजता, भक्त जन रंजता क्षांति भरिया। सुमति धरिया सदा, चरण परिया जना, तारिया ज्ञान गंभीर दरिया ॥ भ० ॥ ३ ॥ तृणमणि सम गिणे, चतुर विध धर्मना, परम उपदेश दायक उदारा। बहिरभ्यंतर भिदा, बारविध अति कठिन, तप तपे सकल जीउ अभयकारा ॥ भ० ॥ ४ ॥ वलि अठावीश, मनहरण गुण लब्धि निधि, सातमे छठ्ठ गुणठाण वसिया। सत्त भय वारका, प्रवर-जिन आगन्या, धारका स्वगुण परिणमन रसिया ॥ भ० ॥ ५ ॥ पंच परमाद, कल्लोलता-कुल महा, पार संसार सागर जिहाजा। विविध नव वाडि युत, शील व्रतके धरा, मधुर निज वाणि, रंजित समाजा ॥ भ० ॥ ६ ॥ कोडि

नव सहस, थुणियें महामुनिवरा, वीरभद्र जिम करिये साधु सेवा । परम पद जिन हर्ष, सुं ग्रह्यो तसु तणा, चरण कज युग नमे सकल देवा ॥ भ० ॥ ७ ॥

॥ काव्य ॥

संतञ्चिया सेसपरिहाणं, निस्सेस जीवाण दयागिहाणं । सन्नाण पज्जाय तरूवणाणं, णामो होउ तवोधणाणं ॥ ८ ॥ ॐ ह्रीं श्री सर्वसाधुभ्यो नमः ॥ इति ॥ ७ ॥

अथ अष्टम श्रीज्ञानपद पूजा ।

॥ दोहा ॥

विमल नाण वर किरण किय, लोकालोक प्रकाश।
जीत लही निज तेजसें, जिण अनंत रविभास॥
सहु संशय तम अपहरे, जय जय नाण दिणंद।
नाण चरण समरणथकी, विलयहोय दुख दंद॥

॥ राग घाटी ॥

(मेरो मन बस कर लिनो, जिनवर प्रभु पास, ए देशो) भावें नाण वंदन करिये, शिव सुख तरु कंद । जिनचन्द्र पद गुण धरिये, वरिये परम आनंद ॥ भा० ॥ १ ॥ मतिनाण श्रुत पुनरवधि, मनपरजय जाण ॥ भा० ॥ लोकालोक भाव प्रकाशी, वर केवल नाण ॥ भा० ॥ २ ॥ पंच ए इकावन भेदे, कह्यो जिन वर भान । जगजीव जडता छेदे, ज्ञानामृत रस पान ॥ भा० ॥ ३ ॥ बिन ज्ञान कीधी किरिया, होय तसु फल ध्वंस । भक्ताभक्त प्रगट ए करिये, जिम पय जल हंस ॥ भा० ॥ ४ ॥ वरनाण सहित सुकिरिया, करी फल दातार । हुवो ज्ञान चरण रसिला, लहो भवजलपार ॥ भा० ॥ ५ ॥ ज्ञानानंद अमृत पीधो, भरतेसर-महाराय । तिणसें अमृत पद लीधो, सुरपति

गुण गाय ॥ भा० ॥ ६ ॥ सेवी ज्ञान जयत नरेशें, भये जिन महाराज। सोहे ज्ञान ए त्रिभुवनमें, सहु गुणपरि शिरताज ॥ भा० ॥ ७ ॥

॥ काव्य ॥

छद्दव्व पज्जाय गुणुक्करस्स, सया पयासी करणाग्धुरस्स । मिच्छत्त अन्नाण तमोहरस्स, णमो णमो नाणदिवायरस्स ॥ ८ ॥ ॐ ह्रीं श्रीज्ञानाय नमः ॥

अथ नवम दर्शनपद पूजा ।

॥ दोहा ॥

दरिसण आश्रय धर्मनो, पहलां पट् उपमान।
दरसणविण नहि जरणचिद,उत्तराध्ययनेंजाण॥
जिनदरसण फरस्यो भलो, अंतर मुहुरतमान ।
अर्द्ध पुग्गल परियट रहे, तसु संसार-वितान ॥

॥ राग कासोद ॥

(चंपक केतक मालती, ए देशी) जिणंद- रिसण मुझ मनवस्यो ए, अइयो मन वस्यो ए, उपजत परम आनन्द । जिनदरसण दरसण दिये,विमल नाल तरु कंद ॥ दरसण मोह रिपु जीतिया ए ॥ अ० ॥ वरदरसण उलसंत । दरसण घट परगट हुवा, भवियण भव न भमंत ॥ २ ॥ जिनवर देव सुगुरु व्रती ए ॥ अ० ॥ केवलि कथित जिनधर्म । तीन तत्व परिणति रमे, ते दरसण करे शर्म ॥ ३ ॥ जिन प्रभु वचनोपरि सदा ए ॥ अ० ॥ थिर सरदहणा धरंत । इण लक्षणतें जाणिये, समकितवंत महंत ॥ ४ ॥ इग दुगति चउ शर दस विहा ए, सत्तसठि भेदविचार ॥अ०॥ वलि पररीति समकित भणयो, द्रव्य भाव परकार ॥ ५ ॥ जिण दरसण कह्यु ए ॥ अ० ॥ भावे

समकित सार। द्रव्यते दरसण भावतो, दरसण कारण धार ॥६॥ द्रव्यते दरस यदिगत वली ए ॥ अ० ॥ तदपि उत्तर हितकार। सय्यंभव जिनदरणो, पायो दरसण सार ॥ ७ ॥ दरसण विण किरिया हता ए ॥ अ० ॥ अंक विना जिम विंदु। वलि हणियो विन चन्द्रिका, वासरमें जिम इन्दु ॥ ८ ॥ हरिविक्रम नृप सेवतो ए ॥ अ० ॥ दरसण पद अभिराम। पद श्रीजिन हरपे धर्यु, वधते शुभ परिणाम ॥ ९ ॥

॥ काव्य ॥

अणंत विन्नाण सुकारणस्स, अणंत संसार विदारणस्स। अणंत कम्मावलि धंसणस्स, णमो णमो निम्मलदंसणस्स ॥ १० ॥ ॐ ह्रीं श्रीदर्शनाय नमः ॥ इति ॥ ६ ॥

अथ दशमी विनय पद पूजा।

॥ दोहा ॥

विनय भुवन जन करे, विनये जस विसतार।
विनय जीव भूषित करे, विनये जयजयकार॥
विनय मूल जिनधर्म्मनु, विनय ज्ञानतरु कंद।
विनय सकलगुण सेहरो,जयजय विनय सनंद॥

॥ राग सामेरो ॥

(पूजोरी माई, जिनवर अंग सुगंधे, ए देशी) ध्यावोरी माई, विनय दशम पद ध्यावो। पंच भेद दश विध तेरस विध, बावन भेद गणेशे। छासठ भेद कह्या आगममें, विनयतणा सुविशेषे॥ ध्या० ॥ १ ॥ तीर्थंकर सिद्ध कुल गण संघा, किरिया धर्म वरनाणा। नाणी आचारिज मुनि थविरा, पाठक गणि गुण जाणा ॥ ध्या० ॥ २ ॥ ए अरिहादिक तेरस `, विनय करे जे भावे। ते तीर्थंकर पद

अनुभविने, अमृतपद सुख पावे ॥ ध्या० ॥३॥ जिम कंचनमें मृदुगुण लाभे, नहीय कालिमा पावे। तिण ए सकल धातुमें उत्तम, नाम कल्याण कहावे ॥ ध्या० ॥ ४ ॥ तिमविनयीमें छे मृदुता गुण, कुमति कठिनता नासे। कृष्णादिक लेश्यानी मलिनता, जाये विनय गुण भासे ॥ ध्या० ॥ ५ ॥ दोय सहस अरु अधिक चिहुत्तर, देववंदन निरधारो। गुरु वंदन विधि चारसे वाणु, भेद करी उर धारो ॥ ध्या० ॥ ६ ॥ तीर्थंकरादिकनो मन गे, विनय चरण शुभ ध्यायो। धन नामा भविजन शुभयोगे, पद जिन हर्षे पायो ॥ ध्या० ॥ ७ ॥

॥ काव्य ॥

आणंदिया सेसजगज्जणस्स, कुंदिंदु पादा मल-ताचणस्स। सुधम्म जुत्तस्स दयासयस्स, णमो

णमो सव्विणयालयस्स ॥ ८ ॥ॐ ह्रीं श्रीविनयाय नमः ॥

अथ एकादशम चारित्रपद पूजा।

॥ दोहा ॥

इग्यारमपद नित नमुं, देश सरव चारित्र।
पंक मलिनता दुर करी, चेतन करे पवित्र ॥
एह चरण सेवन करे, रंकथकी सुरराय।
तीन जगतपति पद दिये, जसु सुर नर गुणगाय॥

॥ राग सारंग ॥

(वावन चंदन घसि कु०, ए देशी) चरण सरण मुझ मन हरयो, सुख करण हरण घन पाप ए ॥ हां हो रे वाला ॥ एह चरण जलधर हरे, अज्ञान तरणतर ताप ए ॥ हां० ॥१॥ आठ कषाय निवारतां, देशविरति प्रगट हुवे ए ॥ हां० ॥ चार कषाय निवारिया,

समविरति लहे गुणवास ए ॥ हां० ॥२॥ इग-
वासर सेव्यो थको, शुद्ध सर्व संवरचारित्र ए
॥ हां० ॥ परमानंद घन पद दिये, सुरलोक
जनित सुखचित्र ए ॥ हां० ॥ ३ ॥ भवभय
तरुगण छेदवा, ए संयम निशित कुठार ए ॥
हां० ॥ ज्ञान परंपर करण छे, अमृत पदनो
हितकार ए ॥ हां० ॥४॥ चरण अनंतर करण
छे, निरवाण तणो निरधार ए ॥ हां० ॥ सर-
वविरति शुद्ध चरणसे पामे अरिहंत पद सार
ए ॥ हां० ॥ ५ ॥ वरस चरण परजायमें, अनु-
त्तर सुख अतिक्रम होय ए ॥ हां० ॥ सतर
भेद चारित्रना, कहिया जिन आगम जोय ए
॥ हां० ॥ ६ ॥ देशथी सम संयम विषे, उज्ज-
लता अनंत गुण थाय ए ॥ हां० ॥ अरुणदेव
सेवी चरणने, भये जगगुरु जिन महाराय ए
॥ हां० ॥ ७ ॥ इति ॥

॥ काव्य ॥

कम्मोघकंतार दवानलस्स, महोदयानन्द लया-जलस्स । विन्नाण पंकेरुहकाणणस्स, णमो चरित्तस्स गुणापणस्स ॥ ८ ॥ ॐ ह्रीं श्रीचारित्राय नमः इति ॥ ११ ॥

अथ बारमो ब्रह्मचर्यपद पूजा ।

॥ दोहा ॥

सुरतरु सुरमणि सुरगवी,काम कलश अवधार ।
ब्रह्मचर्य इण सम कह्यु, कामित फलदातार ॥
जिम जोतिसियां रजनिकर, सुरगणमें सुराय ।
तिम सहु व्रत शिर सेहरो,ब्रह्मचरज कहिवाय॥

॥ राग काफी जंगलो ॥

(भलो प्रभुगुण वाल्हा हो, ए देशी)

भवभयहरणा शिवसुखकरणा, सदा भजो ब्रह्मचारा हो ॥ भ० ॥ शील विबुध तरु प्रति-, कहि जिनवर नववारा हो ॥ भ०

॥ १ ॥ दिव्योदारिक करण करावण, अनुः मति विषय प्रकारा हो ॥ भ० ॥ त्रिकरण जोगें ए परिहरियें, भजियें भेद अढारा हो ॥ भ० ॥ २ ॥ कनक कोडिनो दान दिये नित, कनक चैत्य करतारा हो ॥ भ० ॥ एहथी ब्रह्मचरज धारकनो, फल अगणित अवधारा हो ॥ भ० ॥ ३ ॥ सहस चोरासी श्रवण दान फल, शमब्रह्मव्रतफल सारा हो ॥ भ० ॥ विजयशेठ विजया शेठाणी, उभय पक्ष ब्रह्म-धारा हो ॥ भ० ॥ ४ ॥ भये सुदर्शन शेठ शीलसें, सुगतिवधू भरतारा हो ॥ भ० ॥ सहस अढार शीलांगरथ धारा, धार करो निसतारा हो ॥ भ० ॥ ५ ॥ सिंहादिक वसुभय तरु भंजन, सिंधुर मद मतवारा हो ॥ भ० ॥ कलहकारि नारदऋषि सरिखे, तर्यों भव-जलधि अपारा हो ॥ भ० ॥ ६ ॥ पच्चख्खाण

विरति नहि एहमें, ए ब्रह्मव्रत उपगारा हो ॥ भ० ॥ सकल सुरासुर किन्नर नरवर, धरिय भगति हितकारा हो ॥ भ० ॥ ७ ॥ ब्रह्मचरज व्रतधर नरवरके, प्रणमे चरण उदारा हो ॥ भ० ॥ दशमे अंगें भणियो नरवर्ग, नरपति गुण आधारा हो ॥ भ० ॥ ८ ॥ ब्रह्मचरजव्रत पाल लहु पद, जिनहरषें जयकारा ॥भ०॥६॥

॥ काव्य ॥

सग्गापवग्गग्ग सुहप्पयस्स, सुनिम्मलाणंत गुणालयस्स । सव्वव्वया भूषण भूसणस्स, णमोहि सीलस्स अदूसणस्स ॥ १ ॥ ॐ ह्रीं श्रीब्रह्मचर्याय नमः ॥ इति ॥ १२ ॥

अथ तेरहमी क्रियापद पूजा ।

॥ दोहा ॥

करम निरजरा हेतु हे, प्रवर क्रिया गुण खाण ।
जिनशासननो स्थिति रहि, किरियारुपे जाण॥

भवनमांहि किरिया मही, सकल शुद्ध विवहार।
प्रवरनाण दरिसण तणो, शुद्ध किरिया सिणगार॥

॥ राग मालवो गोडी ॥

(सब अरति मथनमुदार धूपं, ए देशी)

शुभध्यान किरिया हृदय धरीने, धर्म सकल उरधार रे। आर्त रौद्रनी हेतु किरिया, अशुभ पणवीस वार रे॥ शु० ॥ १ ॥ ज्ञानवंत अशस्त्र भट हे, किरिया शस्त्र वतंस रे। सुभटनाणी क्रियाशस्त्रें, करयकर्म अरिध्वंस रे॥ शु० ॥२॥ ज्ञानसेंति वदे शिव यदि, तेरमे गुण ठाण रे। एकनाणें करि जिनेसर, किमु न लहे निरवाण रे॥ शु० ॥ ३ ॥ जिनप शैलेशीकरण करी, चउदमे गुणठाण रे। सरवसंवर चरण करणें, लहे पद निरवाण रे॥ शु० ॥ ४ ॥ ए अनंतर अमृत कारण, कह्यो जिनवर भाणु रे। सरव संवर चरण किरिया, न शिव इण विणु जाण

रे ॥ शु० ॥ ५ ॥ एक नाणें इक क्रियामें, न शिव वितरण शक्ति रे। कहे जिनवर उभय योगें, लहे भविजन मुक्ति रे ॥ शु० ॥ ६ ॥ गरल मिश्रित सरस भोजन, अशुभ परिणति धार रे। अमृत संयुत तेह भोजन, रुचिर परिणति कार रे ॥ शु० ॥ ७ ॥ ज्ञानसहिता तेम किरिया, करि करे निसत्तार रे। ज्ञानविणु किरिया न दीये, मनोगत फलसार रे ॥ शु० ॥ ८ ॥ ज्ञान परिणत रमो किरिया, तेह किरिया सार रे। भयो हरिवाहन जिनेसर, शुद्ध किरिया धार रे ॥ शु० ॥ ९ ॥

॥ काव्य ॥

विशुद्धसद्धारण विभूसणस्स, सुलद्धि संपत्ति-सुपोसणस्स। णमो सदाणंतगुणप्पदस्स, णमो णमो सुकिरियापदस्स ॥१०॥ ॐ ह्रीं श्रीक्रियायै नमः ॥ इति ॥ १३ ॥

अथ चौदहमी तप पद पूजा।

॥ दोहा ॥

शमतारस युत तपरुचिर, भणियो जिनजग भान।
शिवसुर सुख चंदनफलद, नंदनविपिन समान ॥
सघन करम कानन दहन, करन विमल तप जान॥
विपिन धूमकेतन समो, जय तप सुगुणनिधान ॥

॥ राग कल्याण ॥

(तेरी पूजा बनी तेरसमे, ए चाल) मेरी लगी लगन तप चरणों। सकल कुशलमें प्रथम कुशल ए, दुरित निकाचित हरणो ॥ मे० ॥ १ ॥ जैसे गणधरकी जिनचरणो, चारतकको जल धरणो ॥ मे० ॥ जैसो चक्रवाकको अरुणो, चकोरकी हिम करणो ॥ मे० ॥ २ ॥ जिनवर पण तद्भव शिव जाणो, श्रण चउ नाण सुकरणों ॥ मे० ॥ तदपि सुकोमल करण सरणने, ठवय कठिन

तप करणों ॥ ३ ॥ कपट सहित तप चरणधर-
णतें, बांछित फल नवि तरणों ॥ मे० ॥ नित
ए दंभ रहित तपपदके, सुरपति गण गुण
वरणो ॥ मे० ॥४॥ पीठ महापीठ मुनि मल्ली-
जिन, पूरव भव तप सरणों ॥ मे० ॥ रहिया
तदपि कपट नवि छंड्यो, भये स्त्री गोत्राचरणों
॥ मे० ॥ ५ ॥ दृढप्रहारी पांडव घनकरमी,
छंड्या कर मावरणों ॥ मे० ॥ तपसे शोभ लही
त्रिभुवनमें, केवल कमलाभरणों ॥ मे० ॥ ६ ॥
लाख इग्यारह असी हजारा, पंच सयसदिन्न
खिरणों ॥ मे० ॥ मासखमण करि नंदन मुनि-
वर, पाम्यो फल शिव धरणों ॥ मे० ॥ ७ ॥
तप करियो गुणरयण संवत्सर, खंधक शमता-
दरणों ॥ मे० ॥ चउदसहस मुनिमें कह्यो
अधिको, धन्नो तप आचरणों ॥ मे० ॥ ८ ॥
बहिरभ्यंतर भेदें ए तप, बार भेद अधिकरणों

॥ मे० ॥ वसने कनककेतु पाम्या पद, जिन हरपे भवतरखों ॥ मे० ॥ ६ ॥

॥ काव्य ॥

लच्छीसरोजावलितावणस्स, सरूवसंलग्ग सुपावणस्स । असंगलानो कुहदुद्दवस्स, णमो णमो निम्मल सत्तवस्स ॥ १० ॥ ॐ ह्रीँ श्री तपसे नमः ॥ इति ॥ १४ ॥

अथ सुपात्रदानाधिकारे पंचदशम गौतमपद पूजा ।

॥ दोहा ॥

गौतम गणधर पनरमे, पद सेवो सुप्रसन्न ।
वलि सहु जिन गणधर नमा, चौदेशे बावन्न ॥
दान सकल जगवश कर, दान हरे दुरितारि ।
मन वांछित सहु सुख दिये, दान धरम हितकारि ॥

॥ राग सोरठ ॥

(तेरी प्रीति पिछानी हो प्रभु मे, ए देशी)

पनरस पद गुण गाना हो भवि ॥ पनरस० ॥

भाव धरी करिये मन रंगे, परम सुपात्रे दाना ॥ हो भवि पनरम० ॥ १ ॥ पात्र कह्या द्रव्य भाव दुभेदं, द्रव्यलच्छन ए जाना ॥ हो भवि प० ॥ सर्वोत्तम उत्तम हुवे भाजन, रतनकनक रूपानां ॥ हो भवि प० ॥ २ ॥ मध्यम पात्र कहीजे एहवा, ताम्र धातु निपजातां ॥ हो भवि प० ॥ पात्र लोहादिक अपर जातिना, तेह जघन्य कहाना ॥ हो भवि प० ॥ ३ ॥ भाव-पात्रनो लच्छन कहिये, सुणिये सुगुण सयाना ॥ हो भवि प० ॥ पंचम चरणाधरे वलि वरते खीणमोह गुणठाना ॥ हो भवि प० ॥ ४ ॥ रतनपात्र सम ते सर्वोत्तम, पात्र कह्यां जिन भाना ॥ हो भवि प० ॥५॥ ते कांचन भाजन सम कहिये, भवजल तारन याना ॥ हो भवि प० ॥ शुद्ध मन द्वादश व्रत दरसन धर, तार-पात्र सम जाना ॥ हो भवि प० ॥ ६ ॥ शुद्ध

समकितधर, श्रेणिक परमुख, रह्या अविरति गुणठाणा ॥ हो भवि प० ॥ ताम्रपात्र सम एहने कहिये, भावी गुणमणि खाना ॥ हो भवि प० ॥ ७ ॥ अपर सकलजन मिथ्यादृष्टि लोहादि पात्र गिनाना ॥हो भवि० प०॥ जिन-शासन रंगे रंगाना, वाचंयम सुप्रमाना ॥ हो भवि प० ॥ ८ ॥एहने दान दिया शिव लहिये एह सुपात्र पहिचाना ॥ हो भवि प० ॥ पंच-दान दशदान निकरमें, अभयसुपात्र महिराना ॥ हो भवि प० ॥ ९ ॥ नरवाहन शुभ पात्र दानतें, भये जिन हरष निधाना ॥ हो भवि प० ॥ शालिभद्र वलि सुरसुख लहियो, सुर नर करय वखाना ॥ हो भवि प० ॥ १० ॥

॥ काव्य ॥

अनंतविन्नाण-विभासरस्स, दुवाल संगी कम-लाकरस्स । सुलद्धवासा जरगोयमस्स, णमो

गणाधीसर गोयमस्स ॥ ११ ॥ ॐ ह्रीं श्रीगौतमाय नमः ॥ १५ ॥

अथ षोडश वेयावच्चपद पूजा ।

—**—

॥ दोहा ॥

सोलमपदमें जाणिये, वेयावच्च विधान ।
अखिल विमल गुणमणितणो, सोहे प्रवरनिधान ॥
जिनसूरी पाठक मुनी, बालक वृद्ध गिलान ।
तपसी चैत्य संघनु करो, वेयावच्च प्रधान ॥

॥ राग जंगली ॥

मुने म्हारो कब मिलशे मनमेलू ॥ दे० ॥
सेवोभाई, सोलमपद सुखकारी । श्रीजिनचंद्र प्रमुख दशपद नो, करो वेयावच्च भारी ॥ १ ॥ श्रीतीर्थंकर त्रिभुवन शंकर, अवर केवली हारी । मनपर्यवधर अवधिनाणधर, चौदपूरव श्रुत धारी ॥ से० ॥ २ ॥ दशपूर्वि उत्कृष्ट चरण-

धर, लब्धिवंत अणगारी । ए जिन कहिये इन वंदनतें, भवि हुवे जिन अवतारी ॥ से० ॥ ३ ॥ जिनमंदिर बिम्ब करिय भरावे, पूज करे मनुहारी । वेयावच्च कहाये ए जिनकी, करियें भवजलतारी ॥ से० ॥ ४ ॥ आचारिज परमुख नवपदकी, वेयावच्च विजितारी । भक्तिपूर्व वस्त्रोषध अनजल, देवे गुणविस्तारी ॥ से० ॥ ५ ॥ पंचसय मुनिनो करिय वेयावच्च, पूरवभव व्रतचारी । भरत बाहुबलि चक्रिपदभुज, बल लह्यो वरी शिवनारी ॥ से० ॥ ६ ॥ नंदिषेण सुलसा मुनिजनकी, करीय वेयावच्च सारो । तिनसें स्वर्गलोकमें दुईको, भईय प्रशंसा भारी ॥ से० ॥ ७ ॥ इत्यादिक सोलमपद उधरे, बहुलभव्य क्रमजारी । तिनसें इन वेयावच्चपदकी, वारि जाउं बार हजारी ॥ से० ॥ ८ ॥ नृप जीमूतकेतु सोलमपद, सेवी भये दुखवारी ।

श्रीजिन हर्ष धरी हरिवंदित, शरणागत निस-
तारी ॥ से० ॥ ६ ॥

॥ काव्य ॥

मणुस्सण सव्वातिसया सयाणं, सुरासुराधीसर
वंदियाणं । रविंदु बिंबामल सग्गुणाणं, दया-
धराणं हि नमो जिणाणं ॥ १ ॥ ॐ ह्रीं श्री-
जिनेभ्यो नमः ॥ इति १६ ॥

अथ सतरहमी समाधि पद पूजा ।

॥ दोहा ॥

सतरम पदमें सेविये, सहु सुख करण समाधि।
जिन सेवनतें भविकनो, गमे व्याधि अरु आधि ॥
ब्रह्मनगर पथ विचरतां, वर पाथेय समान ।
ए समाधि पद जाणिये, सुरमणि किये है रान ॥

॥ राग कहेरवो ॥

(वाजै तेरा बिछुआ रे बा०, ए देशी)

रे समाधि चरण चित्त बसियो, तसु गुण

समस्या कियो मनु वसियो ॥ मे० ॥ सकल जगत जन जिनकुं स्तवतुहे, अनुभवरंगे अतिहि विकसियो ॥ मे० ॥ १ ॥ द्रव्यत भावत दुविध समाधि, सुरतरु मानु नित भुवन विलसियो । असन वसन सलिलादिक भक्ति, करिय संघनी करुणा रसियो ॥ मे० ॥ २ ॥ द्रव्य समाधि प्रथम ए सुनिये, कह्यो जिन लोकालोक दरसियो । सारणा वारणा चोयणा प्रमुखे, पतित सुथिर करे धर्ममें हरसियो ॥ मे० ॥ ३ ॥ भाव समाधि द्वितीय ए कहिये, जो करे सो जिन चरण फरसियो । सकल संघको जो उपजावत, दुविध समाधि दुरित तसु नसियो ॥ मे० ॥ ४ ॥ सुमति पंच त्रण गुपति धरे नित, सुरगिरिवरनो धीरज करसियो ॥ मे० ॥ ५ ॥ ध्यान अनल कर्मेंधन दाहत, जिनसें परगुण खिसियो । ए मुनितरणि तेज सम

दीपत, अमृत सुखामृतपान तिरसियो ॥ मे० ॥ ६ ॥ इन पदमें ऐसे मुनि जनके, समरनतें हुय जग अवतंसियो । ए पद सेवी नृपति पुरंदर, भये जगपति जिन हरख उलसियो ॥ मे० ॥ ७ ॥

॥ काव्य ॥

सर्व्विद्या पारविकारहारी, अकारणा सेसजणोवगारी । सहाभयातंकगणापहारी, जयो सदा शुद्ध चरित्तधारी ॥ ८ ॥ ॐ ह्रीं श्रीचारित्रधारिभ्यो नमः ॥ इति सप्तदशम समाधि पद पूजा ॥ १७ ॥

अथ अठारमी अपूर्वश्रुत ग्रहणारूप ज्ञान पूजा ।

॥ दोहा ॥

श्रुत अपूर्व ग्रहिवु सदा, अष्टादश पद मांहि ।
पद सेवक जन तणा, सहु संकट भय जाहि ॥

जेसी कुमतिनि शुद्धता, घोर तपे करि होय।
तत अनंत गुण शुद्धता, सुज्ञानी की जोय ॥

(दिलदार यार गबरू, राखु रे हमारा घटमें, ए देशी) जिन चन्द्र नाम तेरा, महाराज ज्ञान तेरा। जीते रे विकट भव भटने, सदपूर्वज्ञान धरणा ॥ वितरे जिनेन्द्र चरणा, करे सर्व कर्म हरणा ॥ जी० ॥ १ ॥ जगमें महोपकारी, भव सिन्धु वारि तारी, कुमतांधता विदारी ॥ जी० २ ॥ सहु भावनो प्रकाशी, परम स्वरूप भासी, परमात्म सद्मवासी ॥ जी० ॥ ३ ॥ विनु हेतु विश्वबंधू, गुण रत्न राशि सिंधू, समता पीयूष अंधू ॥ जी० ॥ ४ ॥ स्याद्वाद पक्ष गाजे, नयसत्तसे विराजे, एकान्त पक्ष भाजे ॥ जी० ॥ ५ ॥ लहि तीर्थ पाव तारा, इनसे जिनेन्द्र सारा, भविके किया उधारा ॥ जी० ॥ ६ ॥ पद सेवि ए नरीन्द्रा,

भये सागरादि चन्दा, जिन हर्षके समन्दा ॥
जी० ॥ ७ ॥

॥ काव्य ॥

सुद्धक्रिया मंडल मंडणस्स, संदेह संदोह विखंड-
णस्स । मुत्ती उपादाण सुकारणस्स, णमोहि
नाणस्स जसोधणस्स ॥ ८ ॥ ॐ ह्रीं श्री
ज्ञानाय नमः ॥ इति ॥ १८ ॥

अथ एकोनविंशतितप श्रुतपद पूजा ।

॥ दोहा ॥

पाप ताप संहरण हरि, चंदन सम श्रुत सार ।
तत्व रमण कारण करण, अशरण शरण उदार ॥
इगुनवीस पदमे भजो, जिनवर श्रुतनो भक्ति ।
इनपद वंदनसे लहे, विमलनाण युत मुक्ति ॥

॥ राग ॥

(ब्रजवासी कानतैं मेरी गागर ढोरी रे,
देशी) भविजन श्रुतभक्ति, चरणशरण उर

धरियें रे। ए श्रुतभक्ति सुमंगल माल, विमल केवल कमलावरमाल ॥ भवि० ॥ १ ॥ सकल द्रव्यगण गुणपर्याय, प्रगट करण ए श्रुत मन भाय ॥ भ० ॥ अतुल अनंतकिरण समवाय, धरण तरणगणसम कहिवाय ॥ भ० ॥ २ ॥ ए श्रुतकुमति युवतिने संग, अगणित रमणतणो करे भंग ॥ भ० ॥ अरथे भाख्यो श्रीजिनराज, सूत्रे गणधर मुनि सिरताज ॥ भ० ॥ ३ ॥ ए श्रुत सागर अगम अपार, अनंत अमल गुणरयणाधार ॥ भ० ॥ भवभय जलनिधि तरण जिहाज, निसुणि मगन भई सकल समाज ॥ भ० ॥ ४ ॥ भवकोटी लगे तप करो जीव अज्ञानी करे जितनी सदीव ॥ भ० ॥ कर्मनिरजरा तितनी होय, ज्ञानीके इक क्षणमें जोय ॥ भ० ॥ ५ ॥ एक सहस कोडि छसहकोडि, चतुरतीस कोडि अक्षर जोडि ॥ भ० ॥ अट-

ती० ॥ १ ॥ जिनके गणधर तीरथ कहिये, वलि सहु संघ सुखकारा । एह महा तीरथ पहिचानो, वंदि लहो भवपारा ॥ ती० ॥ २ ॥ अडसठ लौकिक तीरथ तजि करि, भज लोकोत्तर सारा । द्रव्यभाव दोय भेद लोकोत्तर, स्थिर जंगम भयहारा ॥ ती० ॥ ३ ॥ पुंडरीक परमुख पंच तीरथ, चैत्य पंच परकारा । एह वर तीरथ थावर कहिये, दीठां दुरित बिदारा ॥ ती० ॥ ४ ॥ श्रीसीमंधर प्रमुख वीश जिन, विहरमान भवतारा । दोय कोडि केवलि विचरंता, जंगम तीर्थ उदारा ॥ ती० ॥ ५ ॥ संघ चतुर्विध जंगम तीरथ, जिनशासन उजियारा । वर अनंत गुण भूषण भूषित, जिनको नमत जिनसारा ॥ ती० ॥ ६ ॥ ए तीरथ परभावन करिये, शुभ भावन आधारा । शिव कज जल तम पदको, जाऊं प्रतिदिन बलिहारा

॥ ती० ॥ ७ ॥ ए तीरथ परभावन करतो, मेरू प्रभु अविकारा। पद जिन हर्ष लहीने तरीया, भवभय जलधि अपारा ॥ ती० ॥ ८ ॥

॥ काव्य ॥

महा महानन्दपद प्रदाय, जगत्रयाधीश्वर वंदिताय। जिनश्रुत ज्ञान पयोनदाय, नमोस्तु तीर्थाय, शुभंददाय ॥ स ॥ ॐ ह्रीं श्रीतीर्थाय नमः ॥ इति ॥

अथ विंशतिपद स्तुति।

॥ राग गरबो ॥

॥ ढाल ॥

सुणि चतुर सुजाण परनारी प्रीतड़ी० ॥ चित हरख धरो, अनुभव रंगे वीस परमपद वंदिये। शिव_ रमणि वरी, केवल सखिय सहाय, करी चिर नंदिये (प्रा०) ए वीस चरण अशरण शरण, चिर संचित दुरित

तिमिर हरणा। नित चित ए पद समरण धरणा ॥ १ ॥ ए पद समरण जिण चित धरिया, तरिया तरसै तरै भव दरिया। सद- नंत भविक सहु भयहरिया ॥ चि० ॥ २ ॥ ए पद गुण सागर मनुहारा, वर्णन तरणी ए बहु- हारा। इन्द्रादिक सुर न लह्यो पारा ॥ चि० ॥ ३ ॥ ए पद अतिशय महिमा धारा, आश्रित पद कमला भरतारा। जिनचन्द्रानंद घन पद कारा ॥ चि० ॥ ४ ॥ जिन हर्ष सूरिन्दके शिव करणा, चन्द्रामल गुण विंशति करणा हुयज्यो प्रभु अरज ए अब धरणा ॥ चि० ॥ ५ ॥ इति ॥

अथ कलश ॥

ए वीश थानक भुवन नंदन अघ निकंदन । विबुधेन्द्र चन्द्र नरेन्द्र वंदित, पद

जिनेन्द्र बखानिये। ए वीश पद भव जलधि तारण, तरण गुण पहिचानिये॥ इम जाणि भविजन कुशल कारण, वीश पद उर आणिये॥ १॥ इह वरस चन्द्र दिनेन्द्र हरिसुख, विधि नयन छिति मिति धरु। तिह मास भादव धवलदल तिथि, पंचमी रविवासरु। बंगाल जन पद जिह विराजित, शिखर तीरथ गिरिवरु। सहु नगर शोभित, अजीमगंजपुर द्वितिय वालूचर पुरु॥ २॥ खरतर गणेशर विजित सुरगुरु, विमल गुण गिरिमाधरा। गुण भवन भविजन नलिन कानन नित विकाशन दिन करा। मुनिचन्द्र श्रीजिनलाल सुरीन्द सुगुरु महीपल युगवरा॥ सकलेन्द्र वंद्य जिनेन्द्र शासन मंडना नितहित धरा॥ ३॥ तसु पट्ट उज्वल शिखरि गणवर, उदय गिरि वासर

करा । योगीन्द्र वृन्द नरेन्द्र वंदित, चरणपंकज गणधरा । आचार पंच, छतीस गुणधर, सकल आगम सागरा ॥ युगप्रवर श्री, जिनचन्द्रसूरी, गुरु सकलसूरीसरा ॥ ४ ॥ तसु चरण कमल वि, युगलसेवन, अहनिशि मधुकरता धरी । पुन सुगुरुपद, अरविंद युगनो, कृपा नित चित आदरी ॥ गणधार श्रीजिन हरषसूरी, हरषभर घन अघहरी । या वीस पदको, विविध पूजन, विधि तणी रचना करी ॥ ५ ॥ इतिश्री वीश-स्थानक पूजा ॥

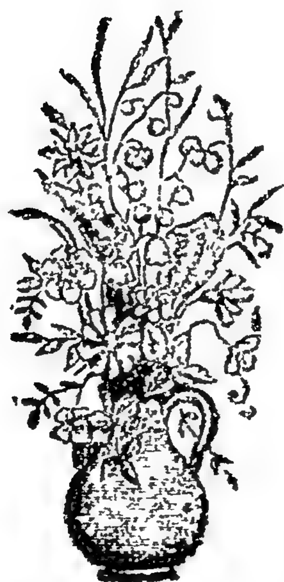
॥ अथ विंशतिस्थानक आरती ॥

—**—

(जिया चतुरसुजाण नवपदके गुणगाय रे ए देशीमां) मियस विंशतिथान मंगलआरति

गाय रे। सुमतिशिक्षा कहे चेतनपतिको, निजगुण वचन मन भायरे ॥पि०॥ १ ॥ यदि निजगुण पहिचानि तुम चहिये, तिणको एह उपाय रे ॥ पि० ॥ अरिहंत सिद्ध आचारिज पाठक, साधु सकल समुदाय रे ॥ पि० ॥ १ ॥ इत्यादिक विंशति पद समरण, भवभय हरण विधाय रे, एह आरती अरतिवारती, अनुपमसुर सुखदाय रे ॥ पि० ॥ ३ ॥ जैसे भगते करय आरती, सकल सुरासुरराय रे। तैसे भवि तुमे करो आरती, ए पदगुण चित लाय रे ॥ पि० ॥४॥ पंचप्रदीपसे करय आरती, जे नितचित उलसाय रे। ते लही पंच चिदानन्द घनता, अचल अमर पदपाय रे ॥ पि० ॥ ५ ॥ पंच प्रदीप अखंडित ज्योते, दुर्मति तिमिर विलाय रे। एह आरती तुरत तारती, भवजल निपतित धाय रे ॥ पि० ॥ ६ ॥ पदजिन हरष

तणी ए करणी, मनहरणी कहिवाय रे।
चन्द्रविमल शिव सिधिनिधि धरणी, वरणी
किण विध जाय रे ॥ पि० ॥ ७ ॥ इति
आरती ॥



अथ श्रीजिन हर्षसूरि कृत।

ऋषि मण्डल पूजा।

—*※※*—

प्रथम जल पूजा।

॥ दोहा ॥

प्रणमी श्रीपारस विमल, चरण कमल सुखदाय।
ऋषिमंडल पूजन रचूं, वरविधि-युतचितलाय ॥
नंदीश्वर मंदिर गिरै, शाश्वत जिन महाराज।
अरचैं अठ विधि पूजसे, जिमि समस्त सुरराज॥
तिम चितजिनपतिगुणधरी, श्रावकसमकितधार।
विरचै जिन चौवीसकी, अठविधि पूज उदार ॥

॥ गाथा ॥

सलिल सुचन्दन, कुसुमभरं, दीवगकरणं च धूवनाणं च, वर अक्षत, नैवेद्यं, शुभ फलं, पूजाय अठ विहा ॥ १ ॥

॥ दोहा ॥

प्रथम जिनेश्वर तिम प्रथम, योगीश्वर नरराय।
प्रथम भये युग आदिमें, सकल जीव सुखदाय॥
यह अठविधि पूजा करण, सुनिये सूत्र संस्कार ।
जे भवि विरचे प्रभुतणी, ते पामें भवपार ॥

॥ राग देसाख ॥

(पूर्व मुख सावनं करि दशनपावनंकी चालमें) विमलगिरि उदयगिरि राजशिखरी परी । तरुण तर तेज दीपत दिणन्दा । युगल धर्म-वार करी धरम उद्योत किए, विमल इक्ष्वाकु कुल जलधिचन्दा ॥ १ ॥ मातमरु देवीवर उदर दरी हरिवरा । सकल नृप मुकुट मणि नाभिनन्दा । अखिल जगनायका, सुगति सुखदायका। विमलवर नाण गुण मणि समंदा ॥ २ ॥ वृषभ लाछन धरा, सकल भव भंट- । अमर वरगीत गुणकुसल कन्दा । गहिर

संसार सागर तरणि समधरा। नमत शिव चन्द प्रभु चरण वंदा ॥ ३ ॥

॥ काव्य ॥

सलिल १ चन्दन २ पुष्प ३ फलव्रजैः ४ सुविमलाक्षत ५ दीप ६ सुधूपकैः ७ विविध नव्य मधु प्रवरान्नकै ८। जिनमसोभीरहं वसुभिर्यजे ॥ १ ॥ ॐ ह्रीं श्रीपरमात्मनेऽनंतानंत ज्ञानशक्तये। जन्म जरामृत्यु निवारणाय। श्रीमते ऋषभ जिनेन्द्राय जलं चन्दनं पुष्पं धूपं दीपं अक्षतं नैवेद्यं फलं वस्त्रं यजामहे स्वाहा ॥ इति श्रीप्रथम जिनेन्द्रास्याष्ट विधि पूजा ॥ १ ॥

अथ श्रीअजित जिन पूजा।

॥ दोहा ॥

जयजिणंद दिणंद सम, लखि भविजन विकसात।
परमानंद सुकंद जल, विजयामात सुजात ॥

॥ राग ॥

(आय रहो दिल बागमें प्यारे जिनजी इस ख्यालकी चालमें) एक अरज अवधारिये अजित जिन एक अरज अवधारियै ॥आकडी॥ अजित जिनेसर, जग अलवेसर। कूरम निजर निहारियै (अजित जिन एक०) तारण तरण विरुद सुणि तेरो। आयो सरण तिहारियै ॥ अजित जिन एक० ॥ १ ॥ चरम सिंधु भवभय जल निपतित। चरण पतित मोहे तारियै ॥अजित० एक०॥ परमानन्द घन शिववनितानन। कंज मधुपान सकारियै ॥ अजित० एक० ॥ २ ॥ चिर संचित घन दुरित तिमिर हर। तुम जिन भये तिमिरारियै ॥ अजित० एक० ॥ कहै शिवचन्द्र अजित प्रभु मेरे। एह अरज न विसारियै ॥ अजित० ए० ॥ ३ ॥

॥ काव्य ॥

सलिल चंदन० ॥ ॐ ह्रीं श्रीमते अजितजिनेन्द्राय वसु द्रव्यं यजा० ॥ इति श्रीअजितजिनेन्द्रास्याष्ट विध पूजा ॥ २ ॥

अथ तृतीय श्रीसंभव जिन पूजा ।

॥ दोहा ॥

जय जितारि संभव सदा, श्रीसंभव जिनराज ।
सकल लोक जिण जीतलो, जीतो मोह समाज॥

॥ राग ॥

(गंधवटी घनसार केसर, मृगमदारस भेलीये इस चालमें) अपरिमित वर शिखर सागरधार संभव कारए, जिन राज संभव पाय वंदो लहो भव जल पार ए। वलि जलधिजात सुजान कुंजर कुंभ भंजन जानिये, तसु जनक नाम समान नामा भए जिन उर आनिये॥१॥

जसु चरण-पंकज मधुर मधुरसं पान लय लागी रह्यो, मिल करि सुरासुर खेचर व्यंतर भमर नितचित उमह्यो । जसु करणकमलैक्षवग लांछन कनक सुवरन कायए । सहु भुवन नायक सुमति दायक जननी सेना जायए ॥२॥ जसु मधुरवाणी जगवखाणी पैंतीसवर गुण-धारिणी । संसार सागर भय भराभर पतित पार उतारिणी । स्याद्वाद पक्ष कुठार धारा कुमति मद तरु दारिणी, प्रभुवाणी नित शिव-चन्द्र गणिके हुवो मंगलकारिणी ॥ ३ ॥

॥ काव्य ॥

सलिल चंदन० ॐ ह्रीं श्रीं प० श्रीमत्संभव जिनेन्द्राय वसु द्रव्यं य० ॥ ❀ ॥ इति तृतीय संभव जिन पूजा ॥

अथ चतुर्थ श्रीअभिनंदन जिन पूजा ।

—*※*—

॥ दोहा ॥

श्री चतुर्थ जिनवर सदा, पूजो भविचित लाय ।
भक्ति युक्ति संकट हरण, करण तीन सुखथाय ॥

॥ राग सोरठ ॥

(कुंद किरण शशि उजलो रे देवा०, ए० चाल) संवर नंदन जिनवरु रे व्हाला अभिनंदन हितकामो रे। जगदभिनंदन जगगुरु रे व्हाला दुरित निकंदन स्वामी रे ॥ १ ॥ लोकालोक प्रकाशता रे व्हाला करतो अविचल धामी रे। अव्याबाध अरुपीता रे व्हाला विमल चिदानंद रामी रे ॥ २ ॥ वंछित पूरण सुरमणि रे व्हालो प्रभु अंतर जामी रे। ऐसे जिन महाराज रे व्हाला चंदनमें सिर नामी रे ॥ ३ ॥

॥ कांव्य ॥

सलिलं० ॐ ह्रीं श्रीं प० श्रीमदभिनन्दन जिने० ॥ वसु० ॥ इति चतुर्थ पूजा ॥

अथ पंचमी श्रीसुमति जिन पूजा।

॥ दोहा ॥

पंचमजिन नायक नमूं, पंचमी गति दातार।
पंचनाणवर विमल कज, वन विकसन दिनकार॥

॥ राग कैरवो ॥

(वंसी तेरी वैरिणी बाजे रे, ए चाल)

सुद्धभाव चित्तथिर धरिके रे ॥ चित्त० ॥ पूजो सुमति जिणंद ॥ सुधभाव० ॥ जिन भक्ति० करण रसीला, लहो परमाणंद ॥ १ ॥ सुध भाव० ॥ जिन राज सुमति सनंद, करै कुमति निकंद ॥ सुध० ॥ प्रभुना चरण अरविन्द, वंदे असुर सुरिन्द ॥ २ ॥ सु० ॥ कनकाभ तनु द्युति सोहे प्रभु सुमंगलानंद ॥ सुध० ॥ करु०

खोपशम रस भरिया, वंदे नित शिवचंद ॥
सुध० ॥ ३ ॥

॥ काव्य ॥

ॐ ह्रीं सलिलचंदनं० श्रीमत्सुमति जिनेन्द्राय
वसु द्रव्यं० ॥ इति सुमति जिन ॥

अथ छठमो पद्म प्रभु जिन पूजा ।

॥ दोहा ॥

हिव षष्टम जिनवर तणी, पूजन करो उदार ।
भविचित भक्ति धरि करो,सुख संपति करतार॥

॥ राग सारंग ॥

हां हो० (बावन चंदन घसि कुम कुमा० ए चाल) पद प्रभु मुख चन्द्रमा, नित सकल लोक सुखदाय ॥ हां० ॥ हरिसुर असुर चकोरड़ा, नित निरख रह्या ललचाय ए ॥ हां० ॥ १ ॥ जिन मुख वचन अमृत तणो, जे श्रवण करें भवि पान ए ॥ हां० ॥ ते अजरामरता

लहे, हरिगण करे जसु गुण गान ए ॥ हां० ॥ २ ॥ धर नृप कुल नभ दिन मणि, प्रभु मात सुशीमा नंद ए ॥ हां० ॥ प्रभु दर्शनतें प्रति दिने, होज्यो शिवचंद आनन्द ए ॥ हां० ॥३॥

॥ काव्य ॥

सलिल० ॐ ह्रीं० श्री पद्म प्रभु जिने० वसु०

॥ इति छठी पूजा ॥

अथ सातमी सुपार्श्व जिन पूजा ।

॥ दोहा ॥

श्रीसुपार्श्व सुरतरु समो, कामित पूरण काज ।
भो भविजन पूजो सदा, वसु विधि पूज समाज॥

॥ राग कल्याण ॥

(मेरा दिल लागा जिनेश्वरसे, ए चाल)

मेरी लागी लगन जिनवरसे ॥ मेरी० ॥ जैसे चन्दचकोर भमरको, केतकि कमल मधुरसे

॥मे०॥ एह सुपारस प्रभु भये पारस, गुणगण समरण फरसे ॥ मे० ॥ चेतन लोह पणो परिहरके, हुए ले कंचन सरिसे ॥ मे० ॥ १ ॥ ए प्रभु करुणा करकुं धरिल्ये, उर जिम कमल भमरसे ॥ मे० ॥ जे भविजिन पद लगन धरे तसु, नहीं भय मरण असुरसे ॥ मे० ॥ २ ॥ मात पृथ्वी तनु जात तनु द्युति, सम शुभ कंचन सरसे ॥मे०॥ कहे शिवचन्द्र चित्त नित मेरो, रहो प्रभु पद लय भरसे ॥ मे० ॥ ३ ॥

॥ काव्य ॥

सलिल० ॐ ह्रीं० श्रीमत्सुपार्श्व जिने० वसु द्रव्यं ॥ इति सातमी पूजा ॥

अथ आठमी श्रीचन्द्रप्रभुजिन पूजा।

॥ दोहा ॥

प्रथम जिनपद पूजिये, विविध कष्ट हरनार।
अष्ट सिद्धि नवनिधि लहे, जिन पूजन करतार॥

॥ राग गुंड मिश्रित मल्हार ॥

(मेघ बरसै भरी कुसुम बादल करी, ए चाल) परमपद पूर्व गिरिराज परि उदय लहि विजित परचन्द्र दिनकर अनन्ता । चन्द्रप्रभु चन्द्रिका विमल केवल कला, कलित शोभित सदा जिन महन्ता ॥ १ ॥ परम० ॥ कुमतिमत तिमिर भर हरिय पुन भूरि भवि, कुमुद सुख करिय गुणरयण दरिया । गहिर भव सिंधु तारण तरणि गुण, धारि भव तारि जिनराज तरिया ॥ परम पद० ॥२॥ राखिये आज मोहि लाज जिनराज प्रभु, करण सुख चरण जिन शरण परीया। परम शिवचंद्र पदपद्म मकरंद रस, पान नित करण ततपर भरिया ॥३॥परम पद०॥

॥ काव्य ॥

सलि० ॐ ह्रीं श्रीमच्चन्द्र प्रभु जिने० वस्तु०

॥ इति श्रीचन्द्र प्रभु पूजा ॥

अथ नवमी श्रीसुविधि जिन पूजा ।

—*※※*—

॥ दोहा ॥

सुविधि २ समरण थकी, कामित फल प्रकटाय।
अतिगहन संसार वन, बहुल अटन मिट जाय ॥

॥ राग ॥

(चंपक केतकि मालती, ए चाल)
सुविधि चरणकज वंदिये ए ॥ अइयो वं० ॥ नंदिये अति चिरकाल । शिव तरवारि निकंदिये ए, विघन कंद तत्काल ॥ १ ॥ आज जन्म सफल भयो ॥ हां ए स० ॥ दीठो प्रभु दीदार। तनु मन दृग विकसित भये, जिम कज लखि दिनकार ॥ २ ॥ अमृत जलधर वरसियो ॥ हां ए अइयो व० ॥ भवि उरक्षेत्र मझार। दर्शन सुरतरु ऊगियो, शिव फलनो दातार ॥ ३ ॥

॥ काव्य ॥

सलिल० ॐ ह्रीं श्रीमत्सुविधि जिनें० वसु० ॥

इति नवमी सुविधि जिन पूजा ॥

अथ दशमी श्रीशीतल जिन पूजा ।

॥ दोहा ॥

मुझ तनु मन शीतल करो, श्रीशीतल जिनराय ।
तुम समरण जलधारसे, अंतर तपत पलाय ॥

॥ राग घाटो ॥

(दादा कुशल सुरिन्द० ए चाल) मेरे दीन दयाल तुम भये सकल लोक प्रतिपाल । सुणि शीतल जिनवर महाराज, चरण शरण धर्यो प्रभुनो आज ॥ मेरे दीन० ॥ न नमूं सहु सविकारी देव, करसुं चरण कमलनी सेव ॥मे० ॥ १ ॥ जैसे सुरमणि करतल पाय, कुण ल्यै काच सकल उलसाय ॥ मे० ॥ तुम सम सुर-वर अवर न कोय, हेर २ जग निरख्यो जोय

॥ मे० ॥ २ ॥ प्रभु दर्शन जलधर घनघोर, लखिय नृत्य करै भविजन मोर ॥ मे० ॥ पद शिवचन्द्र विमल भरतार, अरज एह उर धारिये सार ॥ ३ ॥ मे० ॥

॥ काव्य ॥

सलिल० ॐ ह्रीं श्रीमच्छीतल जिनेन्द्राय वसु० ॥ इति दशमी शीतल जिन पूजा ॥

अथ इग्यारमी श्रीश्रेयांस जिन पूजा ।

॥ दोहा ॥

श्रीश्रेयांस जिनेन्द्र पद, नद थुति सलिलाधार।
जे नेत्रे मज्जन करे, ते शुचि हुई विधुतार ॥

॥ राग ॥

(सोहम सुरपति वृषभ रुप करि न्हवण,० ए चाल) श्रीश्रेयांस जिनेश्वर जग गुरु, इन्द्रिय सनंद हे । जसु वसु विध पूजनसे अरचो, उर

धरि परमानन्द हे। ए समकित धर श्रावक करणी, हरिणी भवोमन रंग हे। विजय देव जिन प्रतिमा पूजी, जीवाभिगम उपंग हे॥ श्री० ॥ १ ॥ सुरियाभ प्रभु पूजन करियो, राय पसेणी उपांग हे। ज्ञाता अंगे द्रोपदी श्राविका, पूज्या जिन प्रति बिम्ब हे। काल अनंत भमसी भव वनमें, संदमतो भय भ्रान्त हे॥ श्री० ॥ २ ॥ विष्णु मात तनु जात विष्णु नृप, विमल कुलंबर हंस हे। सकल पुरेन्दर अमर असुरगण, शिरोवरि प्रभु अवतंस हे। इम सुरवरनी परे-श्रावक जे, पूजे जिन उछरंग हे। ते शिवचन्द्र परम पद लहिस्ये, निश्चै करि भव भंग हे॥ ३ ॥ श्री० ॥

॥ काव्य ॥

सलिल० ॐ ह्रीं श्रीश्रेयांस निनेन्द्राय० ॥इति श्रेयांस जिन इग्यारमी पूजा ॥

अथ बारमी श्रीवासुपूज्य जिन पूजा।

॥ दोहा ॥

हिव बारम जिनवरतणी, पूजन करिये सार।
भाव भक्ति युत भवि सदा, द्रव्य भक्ति चितधार॥

॥ राग ॥

(नव वाड़ सेतो शील पालौ०, ए चाल)
सकल जगजन करत वंदन जया नंदन सामि रे॥ देवा०॥ १॥ नृपति वर वासुपुज्य नृप कुल, विपिन नंदन जात रे॥ देवा०॥ सुहरि चंदन नंद नंदन, नंद नदकिय घात रे॥देवा०॥ स०॥ २॥ वासु पुज्य जिनेन्द्र पूजो सकल जन महाराज रे॥ देवा०॥ करत नुति शिव-चन्द्र प्रभु ए, निखिल सुर सिरताज रे॥देवा०॥ ३॥ स०॥

॥ काव्य ॥

सलिल० ॐ ह्रीं श्रीमद्वासु पुज्य जिनेन्द्राय वस्तु० ॥ इति बारमो वासुपुज्य जिन पूजा ॥

अथ तेरमी श्रीविमल जिन पूजा ।

॥ दोहा ॥

विमल विमल प्रभु कर मुझे, मलिन कर्म करो दूर ।
तेरम प्रभु रखिये सदा, मुझ उरमझि गुणपूर ॥

॥ ढाल ॥

(राग, सिद्ध चक्र पद वंदो रे ॥ भ०)

विमल चरण कज वंदो रे ॥ भविजन ॥वि०॥ वंदनसे आनन्दो रे ॥भवि० वि०॥ जसु गणधर मुनिवर गण मधुकर, सेवत पद अरविन्दो । श्याम उदर सुगति मुक्ता फल, कृतवर्मा नृप वंदो रे ॥ भवि० ॥ १ ॥ सहुजग मंडल विमल करणाकुं, जिन शासन नभ चंदो । उदय भयो भवि कुमुद विकसवा, वर गुण रयण समंदो

रे ॥ भवि० ॥ २ ॥ पवि भय दंध हरण भवि चाहा. प्रभु पंरी चरनंदो। विमल चिदानन्द घन मय रूपो नित्त चंद्दत शिवचंदो रे ॥ भवि० ॥ ३ ॥

॥ काव्य ॥

सलिल० ॐ ह्रीं० श्री मल्लिमल जिनें० ॥ इति तेरमी पूजा ॥

अथ पांदमी श्रीअर्चा पूजा।

॥ दोहा ॥

हिय म जिन पूजता,हरिये विषय विकार। भो भवियण सुणिये सदा,ए प्रभु सरणाधार॥

॥ ढाल ॥

(राग, पंचवर्णी अंगी रची०, ए चाल)

पूज करणी प्रभुनी दुरित निवारी ॥ दुरित० ॥ प्रा० ॥ अनंत तरणी हिम किरण तरुण तर, किरण निकर जोता है भारी। अनंत नाणवर

दर्शन तेजे, प्रभु सुयशोदर है अवतारी ॥पू०॥ १ ॥ लोकालोक अनंत द्रव्य गुण, पर्याय प्रकट करण हारी । तातें अन्वय युत जिन धरियो, अनंत नाम अति मनुहारी ॥ पू० ॥ २ ॥ सिंहसेन नृप नंदन वंदन, करते इन्द्रचन्द्र सुखकारी । सादि अनंत भंग स्थिति धरियो, पद शिवचन्द्र विजयधारी ॥ पू० ॥ ३ ॥

॥ काव्य ॥

सलिल० ॐ ह्रीं श्रीमदनंत जिने० वसु० ॥

इति चौदमी पूजा ॥

अथ पंचदशम श्रीधर्म जिन पूजा ।

॥ दोहा ॥

भानुभूप कुल भानुकर, पनरम जिनसुर सार ।
शोभितसहुजगविपिनजन,हरखफलदजलधार॥

॥ ढाल ॥

धर्म जिनेश्वर धरम धुरंधर, जग बंधव

वाला ॥ मैं वारि० ॥ सुव्रता नंदन पाप निकंदन, प्रभु भये दीन दयाला ॥ मैं वारि० धर्म० ॥१॥ प्रभु धीरज गुण निरखि अमर गिरि, लजि लीनो अचला धारा ॥मैं वा०॥ जिन गंभीरता चरम सिंधु लखि, किय लोकांत विहार ॥ मैं धर्म० ॥ २ ॥ ए जिन चंद्र चरण अरचनतें, लहि जिन पति अवतारा ॥ मैं० ॥ करम वैरि दल करि भवि लहिस्यो, पद शिवचंद्र उदारा ॥ मैं वारि० धर्म० ॥ ३ ॥

॥ काव्य ॥

सलिल० ॐ ह्रीं श्रीसद्धर्म जिने० वस० ॥ इति ॥

अथ सोलहमो श्रीशान्ति जिन पूजा।

॥ दोहा ॥

अचिरा उदरे अवतरी, शांति करी सुखकार।
मारि विकारमिटायके, नामधर्योशांतिसार ॥

॥ राग विभास ॥

(भावधरि धन्य दिन आज सफलो गणुं, ए चाल) शान्ति जिन चंद्र निज चरण कज शरण गत, तरणि गुणधारि, भववारि तारी। कुमति जन विपिन जनि, कुमति घन घृतिन तति, छितिनि शितधार तरवार दारी ॥ १ ॥ शां ॥ एक भव पद उरूय चक्रधर तीर्थंकर, धारिया वारिया विघनवारी। सकल मद मारिया, विमलगुण धारिया, सारिया भक्ति वंछित अपारी ॥ शा० ॥ २ ॥ हरिण लंछन धरा, वर्ण सुवरण करा, सुरवरा हित धरा गत विकारी। मोहभट धरणिधरगण हरण वज्रधर, कुमुद शिवचन्द्र पद रजनिकारी ॥३॥शा०॥

काव्य ॥

सलिल० ॐ ह्रीं श्रीप० शान्ति जिने० ॥ इति षोडष पूजा ॥

अथ सतरहमी श्रीकुंथु जिन पूजा ।

॥ दोहा ॥

सतरम जिनवर दीवसम, मक्षि भवसागर जाण।
भक्ति युक्ति नितपूजिये, लहियेअमल विनाण ॥

॥ ढाल ॥

(अरिहन्त पद नित ध्याइयै, ए चाल)

कुंथु जिणंद गुण गाइये ॥ वारि० ॥ मन वंछित फल पाइये रे । प्रभु समरण लय लाइये ॥ वारि० ॥ भविभव तजि शिव जाइये रे ॥ कुंथु० ॥ १ ॥ भव जलगत निज आतमा ॥ वा० ॥ करुणा उर धरि ताइये रे । चरणकरण उपयोगिता ॥ वा० ॥ ग्रहण करण कुं ध्याइये रे ॥वा० ॥ कुं० ॥ २ ॥ ए प्रभु दर्शन जीव ने ॥ वा० ॥ अनुभव रसनो दाइये रे। वर शिव-चन्द्र विमल वधे, दिन दिन शोभ सवाइये रे ॥ कुं० ॥ ३ ॥

बोधिसिन्धु भवतारो वेदत्रयो च्चिर ही तनु धार्यों, सकल संघ सुखकारी रे ॥न्हा० मल्लि० ॥२॥ शकल कुशल हरि चंदन तरुवर, नंदन वन अनुकारी । संघ चतुर्विंध भूरि खचरगण प्रणत चन्द्र अनुहारी ॥ न्हा० मल्लि० ॥ ४ ॥

॥ काव्य ॥

सलिलचं० ॐ ह्रीं श्रीमल्लि जिने० ॥ इति मल्लि जिन पूजा ॥

अथ बीसवी श्रीमुनि सुव्रत जिन पूजा ।

॥ दोहा ॥

पद्मोत्तर वर पद्मनद, गत पर पद्म समान ।
विंशतितम जिन पूजिये, केवल लच्छी निधान ॥

॥ राग गरबो ॥

॥ ढाल ॥

(सुण चतुर सुजाण, परनारीसुप्रीति कबहु कीजिये ए चाल) मुनि सुब्रत जिनेन्द्र

सुनिजर धरी मुझपर वर दर्शन दीजिये। प्रभु दरश प्रीति निरुपाधिकता, करिये लहिये शिव साधकता। तब तुरत मिटे सब बाधकता ॥ १ ॥ सु० ॥ अमृतमें साध्य पणो विलसै, प्रभु दर्शन साधनता उलसै। तद मुझमें साधकता मिलसै ॥ २ ॥ मु० ॥ भिन्नादि करणता यदि विचटै, एकारि करणता यदि सुघटै। तदमुझ शिव साधकता प्रकटै ॥ मु० ॥ ३ ॥ एकाधिकरणता मुझ करियै भिन्नाधिकरणता परिहरियै। शिवचंद्र विमल पद तव वरियै ॥ मु० ॥ ४ ॥

॥ काव्य ॥

सलिलचं० ॐ ह्रीं श्रीमुनिसुव्रत जिने० वस्तु० ॥ इति मुनि सुव्रत जिन पूजा ॥

अथ इक्कीसवीं श्रीनमि जिन पूजा।

॥ दोहा ॥

अंतर वैरि नमाविया, तव लहियौ नमि नाम।
भविजन ए प्रभु पूजसें, सरीधै वंछित काम॥

॥ राग ॥

॥ ढाल ॥

(हम आये हैं शरण तिहारे, तुम प्रभु शरणागत तारे, ए चाल) श्रीनमि जिनवर चरण कमलमें, नयन भमर युग धरिये रे। तिण किय गुण मकरंद पानसे चेतन मद मत करिये रे ॥ वारि चेतन० ॥ श्री नमि० ॥ १ ॥ एह चरण कज अहनिश विकसै, परकज निसि कुमलावै रे ॥ वा० प० ॥ ए न वसै बलि तुहिन अनलसे अपर कमल बल जावे रे ॥ वा० प्र० ॥ २ ॥ ए पद कज गुण मधुरस पीवत, जीव अमरता

पावे रे ॥ वारि० ॥ अवर कमल रस लोभी मधुकर, कजगत गज गिल जावे रे ॥ वा० प्र० ॥ ३ ॥ परकज निजगुण लब्धिपात्र है, पदकज संपद् देवे रे। तातें पद शिवचंद जिणंदके, अहनिशि सुरवर सेवे रे ॥ वा० श्री० ॥ ४ ॥

॥ काव्य ॥

सलिलं० ॐ ह्रीं श्रीं प० श्रीनमि जिने० ॥ वसु० ॥ इति इक्कीसवीं पूजा ॥

अथ बाईसवीं श्रीनेमी जिन पूजा।

॥ दोहा ॥

बावीसम जिन जगगुरु, ब्रह्मचारी विख्यात।
इण वंदन चंदन रसे, पाप ताम मिट जात ॥

॥ राग रामगिरी ॥

॥ ढाल ॥

(गात्र लूहैं जिन मन रंगसु रे देवा ए चाल) नेमि जिणंद उर धारिये रे ॥व्हाला०॥

विषय कषाय निवारिये रे ॥ व्हा० ॥ वारिये हां रे व्हाला वारिये । ए जिनने न विसारिये रे ॥ १ ॥ जल धर जिम प्रभु गरजता रे ॥ व्हा० ॥ देशना अमृत वरसता रे ॥ व्हा० ॥ देस०॥ वरसता हां रे व्हाला वरसतां, भविक मोर सुनि उलसतां रे ॥ २ ॥ समव सरण गिरि परिरह्या रे ॥ व्हा० ॥ भामंडल चपला वह्यारे ॥ व्हाला ॥ चपला वह्या ॥ हां रे च० ॥ सुरनर चातक उमह्या रे ॥ ३ ॥ बोध बीज उपजावियो रे ॥ व्हाला० ॥ भवि उर क्षेत्र वधावियो हां रे ॥ व्हा० भावियो ॥ भविक सुगति फल वावियो रे ॥ ४ ॥

॥ काव्य ॥

सलिल चं० ॐ ह्रीं सम्नेमि जिने० वह्नु०

इति बाईसवीं पूजा ॥

अथ तेईसवी श्रीमत्पार्श्व जिन पूजा।

॥ दोहा ॥

अश्वसेन नंदन सदा, वामोदर खनि हीर।
लोक शिखर शोभे प्रभु, विजित कर्मवड़ वीर॥

॥ राग ॥

॥ ढाल ॥

(वाजै तेरा विछुवा वाजे, ए चाल) पास जिणंदा प्रभु मेरे मन वसोया॥ पा०॥ मेरे मन० मे०॥ शिवकमलानन कमल विमल कल, तर मकरंद पान अति रसिया॥पास जि०॥१॥ वामानन्दन मोहनि मूरत, सकल लोक जनमन किय वसीया॥ पास जि०॥ परम ज्योति मुख चंद विलोकित। सुरनर निकर चकोर हरसिया॥ चकोर ह०॥ पास जि०॥२॥ पूजन गिरि तनु दुति जिन जलधर, देशना अमृतधार वरसिया॥ धार०॥ पास जि०॥ पोय करि

भवि चिरकाल तिरसिया । सुगति युवति तनु तुरत फरसिया ॥ पास जि० ॥ कुमुद सुपद शिवचन्द्र जिणंदनी। वारीजाउ मन मेरो अति ह उलसिया ॥ पास जि० ॥ ४ ॥

॥ काव्य ॥

सलिल० ॐ ह्रीं श्रीमत्पार्श्व जिने० वसु० ॥

इति पार्श्व जिन पूजा ॥

अथ चौवीसवीं श्रीमद्वीर जिन पूजा ।

॥ दोहा ॥

इक्ष्वाकु कुल केतु सम, त्रिसलोदर अवतार।
ए प्रभुनो नित कीजिये,विविध भक्ति सुखकार॥

॥ राग ॥

(तेज तरण मुख राजै, ए चाल) चरम वीर जिनराया ॥हां रे०॥ जिनराया । मेरे प्रभु चरम वीर जिनराया । सिद्धारथ कुल मंदिर ध्वज सम, त्रिशला जननी जाया । निरुपम

सुन्दर प्रभु दर्शन तैं, सकल लोक सुख पाया ॥ मेरे० ॥ १ ॥ वामा चरण अंगुष्ट फरसतें सुरगिरिवर कंपाया । इन्द्रभूति-गणधर मुख मुनिजन, सुरपति वंदत पाया ॥ हां रे मेरे० ॥ २ ॥ वर्तमान शासन सुख-दाया, चिदानंद घनकाया । चन्द्र किरण गुण विमल रुचिर धर, शिवचंद्र गणि गुण गाया ॥ हां० मे० प्र० ॥ ३ ॥ वरसनंद मुनि नाग धरणि सित, द्वितियाशिवन मनभाया । धवल पक्ष पंचमि तिथि शनियुत, पुरजय नगर सुहाया ॥ मे० ॥ ४ ॥ श्रीजिन हर्ष सूरिश्वर साहिब, वर खरतर गच्छराया । क्षेमकीर्ति साखा भूषण मणि, रूपचन्द्र उवझाया ॥ मे० ॥ ५ ॥ महापूर्वजसु भूरि नरेश्वर, वंदे पद उल-साया । तासु शिष्य वाचक पुण्यशील गणि, तसु शिष्य नाम धराया ॥ मे० ॥ ६ ॥ समय

सुन्दर अनुग्रही ऋषिमंडल, जिनकी शोभ सवाया। पूज रची पाठक शिवचंदे, आनंद संघ बधाया ॥ से० ॥ ७ ॥

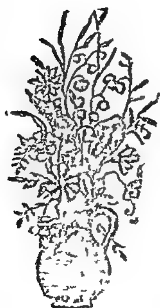
॥ काव्य ॥

सलिलचं० ॐ ह्रीं श्रीमद्वीरजिने० वस० ॥ इति ॥

॥ स्त्रग्धरावृत्त ॥

दुर्व्वारस्फार विस्फोरकट करटि घटोत्पाटन स्पष्ट जाग्रद । वीर्यं प्राग् भारोत्माद चंचत् कुशल हरिदरी जित्वरी दुर्लतानां । संसारापार सिन्धुत्तरण तरतरी भक्ति भाजा मजस्र् । भव्यानां ब्रह्म पर्म्मप्रवण मधुकरी शंकरी शंकरी शा ॥ १ ॥ लोकालोक प्रलोकाख्खलित विमल सद्दर्शन ज्ञान भानुः । श्रीमज्जैनेश्वरीयं

त्रिभुवन विभुतासिश्चतुर्विंशतिश्च । श्रीसिद्धानंत नाथालय विशदलसत् सर्व लोकाग्र भाग । प्रसादाग्र प्रदेशे जगति विजयते वैजयंती जयंती ॥ २ ॥ इति ऋषिमंडल स्तुतिः ॥



अथ सुगणचंद्रोपाध्याय कृत ।

पंचपरमेष्टी पूजा ।

—*※※※*—

प्रथम अरिहंतपद पूजा ।

॥ दोहा ॥

ॐकार बीज आदे नमूं, गीर्वाणी सुखदाय ।
तुं तूठी पंडित करे, पूजे सुरनर राय ॥
ॐनमो गुरु देवकुं, भाषा सरस बनाय ।
पाहणाथी पल्लव करे, उपगारी सिर राय ॥
प्रथम नमूं अरिहंतजी, दूजा सिद्ध अनंत ।
तीजा सूर सदा नमूं, उपगारी भगवन्त ॥
वलि उवझाया वंदिये, गुण पचवीस प्रधान ।
द्वादश अंग परूपता, नहीं विकथा नहीं मान ॥
पंचम पद मुनिराजनो, दो भवि इक तार ।
गुण सत्ताविस सोभता, करुणा रस भंडार ॥

पांचोको भेंडो सुणो, मूरख लोक अजाण ।
ए पांचू परमेष्टि है, अनुपम सुखकी खाण ॥
उज्वल वरण विराजता,कुमति हरण सुभ लेश।
अरिहंत पद पूजा करो, सेवत सदा सुरेश ॥
अष्ट द्रव्य लेई करी, पूजो अरिहंत देव ।
पूजत अनुभव रस मिले, पावो सुख नितमेव ॥
प्रथम पद ओंकार है, अतिसय जास अनंत ।
तीन लोकना राजवो, सेवे सुर नर संत ॥

॥ ढाल होलोरी ॥

बलिहारी सुखकर जिनवरकी । सब देवन में देव नगीनो, महिमा अधिकी मुनिवरकी ॥ ब० ॥ १ ॥ कोई ध्यावे हरि हर ब्रह्मा, कोई कई मेरे वाला जी ॥ ब० ॥ कोई नरसिंघ देव कुं ध्यावे, कोई कहे मेरे ज्वाला जी ॥ ब० ॥ २ ॥ मेरे परसन तुम ही आए, वीतराग गुण वाला जी ॥ब०॥ अवर देव सब काच कथोरा,

तुम हो अमोलक हीरा जी ॥ व० ॥ ३ ॥ राग द्वेष तुम पास नहीं हैं, बाइस परिसह धीरा जी ॥ व० ॥ तेरी सुरतकी बलिहारी, क्या कहु अजब असीरा जी ॥ व० ॥ ४ ॥ कोड देवता हाजर रहता, असाहु ते वडवीरा जी ॥ व० ॥ जगजीवन जगलोचन कहिये, तुम सम अवर न धीरा जी ॥ व० ॥ ५ ॥ तेरे गुणको पार न पाये, सुरनर राय वजीरा जी ॥ व० ॥ बारै गुण प्रभु ऊपर सोहे, वृक्ष अशोक उदारा जी ॥ व० ॥ ६ ॥ तीन छत्र भामंडल पूठै, ध्वजा फुरक रही सारा जी ॥व०॥ पृथ्वी पीठ सिंहासन ऊपर, राजत हो वडवीरा जी ॥ व० ॥७॥ पान फूल करके बहु सोभित, राजत हो गुण पूरा जी ॥ व० ॥ सहस जोजनको इंद्रध्वजा, प्रभु आगल चालत सारा जी ॥ व० ॥ ८ ॥ महा गोप महामाहण कहिये, निर्यामिक सथ-

वारा जी ॥व०॥ ऐसे अरिहंत पदकी महिमा, सुणियो तुम सब प्यारा जी ॥ व० ॥ ६ ॥ तीनलोकमें इनका झंडा, पूजत है इकतारा जी ॥ व० ॥ अष्ट द्रव्यसे पूजा करतां, सदा हुवे जयकारा जी ॥व०॥ धरम विशाल दयाल पसाये, सुमति कहे गुण सारा जी ॥ व० ॥ १० ॥ ॐ ह्रीं परमात्मने पंचपरमेष्टीमहामंत्र-राजाय अरिहंतपदे अष्टद्रव्यं यजामहे स्वाहा ॥ इति अरिहंतपद पूजा ॥

अथ बीजी सिद्धपद पूजा ।

॥ दोहा ॥

दूजी पूजा सिद्धनो, करो भविक गुणवंत ।
धजा चढावो भावसुं, लाल वरण मतिवंत ॥
गुण इकतीस विराजता, तीनलोक सिर छत्र ।
अनंत चतुष्टय धारता, जगजीवन जगमित्र ॥

॥ ढाल ॥

(भवि पनरस पद गुण गाणा हो, ए चाल) भवि सिद्धपदके गुण गाना हो ॥भ०॥ पनरे भेदे सिद्ध विराजै, भवि तुम चित्तमें लाना हो ॥भ० सि०॥ जिन २ तीरथ तीरथ कहीयें, अन्य सलिंग कहाना हो ॥ भ० सि० ॥ १ ॥ स्त्री पुरुषादिक लिंगे जाये, कृत्य नपुंसक गाना हो ॥ भ० सि० ॥ प्रत्येक बुद्ध ने सहसंबुद्धा, बुद्ध बोधित सुप्रमाना हो ॥ भ० सि० ॥ एक अनेक और एक समये, गुरु सुखथी सुद्ध पाना हो ॥ भ० सि० ॥ अष्ट सिद्धि नवनिधिके दाता, तुम हो देव निधाना हो ॥ भ० सि० ॥ ३ ॥ सादी अनंत तुम सुखके भोगी, जोगीसर लय लाना हो ॥ भ० सि० ॥ शब्द रूप रस गंध फरसकुं, जीत भए मुनी माना हो ॥ भ० सि० ॥ ४ ॥ अव्याबाध सुखके तुम रसिये,

भव्य सकल सुख दाना हो ॥ भ० सि० ॥ घाति अघाति दूर करीने, जोतमें जोत समाना हो ॥ भ० सि० ॥ ५ ॥ पेतालोस लख जोजन शिल्ला, उज्जल वरण कहाना हो ॥ भ० सि०॥ ऊपर जोजन भाग चोइसमें, सिद्ध प्रभु ठह-राना हो ॥ भ० सि० ॥ ६ ॥ तिहां श्रीसिद्ध सदा जयवंता, परम गुरू परधाना हो ॥ भ० सि० ॥ अनंत गुणाकर ज्ञान दिवाकर, इनके गुण नित गाना हो ॥ भ० सि० ॥७॥ लवधि रिद्धि सब सिद्धिके दाता, परम इष्ट सुखदाना हो ॥भ० सि०॥ चरम विशाल दयाल पसाये, सुमति कहै वुधवाना हो ॥ भ० सि० ॥ ८ ॥ ॐ ह्रीं परमात्मने अष्टद्रव्यं यजामहे स्वाहा ॥ इति सिद्धपद पूजा २ ॥

अथ तीजी आचार्य पद पूजा ।

॥ दोहा ॥

तीजे पदकुं नित नमुं, आचारज गुणवान ।
गुण छत्तीस विराजता, जिनवरके परधान ॥
प्रतिरूपादिक गुण करी, राजे सूर समान ।
जातिवंत कुलवंत हे, नहि विकथा नही मान ॥
भव्य सकलकुं तारवा, दे साचो उपदेश ।
कुमति सदा दूरे करे, सुमति पाले हमेश ॥
ऋद्ध सिद्ध कारण पूजिये, पीले रंग प्रधान ।
गणधारक गुरु गछपति, जुग प्रधान सुजान ॥

॥ ढाल ॥

(मह्ो जिनंद सुखकारी रे वाला, ए चाल) आचारज सुखकारी रे, वाला ॥आ०॥ पंचाचार विराजत जगमणि, सहस किरण अवतारी रे ॥ वा० आ० ॥ प्रतिरूपादिक गुण जसु छाजे, मोह माया परिहारी रे ॥वा० आ०

॥ १ ॥ राग द्वेषकुं दूर निवारे, समता रस भंडारी रे ॥ वा० श्रा० ॥ क्रोध मान माया नहि जिनके, विकथा दूर निवारी रे ॥ वा० श्रा० ॥ २ ॥ तेज करी सूरज सम सोभित, मिथ्यातमके वारो रे ॥ वा० श्रा० ॥ क्षमा अधिक जगमें जसु राजे, विषय विकार निवारी रे ॥ वा० श्रा० ॥ ३ ॥ हृदय गंभीर सहाजस निरमल, रूपाधिक मनुहारी रे ॥ वा० श्रा० ॥ देस जात कुल उत्तम जिनके, मोह्या सब नर-नारी रे ॥ वा० श्रा० ॥ ४ ॥ सुरवर नरवर सेव करत है, जय २ तुम सुखकारी रे ॥ वा० श्रा० ॥ मीठी अमृत वाणी बोले, सुणतां हरष अपारी रे ॥ वा० श्रा० ॥ ५ ॥ पूरव चवद भणया श्रुत सागर लवध अठाइस धारी रे ॥ वा० श्रा० ॥ द्रव्यानुजोगी चरणानु जोगी, करणानुजोगके धारी रे ॥ वा० श्रा० ॥ ६ ॥

गणतानु जोगरू धरमानुजोगी, जाणे आगम सारी रे ॥ वा० आ०॥ धर्म प्रभावक एह कही जे, सूर मंत्रके धारी रे ॥ वा० आ० ॥ ७ ॥ गणधारी गच्छभार धुरंधर, सारण वारणकारी रे ॥ वा० आ० ॥ ज्ञान उजागर विद्यासागर वारी जाऊं वार हजारी रे ॥ वा० आ० ॥८॥ धरम विशाल दयाल पसाये, सुमति कहे जय-कारी रे ॥ वा० आ० ॥ ऐसे गौतमस्वामी कहिये, पूजो कर कइतारी रे ॥ वा० आ० ॥ ६ ॥ ॐ ह्रीं परमात्मने आचार्यपदे अष्टद्रव्यं यजामहे स्वाहा ॥ इति आचार्यपद पूजा ॥३॥



अथ चौथी श्रीउवज्झायपद पूजा ।

॥ दोहा ॥

श्री उवज्झाया वंदिये, प्रेम धरी मन रंग।
चौथे पदमें सोभता, पूजो धर उछरंग ॥

नील वरण ध्वज सुन्दरु, धर लावो शुभ थाल।
अष्ट द्रव्य लेई करी, सेवो दीन दयाल ॥

॥ ढाल ॥

(जिन गुण गाना श्रुत अमृतं, ए चाल)

श्री उवभ्झाया भय हरणं, भय हरणं रे देवा भय हरणं ॥ श्री० ॥ परिहर विषय विकार प्रकारं, ए गुरु है असरण सरणं ॥ श्री० ॥१॥ गुण पचवीस विराजत सुन्दर, देखत सबको मन हरणं ॥ श्री० ॥ तज पुंज रवि शशि सम दीपत, मिथ्या तम दूरे करणं ॥ श्री० ॥ २ ॥ सूत्र अर्थ दाता जगमांहे, मुनि मानसमें जय करणं ॥ श्री० ॥ सारण वायण चोयण करता, पडिचोयण वलि आचरणं ॥ श्री० ॥ ३ ॥ द्वादश अंग पढ्या श्रुतसागर, सुमतीधर कुमती हरणं ॥ श्री० ॥ अतिसय विद्या चूरण जोगे, जिन शासन उन्नत करणं ॥ श्री० ॥ ४ ॥

धरम प्रभावक है उपगारी, ऐसे गुरु तारण तरणां ॥ श्री० ॥ तप जप आदिकनी रूप करता भव्य सकलकुं निसतरणं ॥ श्री० ॥ ५ नवविध ब्रह्मचरजके धारक, दसविध विनय सदा करणं ॥ श्री० ॥ माया ममता दूर निवारी, द्वादस भेदे तप धरणां ॥ श्री० ॥ ६ ॥ शिष्य वरगकुं ज्ञान दान दे, मुरख थी पंडित करणां ॥ श्री० ॥ जगजीवन केहो प्रतिपालक, तुम विन अवर न आभरणां ॥ श्री० ॥ ७ ॥ विन कारण जगमें उपगारी, धन २ तुमरी आचरणां ॥ श्री० ॥ पंच परमेष्टी महामंत्रको, इष्ट सदा दिलमें धरणां ॥ श्री० ॥ ८ ॥ धरम विशाल दयाल पसाये, सुमति करे तुम नित वरणां ॥ श्री० ॥ नवनिध अडसिध मंगलमाला, पूजत जगमें जस वरणां ॥ श्री० ॥ ६ ॥

ॐ ह्रीं परमात्मने सकल पाठकराजाय

अष्टद्रव्यं यजामहे स्वाहा ॥ इति पाठक पद पूजा ॥ ४ ॥

अथ साधुपद पूजा।

॥ दोहा ॥

पंचम पदमें सोभता, साधु सकल गुणवंत।
गुण सतवीस विराजता, महिमावंत महंत ॥
स्याम वरण मुनिवर कह्या, तप करवा अति सूर।
भविक कमल प्रतिबोधता धरता निरमल नूर ॥

॥ ढाल ॥

(सदा सहाइ कुसलसू०, चाल) सदा सहाइ वीर पटोधर, सुणियो भविक उदार ॥ भलाजी गुरु, सु० ॥ सुधरमस्वामी अंतरजामी, तसु नंदन सुखकार ॥ भ० ॥ जंबू आदिक गुण के सागर, ते प्रणमुं हितकार ॥ भ० स०॥१॥ प्रभवादिक सय पांच उदारा, प्रतिबोध्या सुखकार ॥ भ० ॥ सिज्जंभव आदिक जे सूरी, ते

हना शिष्य सुविचार ॥ भ० स० ॥ २ ॥ थूल-
भद्र मोटो ब्रह्मचारी, दुक्कर दुक्करकार ॥ भ० ॥
सिंह गुफा वासी जे मुनिवर, भाषे दुक्कर कार
॥ भ० स० ॥ ३ ॥ वज्रकुमार बडे उपगारी,
प्रतिबोध्या नर नार ॥ भ० ॥ श्रीसिद्धसेन
दिवाकर स्वामी, राखी जगमें कार ॥ भ० स०
॥ ४ ॥ विक्रम आदिक नृप अठारे, प्रतिबोध्या
सुखकार ॥ भ० ॥ एक तीरथकुं परगट करके,
गुरु चरणां व्रतधार ॥ भ० स० ॥ ५ ॥ देवर्द्धी
गणी ए सबमें मोटा, राख्यो ज्ञानज सार
॥ भ० ॥ सूत्र ताडपत्रे धर राख्यो, जेसलमेर
मझार ॥ भ० स० ॥ ६ ॥ अभयदेव सूरी उप
गारी, नव अंग टीकाकार ॥ भ० ॥ हेमाचारज
है वडभागी, जिण कीनो हेमनो पुंज ॥ भ०
स० ॥ ७ ॥ कुमारपालने जिण प्रतिबोध्यो,
भाषी धरमनो गुंझ ॥ भ० ॥ श्रीजिनदत्त

सुरीसर मोटा, कीना श्रावक लाख ॥ भ० स० ॥ ८ ॥ रतनप्रभ सूरी उपगारी, ओस्यानगरनी साख ॥भ०॥ जिहांथी जैन धरम विसतरियो, मोटो कियो उपगार ॥भ० स०॥६॥ इत्यादिक गुणगणके दरिया, सेवो भविक उदार ॥भ०॥ ढंढण आदिक महा तपसूरा, नाम लियां जय-कार ॥ भ० स० ॥ १० ॥ गजसुकसाल महा-मुनि वंदूं, भाव करी इकतार ॥ भ० ॥ धन धन्ना अरू सालभद्रजी; कीनी करणीसार। ॥ भ० स० ॥११॥ खंधकसूरिना शिष्य पांचसै, सूरवीर व्रतधार ॥ भ० ॥ पंचम पदमें ए मुनि पूजो, सदा हुवे सुखकार ॥ भ० स० ॥ १२ ॥ चम आरे छेहडे होसी, दुपसह सूर दयाल ॥ भ० ॥ इत्यादिक ए द्वीप अढीमें, वंदूं साधु कृपाल ॥ भ० स० ॥ १३ ॥ धरम विशाल दयाल पसाये, पूज रची सुखदाय ॥ भ० ॥

सुमति कहै ए पंच परमेष्टी, कामधेनु कहवाय ॥ भ० स० ॥ १४ ॥

॥ ढाल दूजी ॥

चाल पणिहारीकी ॥ सुणा प्याराजी, सुणतां आसीस्वाद ॥ प्याराजी, धरम सनेही साधुजी ॥ सु० ॥ करता पर उपगार ॥ प्या० ॥ लालच लोभ न जेहने, सु० । नहीं राखे द्वेष लगार ॥ प्या० ॥ ममता माया छोड़ीनें, सु० । धारै व्रत सुखकार ॥ प्या० ॥ १ ॥ ग्राम नगर पुर पाटण, सु० । करता धरम व्यापार ॥ प्या० ॥ राग द्वेष मुनिराजने, सु० । नहीं कोई विषय विकार ॥ प्या० ॥ २ ॥ उपगारी सिर सेहरो, सु० । कुमति करे परिहार ॥ प्या० ॥ विन कारण मुनिराजजी, सु० । भव्य जीव हितकार ॥ प्या० ॥ ३ ॥ ज्ञानी ध्यानी सूरमा, सु० । महमा करत नरेस

॥ प्या० ॥ वाणी अमृत सारसी, सु० । सुणतां हरष हमेस ॥ प्या० ॥ ४ ॥ अनेक जीव प्रतिबूझिया, सु० । धरम तणा पर धान ॥ प्या० ॥ माया न करे साधुजी, सु० । नहीं विकथा नहीं मान ॥ प्या० ॥ ५ ॥ पंच महाव्रत धारता, सु० । ऐसे दीन दयाल ॥ प्या० ॥ सुमति धारक पांच छे, सु० । गुपतीना रखवाल ॥ प्या० ॥ ६ ॥ उद्देशक थादे करी सु । कृतकड़ने वलि दूत ॥ प्या० ॥ सिज्यातर राय पिडकुं, सु० । नहीं धारे अवधूत ॥प्या०॥ ७ ॥ कुवचन केहनो सांभली, सु० । न धरे मनमें क्रोध ॥ प्या० ॥ मधुकरनी परे मालता सु० । ऊंच नीच कुलसोध ॥ प्या० ॥ ८ ॥ लाधे भाडो दे देहने, सु० । अणलाधे तप-धार ॥ प्या० ॥ ओसर मोसर देखने, सु० । रस संपट नहीं होय ॥ प्या० ॥ किरिया

करता साधुजी, सु० । आलस न करे कोय ॥ प्या० ॥ ९ ॥ परिसह जीते आकरा, सु० । करम हुवे सब दूर ॥ प्या० ॥ मुनिवर मधुकर सम कह्या सु० । दिन २ वधते नूर ॥ प्या० ॥ १० ॥ जंगम तीरथ सारखा, सु० । धरम तणा आधार ॥ प्या० ॥ एहवा मुनिवर पूजतां, सु० ॥ पावे वंछित सार ॥ प्या० ॥ ११ ॥ धरम विशाल दयालनो, सु । सुमति कहे करजोड़ ॥ प्या० ॥ एहवा श्रीमुनिराजजी, सु० । सुभ माथेका मोड ॥ प्या० ॥ १२ ॥ ॐ ह्रीं परमात्मने सर्व साधुभ्यो अष्ट द्रव्यं यजामहे स्वाहा ॥

अथ कलश ॥



॥ दोहा ॥

अब है पूजा कलसकी, सुणीयो तुम नरनार।
सांभलतां सुख पामसो, सफल हुसी अवतार॥
ऐसो डारु सोहनो, सभा सहु हरखाय।
सेवो जगतको मोहनी, ए जग सार कहाय॥
मंत्र मांहे सिरदार है, पंचपरमेष्टी एह।
सरवारथ सिद्धो कह्यो, गणधर गोतम जेह॥
जेहने एहनी आमता, तेहने एह सहाय।
भागहीन निरबुद्धकुं, होत नहीं फल दाय॥

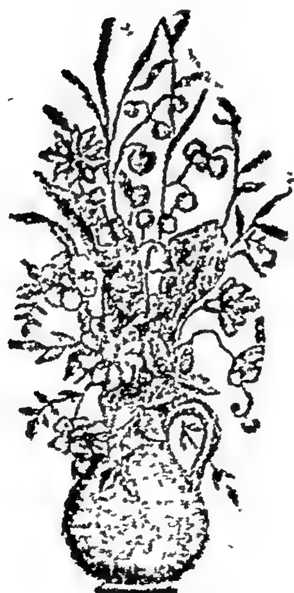
॥ ढाल प्रश्न तथा उत्तर ॥

चंगींमें चंगी कोन जगतको मोहनी, चगीं में चंगो ज्ञान निर्वाणपद मोहनी ॥ १ ॥ सुणी

जगतमें कोन कहो मन भावना, सुखी वो ही संसार परमपद भावना ॥ २ ॥ सब देवनमें देव वडो जिन जाणना ॥ ३ ॥ सबमें मोटो ध्याल कहो कोन साजना, सबमें मोठो ध्यान सुकल तुम जाणना ॥ ४ ॥ धरम वडो जग-मांह कहो कुंण जाणना, दया धरम जगमांह वडे है साजना ॥ ५ ॥ शिव रमणीको नाथ कहो कुंण साजना, शिव रमणीको नाथ सरव सिद्ध जाणना ॥ ६ ॥ धरममें मोटो कौण कहो मेरे साजना, धरम मांह सुभ भाव सुणो मेरे साजना ॥ ७ ॥ दाता कहिये कोन कहो मन भावना, गुरु बड़े दातार धरम धन पावना ॥ ८ ॥ मोठी जगमें कोन कहो मन भावना, मीठी जिनकी वाण धरो चित्त चाहना ॥ ९ ॥ मीठी दाख खजूरके मीठी चाहनी, जिणसे

अधिकी होय वाणी जिनरायनी ॥ १० ॥ सव व्रतमें कुण सार कहो मेरे साजना, सव व्रतमें व्रत सार चोथो व्रत जाणना ॥ ११ ॥ खरतर गच्छपति चंद सूरीश्वर सोहता, सकल विमल गुण गेह भविक मन मोहता ॥ १२ ॥ प्रीत सागर गणि सीस सकल गुण राजता, अमृत धर्म उदार वाचक छाजता ॥ १३ ॥ पाठकमें परधान क्षमा गुण सारता तसु सुत धरम विशाल मुनिव्रत धारता ॥ १४ ॥ सुमति कहे गुण सार भविक मन सोहता, वीकानेर मझार सकल मन मोहता ॥ १५ ॥ संघ सकल सुख-दाय सेवो प्रभु भावसुं, पूज रची चित लाय अधिक भव दावसुं ॥ १६ ॥ संवत सय उग-णीसके तेपन जाणीये, माहा सुद चवदस वार मंगल मन आणिये ॥ १७ ॥ भणतां गुणतां

गृह सदा सुख पामसे, घरघर मंगल माल हुवे जिन नामसे ॥ १८ ॥ इति पंचपरमेष्टी पूजा संपूर्णम् ॥



अथ श्रीदादा साहबकी बडी पूजा ।



पहली स्थापना स्थापन करके आह्वानका श्लोक पढे ।

॥ काव्य ॥

सकलगुणवरिष्ठान् सत्तपोभिर्वरिष्ठान् । शम-
दमयमजुष्टांश्चारुचारित्रनिष्ठान् ॥ निखिलज-
गति पीठे दर्शितात्मप्रभावान् । मुनिपकुशलसू-
रिन् स्थापयास्यत्र पीठे ॥ १ ॥

ॐ ह्रीं श्रीं श्रीजिनदत्त-श्रीजिनकुशल-श्रीजिनचंद्रसूरिगुरो अत्रावतरावतर स्वाहा ॥ ॐ ह्रीं श्रीं श्रीजिनदत्त अत्र तिष्ठ तिष्ठ । ठः ठः ठः स्वाहा ॥ इति प्रतिष्ठापनं ॥

ॐ ह्रीं श्रीं श्रीजिनदत्तसूरिगुरो अत्र मम संनिहितो भव वषट् ॥ इति संनिधिकरणं ॥

अथ जलका कलश लेके स्नात्रीया शुचि होके खड़ा रहे।

अथ स्तुति प्रारंभ।

॥ दोहा ॥

ईश्वर जग चिंतामणी, कर परमेष्ठि ध्यान।
गणधर पद गुण वर्णना, पूजन करो सुजान॥
सौधर्मा सुनिपत प्रगट, वीर जिनेश्वर पाट।
मिथ्या मत तम हरणको, भव्य दिखावन वाट॥
सुस्थित सुप्रतिबुद्ध गुरु, सूरि मंत्रको जाप।
कोटि कियो जब ध्यान धर, कोटिक गच्छ सुथाप॥
दशपूर्वी श्रुतकेवली, भये वज्रधर स्वाम।
ता दिनतें गुरुगच्छको, वज्र शाख भयो नाम॥
चंद्रसूरि भये चंद्र सम, अतिहि बुद्धि निधान।
चंद्रकुली सब जगतमें, पसर्यो बहु विज्ञान॥
वर्द्धमानके पाट पद, सूरि जिनेश्वर भाश।
चैत्यवासीको जीत कर, सुविहित पक्ष प्रकाश॥

अणहिलपुर पाटण सभा, लोक मिले तिहाँ लक्ष।
खरतर बिरुद सुधानिधि, दुर्लभराज समक्ष ॥
अभयदेव सूरि भये, नव अंग टीकाकार।
थंभण पारस प्रगट कर, कुष्ठ मिटावन हार ॥
श्रीजिनवल्लभ सूरि गुरु, रचना शास्त्र अनेक।
प्रतिबोधे श्रावक बहुत, ताके पट्ट विशेष ॥
हुंबड श्रावग बाघडी, अट्ठारे हजार।
जैन दयाधर्मी किये, वरते जय जयकार ॥
दादा नाम विख्यात जस, सुर नर सेवक जास।
दत्तसूरि गुरु पूजतां, आनंद हर्ष उल्लास ॥
दिल्लीमें पतसाहने, हुक्म उठाया शीष।
मणिधारी जिनचंद गुरु, पूजो विसवावीस ॥
ताके पट्ट परंपरा, श्री जिनकुशल सूरींद।
अकबरको परचा दिया, दादा श्री जिन चंद ॥
ऐसे दादा च्यारको, पूजो चित्त लगाय।
जल चंदन कुसुमादि कर, ध्वज,सौगंध चढाय ॥

॥ चाल ॥

(दादा चिरं जीवो, ए देशी) गुरुराज तणो कर पूजन, भवि सुखकर मिलसी लब्धि घणी ॥ ए आंकणी ॥ गुरु दत्तसूरींद जग सुखकारी, गुरु सेवकने सानिध्यकारी । गुरु चरण कमलकी बलिहारी ॥ गु० ॥१॥ संवत इग्यारे वार शशी, बत्तीसे जनम्यां शुभ दिवसी । श्रावग कुल हुंबडने हुलसी ॥ गु० ॥२॥ जसु वाछगसा पितु नाम भणे, वाह्डदे माता हर्ष घणो । इकतालीसे दीक्षा पभणे ॥ गु० ॥ ३ ॥ गुणहतरे वल्लभ पाट धरी, गुरु माया बीजनो जाप करी । गुरु जगमें प्रगट्या तरणतरी ॥गु० ॥ ४ ॥ मणिधारी जिनचंद उपगारी, जिनदत्त सूरींदके पटधारी । भये दादा दूजा सुखकारी ॥ गु० ॥ ५ ॥ राशल पितु देल्हणदे माता, श्रीमाल गोत्र बोधन शाता । दिल्ली पतसाह

सुगुण गाता ॥ गु० ॥ ६ ॥ जसु चौथे पाट उद्योत करो, जिनकुशल सूरींद अति हर्ष भरी। तेरासै तीसे जन्म धरी ॥ गु० ॥ ७ ॥ जसु जिल्ला जनक जगत्र जीयो, वर जैतश्री शुभ स्वपन लीयो। गुरु छाजेड गोत्र उद्धार कीयो ॥ गु० ॥ ८ ॥ धन सेंतालीसे दीक्ष धरी, जिन्चंद सूरीश्वर पाट वरी। गुणहत्तरे सूरिमंत्र जाप करी ॥ गु० ॥ ६ ॥ सेवामें वावन वीर खरा, जोगणीयां चौसठ हुक्म धरा। गुरु जगमें केइ उपकार करा ॥ गु० ॥ १० ॥ माणक सूरीश्वर पद छाजे, जिनचंद सूरि जगमें गाजे। भये दादा चौथे सुख काजे ॥ गु० ॥ ११ ॥ जिन चांद उगायो उजियालो, अम्मावसको पूनमवालो। सब श्रावक मिल पूजन चालो ॥ गु० ॥ १२ ॥ जिन अकब्बरको परचा दीना, काजीकी टोपी वश कीना। वकरीका भेद कह्या

तीना ॥ गु० ॥ १३ ॥ गंधोदक सुरभि कलश भरी, प्रक्षालन सद्गुरु चरण परी । या पूजन कवि ऋद्धिसार करी ॥ गु० ॥ १४ ॥

॥ श्लोक ॥

सुरनदीजलनिर्म्मलधारकैः । प्रबलदुष्कृतदाघनिवारकैः ॥ सकल मंगल वांछितदायकं । कुशलसूरिगुरोश्चरणौ यजे ॥

ॐ ह्रीं श्री परमपुरुषाय परमगुरुदेवाय भगवते श्रीजिनशासनोद्दीपकाय श्रीजिनदत्तसूरीश्वराय मणिमंडितभालस्थालय श्रीजिनचंद्रसूरीश्वराय श्रीजिनकुशलसूरीश्वराय अकब्बरअसुरत्राणप्रतिबोधकाय श्रीजिनचन्द्रसूरीश्वराय जलं निर्वपामि ते स्वाहा ॥

अथ बीजी केशरचन्दन पूजा ।

॥ दोहा ॥

केसर चंदन मृगमदा, कर घनसार मिलाप ।
परचा जिनदत्त सूरिका, पूज्यां तूटे पाप ॥

(चाल वीणा वाजेकी,) दीनके दयाल राज सार सार तूं ॥आंकणी॥ आये भरुअछ नग्र,धाम धूम धूं । वाजते निशान ठोर, हर्ष रंग हूं ॥ह०॥दी०॥१॥ मुसलमान मुगलपूत, फोज मोजसूं । भोत मोत हो गया, हायकार सूं ॥ हा० ॥ दी० ॥ २ ॥ सघ्न विघ्न देख आप,हुक्म दीन यूं । लावो मेरे पास आश, जीव दान दूं ॥ जो० ॥ दी० ॥ ३ ॥ मृतक पूत मंत्रसे, उठाय दीन तूं । देखके अचंभ रंग, दास खास कूं ॥ दा० ॥ दी० ॥ ४ ॥ करत सेव भाव पूर, तुर्कराज जूं । छोडके अभक्ष्य खाण, हाजरी भरूं ॥ हा० ॥ दी० ॥ ५ ॥ बीज

खोजके पडो, प्रतिक्रमणके मूं । हाथसे उठाय पात्र, ढांक दीन छूं ॥ढां०॥ दी० ॥६॥ दामनी अमोल बोल, सिद्धराज तूं । देउं वरदान छोड, बंध कौन क्यूं ॥ बं० ॥ दी० ॥ ७ ॥ दत्त नाम जपत जाप, करत नांह चूं । फेर मैं पडूंगी नांह, छोड दीन फूं ॥ छो० ॥ दी० ॥ ८ ॥ करोगे निहाल आप, पाव पलकनूं । रामऋद्धिसार दास, चरण छांह लूं ॥ च० ॥ दी० ॥ ६ ॥

॥ श्लोक ॥

मलय चंदन केसर वारिणा, निखिल जाड्यरुजातपहारिणा ॥ सकल० ॥ ॐ ह्रीं श्रीजिनदत्त० केसर चंदनं निर्व्वपामि ते स्वाहा ॥ २ ॥

अथ तीजी पुष्प पूजा ।

॥ दोहा ॥

चंपा चमेली मालती, मरुवा अरु मचकुंद ।
जो चाढे गुरु चरणपर, नित घर होय आनंद ॥

॥ राग माड ॥

(नींद तो गइ वादीला मारी, ए चाल)
गुरु परतिख सुर तरु रूप, सुगुरु सम दूजो तो नहीं । दूजो तो नहीं रे सुमतिजन, दूजो तो नहीं गुरु परतिख सुरतरु रूप, सुगुरुने पूजो तो सही ॥ए आंकणी॥ चितोड नगरी वज्रथंभसें, विद्या पोथी रही रे ॥ सु० ॥ वि० ॥ हेजी मंत्र जंत्र विद्यासे पूरी, गुरु निज हाथ ग्रही ॥ गु० ॥ गुरु पर० ॥१॥ पुर उजेणी महाकालके, मंदिर थंभ कहो रे ॥ सुम० ॥ हेजी सिद्धसेन दिन-करकी पोथी, विद्या सर्वे लहीरे ॥ सु० वि०

गुरुप० ॥२॥ उजेणी व्याख्यान बीचमें,श्राविका रूप ग्रहीरे ॥ सु० श्रा० ॥ हेजी जोगणीयां छलनेको आई, सबको कील दई ॥ स० गु० ॥ ३ ॥ दीन होय जोगणीया चोसठ, गुरुकी दासी भई रे ॥ सु० गु० ॥ हेजी सात दीये वरदान हरषसें, पसर्या सुजस मही ॥ प० गु० ॥ ४ ॥ पुष्पमाल गुरुगुणकी गूंथी, चाढ़ो चित्त चहो रे ॥ सु० चा० ॥ हेजी कहे राम-ऋद्धिसार सुजसकी, बूंटी आप दई ॥ बूं० गु० ॥ ५ ॥

॥ श्लोक ॥

कमलचंपमकेतकिपुष्पकैः, परिमलाहृतषट्पदवृंदकैः ॥ सकल० ॥

ॐ ह्रीं श्रीं श्रीजिनदत्त० पुष्पं निर्व्वपामि ते स्वाह ॥ ३ ॥

अथ चतुर्थ पूजा।

॥ दोहा ॥

धूप पूज कर सुगुरुकी, पसरे परिमल पूर।
जस सुगंध जगमें वधे, चढे सवाया नूर॥

॥ राग सोरठ ॥

(कुबजाने जादू डारा, ए चाल) अंबिका बिरुद बखाणे गुरु तेरो, अंबिका। तुम युग प्रधान नहीं छाने गु० ॥ ए आंकणी ॥ गढ गिरनारपे अंबड श्रावक, ऐसो नियम चित्त ठाणे। युग प्रधान इस जुगमें कोई, देखुं जन्म प्रमाणे ॥ गु० अं० ॥ १ ॥ कर उपवास तीन दिन बीते, प्रगटी अंबा ज्ञाने। प्रगट होय करमें लिख दीना, सुवरण अक्षर दाने ॥ गु० अं० ॥ २ ॥ या गुण संयुत अक्षर वांचे, ताको युग वर जाने। अंबड मुलक मुलकमें फिरता, सूरि सकल पतवाने ॥ गु० अं० ॥ ३ ॥ आया

पास तुम्हारे सद्गुरु, कर पसार दिखलाने। वासक्षेप उन ऊपर डाला, चेला बांच सुनाने॥ गु० अं० ॥ ४ ॥ सर्व देव हैं दास जिनोंके, मरु-धर कल्प प्रमाणे। युगप्रधान जिनदत्त सूरीश्वर, अंबड शीष झुकाने ॥ गु० अं० ॥ ५ ॥ उद्योतन सूरिने निज हाथे, चौरासी गछ ठाने। सो सब तुमरी सेवा सारे, चोरासी गछ माने ॥ गु० अं० ॥ ६ ॥ जो मिथ्यात्वी तुमको न पूजे, सो नहीं तत्त्व पिछाने। भद्रबाहु स्वामी तुम कीर्त्तन, कीनी ग्रन्थ प्रमाणे ॥ गु० अं० ॥ ७ ॥ युगप्रधान परिकोग्गा गंडिका, गण-धर पद श्रुति स्थाने। कहे रामऋद्धिसार गुरु-की, पूजा धूप कराने ॥ गु० अं० ॥ ८ ॥

॥ श्लोक ॥

अगर चंदन धूपदशांगकैः, प्रसरिताऽखिल-दिक्तु सुधूम्रकैः ॥ सकल सं० ॥ ४ ॥

ॐ ह्रीं श्रीं पर० धूपं निर्व्वपामि ते स्वाहा ॥ ४ ॥

अथ पंचम दीप पूजा।

—*—

॥ दोहा ॥

दीप पूज कर सुगुण नर, नित नित मंगल होत।
उजयाला जगमें जुगत, रहे अखंडित जोत ॥

(चाल ख्यालकी) पूजन कीजोजी नरनारी, गुरु महाराजको। हो पू० ॥ आंकणी ॥ सिंधु देशमें पंच नदी पर साधे पांचो पीर ॥ लोई ऊपर पुरुष तिराये। ऐसे गुरु सधीर ॥ पू० ॥ १ ॥ प्रगट होयके पांच पीरने। सात दीये वरदान ॥ सिंधु देशमें खरतर श्रावक। होवेगा धनवान ॥ पू० ॥ २ ॥ सिंधु देश सुलतान नगरमें बड़ा महोत्सव देख ॥ अंबड़ ओर गच्छका श्रावक। गुरुसे कीना द्वेष ॥पू०॥३॥

अणहिलपुर पत्तनमें आवो। तो मैं जाणु सच्चा॥ बड़े महोत्सव आवेंगे तूं। निर्धन होगा कच्चा॥ पू० ॥ ४ ॥ पत्तन बीच पधारे दादा। सन्मुख निर्धन आया॥ गुरु बतलाया अंबड। अहंकार फल पाया॥ पू० ॥५॥ मनमें कपट किया अंबडने, खरतर महिमा धारी। झहर दिया उन अशन-पानमें गुरु विध जाणी सारी॥ पू० ॥ ६ ॥ भणशाली मुख्य वर श्रावकसे, निर्विष मुद्री मंगाई। झहर उतारा तब लोकोंमें, अंबड निंदा पाई॥ पू० ॥ ७ ॥ मरके व्यंतर हुवा वो अंबड, रजोहरण हर लीना। भणशाली व्यंतर वचनोंसे, गोत्र उतारा कीना॥ पू० ॥८॥ सज्ज होय गुरु ओघा लेके, गोत्र बचाया सारा। ऋद्धिसागर महिमा सद्गुरुकी, दीपक का उजियारा॥ ० ॥ ९ ॥

॥ श्लोक ॥

अतिसुदीप्तिमयैःखलु दीपकैः विमलकंचन-
भाजनसंस्थितैः ॥ सकल० ॥

ॐ ह्रीं परम० दीपं निर्वपामि ते स्वाहा
॥ ४ ॥

अथ षष्ठ अक्षत पूजा।

॥ दोहा ॥

अक्षत पूजा गुरु तणी, करो महाशय रंग।
क्षति न होवे अंगमें, जीते रणमें जंग॥

॥ राग आशावरी ॥

(अवधू सो जोगी गुरु मेरा, ए चाल)
रतन अमोलख पायो, सुगुरु सम रतन अमो-
लख पायो। गुरु संकट सब ही मिटायो॥ सु०
॥ ए आंकणी॥ विक्रमपुर नगरी लोकनको,
हैजा रोग सतायो। बहोत उपाय किया शांति-
नका, जरा फरक नहीं आयो॥ सु० र० ॥१॥

जोगी जंगम ब्रह्म सन्यासी, देवी देव मनायो। फरक नहीं किनहीने कीना, हाहाकार मचायो ॥ सु० र० ॥ २ ॥ रतन चिंतामणि सरिखो साहिब, विक्रमपुरमें आयो। जैन संघका कष्ट दूर कर, जय जयकार वरतायो ॥ सु० र० ॥३॥ महिमा सुण माहेश्वर ब्राह्मण, सब ही शीश नमायो। जीवित दान करो महाराजा, गुरु सब यों फरमायो ॥ सु० र० ॥ ४ ॥ जो तुम समकित व्रतको धारो, अबही कर दूं उपायो। तहत वचन कर रोग मिटायो, आनंद हर्ष वधायो ॥ सु० र० ॥ ५ ॥ जो कोई श्रावक व्रत नहीं धार्यो, पुत्री पुत्र चढ़ायो। साधु पांच दीक्षित कीना, साधवियां समुदायो ॥ सु० र० ॥ ६ ॥ मंत्रकला गुरु अतिशय धारी, ऐसो धर्म दीपायो। ऋद्धिसार पर किरपा कीनो, साचो इलम बतलायो ॥ सु० र० ॥ ७ ॥

॥ श्लोक ॥

सरलतन्दुलकैरतिनिर्मलैः प्रवरमौक्तिक-पुंजवदुज्वलैः ॥ सकल० ॥ ॐ ह्रीं श्री प० अक्षतं निर्व्वपामि ते स्वाहा ॥ ६ ॥

अथ सप्तम नैवेद्य पूजा ।

॥ दोहा ॥

नैवेद्य पूजा सातमी, करो भविक चित चाव ।
गुरुगुण अगणित कुण गिणे,गुरुभव तारणनाव॥

॥ राग कल्याण ॥

(तेरी पूजा बणी हे रसमें, ए चाल) गुरु किया असुरको वशमें, हो गुरु० ॥ए आंकणी॥ वडनगरीमें आप पधारे, सांभेला धसमसमें । ब्राह्मण लोक बड़े अभिमानो, मिलकर आया सुसमें, हो० गु० ॥ १ ॥ महिमा देख सक्या नहीं गुरुकी, भरे मिथ्यात्वी गुसमें । मृतक गउ जिन मंदिर आगे,रख दी सनमुख चसमें

॥ हो० गु० ॥२॥ श्रावक देख भये आकुलता, कहे गुरुसे कसमें । चिंता दूर करो हे संघकी, गउ उठ चालो डसमें ॥ हो० गु० ॥ ३ ॥ मरी गउको जीनी कीनी, लोक रह्या सब हसमें । जाके गाय पडी रुद्रालय, संघ भया सब सुखमें ॥हो०गु०॥४॥ ब्राह्मण पांव पड्या सब गुरुके देख तमासा इसमें । हुकम उठावेंगे शिर ऊपर, तुम संततिको विशमें ॥ हो० गु० ॥ ५ ॥ नमस्कार है चमत्कारको, कीनी पूजा रसमें । कहे रामऋद्धिसार गुरुको, आनंद मंगल जशमें ॥ हो० गु० ॥ ६ ॥

॥ श्लोक ॥

बहुविधैश्चरुभिर्वटकैर्घृतैः, प्रचुरसर्प्पिषि पक्वसुव्यञ्जकैः ॥ सकल० ॥ ॐ ह्रीं श्री प० नैवेद्यं निर्व्वपामि ते स्वाहा ॥ ७ ॥

अथ अष्टमी फल पूजा ॥

॥ दोहा ॥

फल पूजासे फल मिले, प्रगटे नवे निधान।
चिहुं दिशि कीर्ति विस्तरे,पूजन करो सुजान॥

॥ राग ॥

(रथ चढ यदुनंदन आवत है, ए चाल)
चालो संघ सव पूजनको गुरु समर्यां सनमुख आवत हे रे, ॥ चा० ए आंकणी ॥ आनंदपुर पट्टनको राजा, गु शोभा सुण पावत है रे ॥ चा० ॥ भेज्या निज परधान वुलाने, नृप अरदास सुणावत है रे ॥ चा० ॥ १ ॥ लाभ जाण गुरु नगर पधारे, भूपति आय वधावत है रे, ॥ चा० ॥ राजकुमरका कुष्ट मिटायो, अचरज तुरत दिखावत है रे ॥ चा० ॥ २ ॥ दश हजार कुटुम्व संग नृपको, श्रावक धर्म धरावत है रे ॥ चा० ॥ प्रतापगढको पम्मर राजा, पुरमें

गुरु पधरावत है रे ॥ चा० ॥ ३ ॥ दया मूल आज्ञा जिनवरकी, बारह व्रत उचरावत है रे ॥ चा० ॥ ऐसे च्यार राज समकितधर, खरतर संघ बणावत है रे ॥ चा० ॥ ४ ॥ कुष्ठ जलंदर क्षयी भगंदर, कइयक लोक जीवावत है रे ॥ चा० ॥ ब्राह्मण क्षत्री अरु माहेश्वर, ओस वंश पसरावत है रे ॥ चा० ॥ ५ ॥ तीस हजार एक लख श्रावक, महिमा अधिक रचावत है रे ॥ चा० ॥ कहत राम ऋद्धिसार गुरुकी, फल पूजा फल पावत है रे ॥ चा० ॥ ६ ॥

॥ श्लोक ॥

पनसमोचसदाफलकर्कटैः, सुसुखदैः किल श्रीफलचिर्भटैः । सकल० ॐ ह्रीं प० फलं निर्व्वपामि ते स्वाहा ॥ ८ ॥

अथ नवमी वस्त्र—अत्तर पूजा।

॥ दोहा ॥

वस्त्र अतर गुरु पूजना, चुवाचंदन चंपेल।
दुस्मन सब सज्जन हुवे, करे सुरंगा खेल॥

(मनडो किम ही न वाजे हो कुंथुजिन, ए चाल) लखमी लीला पावे रे सुंदर, लखमी लीला पावे। जे गुरु वस्त्र चढावे रे, सुं०, सुजस अत्तर महकावे रे, सुं०॥ दुरजन शीश नमावे रे सुं० ए आंकणी॥ दरिया बीच जहाज श्रावक की, डूबण खतरे आवे। साचे मन समरे सद्-गुरुको, दुखकी टेर सुणावे रे॥ सुं०॥ १॥ वाचंता व्याख्यान सूरीश्वर, पंखी रूपे थावे। जाय समुद्रे जहाज तिराई, फिर पीछा जब आवे रे॥ सुं०॥ २॥ पूछे संघ अचरजमें भरीयो, गुरु सब वात सुणावे। ऐसे दादा दत्त-कुशल गुरु, परचा प्रगट दिखावे रे॥सुं०॥३॥

बोथर गूजरमल श्रावककी, दादा कुशल तिरावे । सुखसूरि गुरु समयसुंदरकी, जहाज श्रलोप दिखावे रे सुं० ल० ॥४॥ बारेसे इग्गारे दत्तसूरि, अजमेर श्रासण ठावे । उपज्या सौधर्मी देवलोके, सीमंधर फरस्यावे रे ॥सुं०॥ ५ ॥ इक अवतारी कारज सारी, मुक्ति नगरमें जावे । कुशल सूरि देराउर नगरे, भुवनपति सुर थावे रे ॥ सुं० ॥६॥ फागण वदि अम्मा-वस लीधा, पूनम दरश दिखावे । मणिधारी दिल्लीमें पूज्यां, संकट सुपने नावे रे ॥ सुं० ॥ ७ ॥ रथो उठी नहीं केम बादसाह, कांही चरण पधरावे । वस्त्र अतर पूजा सद्गुरुकी, ऋद्धिसार मन भावे रे ॥ सुं० ॥ ८ ॥

॥ श्लोक ॥

अखिलहीरशुभैर्नवचीरकैः, प्रवरप्रावरणैः खलु गंधतः ॥ सकल० ॥

ॐ ह्रीं श्रीं प० वस्त्रं चुवाचंदनपुष्पमालं निर्व्वपामि ते स्वाहा ॥ ६ ॥

दाम ध्वज भरन पूजा।

॥ दोहा ॥

ध्वज पूजा गुरुराजकी, जहके पवन प्रचार।
तीन लोकके शिखर पर, पहुंचे सो नर नार ॥

(जिन गुण गावत सुर सुंदरी रे, ए चाल)
ध्वज पूजन कर हरख भरी रे ॥ध्व० आंकडी॥
सज सोले शिणगार साहेल्यां, श्री सतगुरुके द्वार खरी रे। अपछर रूप सुतन सुक लीनी, ठम ठम पग भणकार करी रे ॥ ध्व० ॥ १ ॥
गावत मंगल देत प्रदक्षिणा, धन धन आनंद आज धरी रे। निर्धनको लखमी चकसावत, पुत्र विना जाके पुत्र करी रे ॥ ध्व० ॥ २ ॥
जो जो परतिख परचा देख्या, सुणो भविक दिल बीच धरी रे। फतेमल्ल भडगतीया

श्रावक, पहली शंका जोर करी रे ॥ ध्व० ॥३॥ परतिख देखु तब मैं जाणु, प्रगट्या तलखिण तरण तरी रे। पुष्पमाल शिर केशर टीका, अधर श्वेत पोशाक धरी रे ॥ ध्व० ॥ ४ ॥ मांग मांग वर बोले वाणी, फरक बतावो गुरु मेघ भरी रे। फरक उगायो दोय लाख पर, तेरी महिमा नित्य हरी रे ॥ ध्व० ॥ ५ ॥ गैन-चंद गोलेछाको तें, परतिख दीना दरस फरी रे। विक्रमपुरमें थंभ तुमारा, चित्र करावत सुरसुन्दरी रे ॥ ध्व० ॥ ६ ॥ थानमल्ल लूणियां पर किरपा, लखमी लीला सहज वरी रे। लखमीपति दूगडकी साहिब, हुंडीकी भुगताण करी रे ॥ ध्व० ॥ ७ ॥ जो उपगार कर्या तें मेरा, दीनी सनमुख अमृत भरी रे। तेरी कृपासें सिद्धि पाई, जागे जस अरु भाग भरी ॥ ध्व० ॥ ८ ॥ भूखा भोजन तिसिया पानी,

भरत हाजरी देव परी रे। विषम वखत पर सहाय हमारी, ऋद्धिसारको गरज सरी रे॥ ध्व० ॥ ६ ॥

॥ श्लोक ॥

मृदुमधुरध्वनिकिङ्किणीनादकैर्ध्वजविचित्रितविस्तृतवासकैः ॥ सकल० ॥

शिखरोपरि ध्वजां आरोपयामि स्वाहा।

॥ दोहा ॥

भट्टारक पदवी मिली, जीते वादी वृन्द।
कंठ विराजत सरस्वती, जगमें श्रीजिनचंद॥

॥ राग आशावरी अथवा धन्याश्री ॥

पूजा जगे सुखकारी सुगुरु तेरी पूजा० । तेरे चरण कमल वलिहारी ॥ सु० ॥आंकडी॥ साह सलोम दिल्लीको बादस्या, सुणके शोभ तिहारी। भट्ट हरायो चरचा करके, भट्टारक पद धारी ॥ सु० ॥ १ ॥ अम्मावलको पूनम

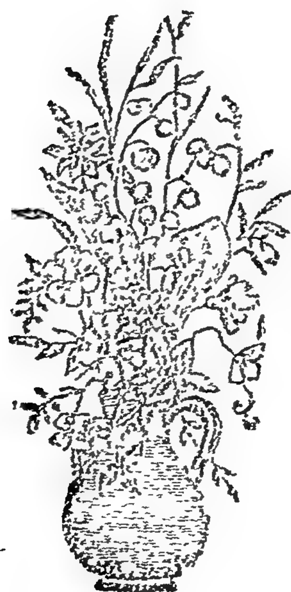
कीनी, चंद उगायो भारी । चढके गगन करी है चरचा, सूरजसे तप धारी ॥ सु० ॥ २ ॥ उगणीसे चौदेको सालमें, लखनउ नगर मझारी । गोरा फिरंगी टोपीवाला, दिलमें यह बात विचारी ॥ सु० ॥ ३ ॥ जैन श्वेतांवर देव जो सच्चा, पूरे मनसा हमारी । वाणी निकसी राज्य तुमारा, होवेगा अधिकारी ॥सु० ॥ ४ ॥ अंधेको खोली आंख सुरतमें, पूजे सब नर नारी। कहां लग गुण वरणु मैं तेरा, तूं ईश्वर जयकारी ॥ सु० ॥ ५ ॥ उगणीसे संवत्सर तेपन, मिगसर मास मझारी । शुक्ल दूज जिनचंद सूरीश्वर, खरतर गच्छ आचारी ॥ सु० ॥ ६ ॥ कुशल सूरिके निज संतानी, क्षेमकीर्त्ति मनुहारी । प्रतिबोध्या जिन क्षत्री पांचसे । ज्ञान सहित अणगारी ॥ सु० ॥ ७ ॥ क्षेमधाड़ शाखा जब प्रगटी, जगमे आनंद-

कारी। धर्मशील साधु गुण पूरे, कुशल निधान उदारी ॥ सु० ॥ ८ ॥ या पूजन करता सुख आनंद, अन धन लखमी सारी ॥ कहत राम ऋद्धिसार गुरुकी, जय जय शब्द उचारी ॥ ॥ सु० ॥ ९ ॥ इति श्रीदादासाहबकी बड़ी पूजा ॥

अथ आरती।

जय जय गुरु देवा, आरति मंगल मेवा, आनन्द सुख लेवा ॥ ज० ॥ आंकणी ॥ इक व्रत दु व्रत तीन चार व्रत, पंचम व्रत सोहे। जगत जीव निसतारण, सुर नर मन मोहे ॥ ज० ॥ १ ॥ दुःख दोहग सब हरकर सद-गुरु, राजन प्रतिबोधे। सुल लखमी वर देकर श्रावक कुल सोधे ॥ ज० ॥ २ ॥ विद्या पुस्तक

धर कर सद्गुरु, सुगल पूल तारे। वस कर जोगण चोसठ, पांच पीर सारे ॥ ज० ॥ ३ ॥ संत्र कलाधारी। नितधारी। नित उठ ध्यान लगावत, मन वंछित फल पावत, राम ऋद्धि सारी ॥ ज० ॥ ४ ॥ इति आरती ॥



कविवर समयसुन्दरजीकृत चौवीसी

—**—

प्रथम ऋषभ जिन स्तवन।

॥ राग मारु ॥

ऋषभ देव मोरा हो २। पुन्य संयोगे पामियो स्वामी दरसण तोरा हो ॥ १ ॥ चौरासी लख हूं भम्यो, स्वामी भवना फेरा हो। दुःख अनंता मैं सह्या, तिहां बहुतेरा हो ॥२॥ चरण न छोडूं ताहरा स्वामी, अबको चेरा हो। समय सुन्दर कहे स्वामी, तुम थी कोन भलेरा हो ॥ ३ ॥ ऋ० ॥

बीजो अजित जिन स्तवन।

॥ राग गोडी ॥

अजित जिन अतुल बली हो। मोह महाबल हेले जीत्यो, मदन महिपति फौज दली हो ॥ १ ॥ अ० ॥ पूर्णचन्द्र जिसो मुख तेरो, दंत

पंक्ति मचकुंद कली हो ॥ अ० ॥ सुन्दर नयन तारिका शोभित, मानु कमल दल मध्य अली हो ॥ २ ॥ अ० ॥ गज लंछन विजयाको अंगज भेटत भव दुःख भ्रान्ति टली हो ॥ अ० ॥ समय सुन्दर तेरे अजित जिन, गुण गावत मोकूं रंग रली हो ॥ ३ ॥ अ० ॥

तीजो संभव जिन स्तवन।

॥ राग काफी ॥

अहो सखी संभवनाथ रूप सुन्दर सोहे। गुण अनन्त मन मोहन मूरति, सुरनरको मन मोहे ॥ १ ॥ अहो० ॥ समवसरण स्वामी दे देशना, भविक जीव पड़ि बोहे। केवल ज्ञानी धर्म प्रकाशे, वैर विरोध बिगोहे ॥ २ ॥ अहो० भवोदधि पार उतार भगतको, मुक्ति पुरी आरोहे। समय सुन्दर कहे तीन भुवन, जिन सरीखो नहीं कोहे ॥ ३ ॥अहो०॥

चतुर्थ अभिनन्दन जिन स्तवन ।

॥ राग मालवी गोडी ॥

मेरे मन अभिनन्दन देवा । सीस करी मैं तेर आगे, हरिहर आण वहेवा ॥ मेरे० ॥ १ ॥ मूरख कौन चाखे नींव फलकुं, जो लहे वंछित मेवा । तुम भगवत वस्यो चित्त भीतर, ज्युं गजके मन रेवा ॥ मेरे० ॥ २ ॥ तूं समरथ मैं साहिब सेव्यो । भव दुःख भ्रान्ति हरेवा । समय सुन्दर कहे मागत प्रभु एतो, भव भव तुम पद सेवा ॥ मेरे० ॥ ३ ॥

पंचम सुमति जिन स्तवन ।

॥ राग कानड़ो ॥

जिनजी तोरो जिहो (सो) जीहूं होऊं, विनती करूं कर जोड़ि । असरण सरण भगत साधारण, भवोदधि पार उतारो ॥ जि० ॥१॥ पर उपगारी परम करुणा रस, सेवक अपणो

संभारो । भगत अनेक भवोदधि तारो, हम विरीया विचारो ॥ जि० ॥ २ ॥ मेघ मल्हार मात सुमंगला सुत, विनती ए अवधारो । समय सुन्दर कहे सुमति जिनेश्वर, सेवक हूं छूं तुमारो ॥ जि० ॥ ३ ॥

षष्ठम पद्म प्रभु जिन स्तवन ।

॥ राग बेलाउल ॥

मेरो मन मोह्यो जिन मूरतियां । अति सुन्दर मुखकी छवि पेखत, विकसत होत मेरी छतियां ॥ मेरो० ॥ १ ॥ केसर चन्दन मृगमद हाजी, भक्ति करूं बहु भतियां आद्र कुमार तणी परे, बोध बीज प्रापतियां ॥मेरो०॥ पद्म लंछन पद्म प्रभु स्वामी, इतनी करूं विनतियां । समय सुन्दर कहे द्यो मेरे साहिब, सकल कुशल संपतियां ॥ मेरो० ॥ ३ ॥

सप्तम सुपार्श्व जिन स्तवन ।

॥ राग श्रीराग ॥

वितराग तोरो पाय सरणं । दीन दयाल सुपार्श्व जिनेश्वर, योनि संकट दुःख हरणं ॥ ॥ वि० ॥ १ ॥ काशी जन्म मात पृथ्वी सुत, तीन भुवन तिलका भरणं । पर उपगारी तूं परमेश्वर, भव समुद्र तारण तरणं ॥ वि० ॥ २ ॥ अष्ट कर्म मल पंक पयोहर, सेवक सुख संपत्ति करणं । सुरनर कोड़ि निसेवत स्वामी समय सुन्दर प्रणमत चरणं ॥ वि० ॥ ३ ॥

अष्टम चंद्रप्रभु जिन स्तवन ।

राग रामगिरी ॥

चंदनगरी तुम अवतारजी, महसेन नरिंद मल्हारजी । भगवंत कृपा भंडारजी, इक विनतड़ी अवधारजी ॥ १ ॥ स्वामी तारजी, चंद प्रभु स्वामी तारजी । स्वामी ए संसार असार

जी, बहु दुःख अनंत अपारजी । हूं भम्यो अनंती वारजी, मुझ आवागमन निवारजी ॥२॥ स्वामी० ॥ मुझने हिव तूं आधारजी, सरणागत संभारजी । तुझ समो नहीं कोइ संसारजी, समय सुंदर न्याय सुखकारजी ॥ ३ ॥ स्वामी० ॥

नवम सुविधी जिन स्तवन ।

॥ राग कल्याण ॥

प्रभु तेरे गुण अनंत अपार । सहस रसना धर सुरवर, कहत न आवे पार ॥ प्रभु० ॥ १ ॥ कवण अंबर गिणे तारा, मेरू गिरीको भार । चरम सागर ऊहर माला, करत कौन विचार ॥ प्र० ॥ २ ॥ भक्ति गुण लवलेश भाखूं, सुवधि जिन सुखकार, समय सुन्दर कहत हमकुं, स्वामी तुम्ह आधार ॥ प्रभु० ॥ ३ ॥

दशम शीतल जिन स्तवन।

॥ राग केदारो ॥

हमारे साहिब शीतल नाथ। दीनदयाल भक्तको मेले, मुक्ति पुरीको साथ ॥ ह० ॥ १ ॥ भव दुःख भंजन, स्वामी निरंजन, संकट कोट प्रमाथ। दृढ़रथ वंश विभूषण दिनमणी, संयम रमणी सनाथ ॥ ह० ॥ २ ॥ सकल सुरासुर वंदित पंकज, पुष्पलता घन पाथ। समय सुन्दर कहे तेरी कृपा थी, होत मुक्ति सुख हाथ ॥ ह० ॥ ३ ॥

एकादशम श्रेयांस जिन स्तवन।

॥ राग ललित ॥

सुरतरु सुन्दर श्री श्रेयांस। सुमन श्रेणि भद्रा प्रभु शोभित, साधु साखकी नीकी प्रशंस ॥ सु० ॥ १ ॥ मन वंछित सुख संपति पूरत, आरति विघ्न करे विध्वंस। इंद्र वदन किन्नर

अपछर, गुणगावत वाचत सुख वंस ॥ सु० ॥ खड्ग लंछन तपतेज अखंडित, अरिहंत तीन भुवन अवतंस । समय सुन्दर कहे मेरो चित लीनो, जिन चरणे जिम मानस हंस ॥ सु० ॥ ३ ॥

द्वादशम वासु पूज्य जिन स्तवन ।

॥ राग केदारो ॥

भविका तुम वासुपूज्य नमो । दुःखदायक त्रिभुवनको नायक, तीर्थंकर बारमो ॥ भ० ॥ १ ॥ भाव भक्तिभगवंत भजो रे, चंचल इंद्रीद मो । निश्चल जाप जपो जिनजीको, सकल पाप गमो ॥ भ० ॥ २ ॥ मेरो मन मधुकर प्रभुके पदाम्बुज अह निशि रंग रमो । समय सुन्दर कहे कौन को है, श्रीजिनराज समो ॥ भ० ॥ ३ ॥

तेरहवां विमल जिन स्तवन ।

॥ राग मारूणी ॥

जिनजीको देखो मन रीझियेरी । तीन छत्र सिर ऊपर सोहे, आप इन्द्र चामर वीझियेरी ॥ जि० ॥१॥ कनक सिंहासन स्वामी बेसण, चैत्य वृक्ष शोभित कीजियेरी । भामंडल झलके प्रभु पूठे, पेखत मिथ्या मत छीजियेरी ॥ जि० ॥२॥ दिव्य नादसुर दुंदभी बाजे, पुष्प वृष्टि सुर विरचियेरी । समय सुन्दर कहे तेरे विमल जिन, प्रातीहारिज पेखी-येरी ॥ जि० ॥ ३ ॥

चौदहवां जिन स्तवन ।

॥ राग सारंग ॥

अनन्त तेरे गुण अनन्त, तेज प्रताप अनन्त । दरसण चारित्र अनंत, अनंत केवल ज्ञान री ॥ अ० ॥ १ ॥ अनन्त शक्तिको निवास, अनंत भक्तिको विलास । अनंतवीर्य अनंत धीरज, अनंत शुक्ल ध्यान री ॥ अ० ॥ २ ॥ अनन्तजीव को आधार, अनन्त दुःखको छेदनहार । हमको स्वामी पार उतार, तूं कृपा निधान री ॥ अ० ॥ समय सुन्दर तेरे जिणंद, प्रणमत चरणार्विन्द । श्रीगावत परमानन्द, राग सारंग तान मान री ॥ अ० ॥ ४ ॥

पंद्रहवां धर्म जिन स्तवन ।

॥ राग आसावरी ॥

अलख अगोचर तूं परमेश्वर, अजर अमर तूं अरिहंतजी । सकल अचल अकलंक अतुल वल, केवल ज्ञान अनन्तजी ॥ अ० ॥ १ ॥ निराकार निरंजन निरुपम, ज्योति रूप निरवंत जो । तेरो स्वरूप तूं ही प्रभु जाणे, के योगीन्द्र लहंतजी ॥ अ० ॥२॥ त्रिभुवन स्वामी, अंतर्यामी भय भंजन भगवंतजो । समय सुन्दर कहे तेरे धर्म जिन, गुण मेरे हृदय वसंतजी ॥ अ० ॥ ३ ॥

सोलहवां शान्ति जिन स्तवन ।

॥ राग मारुवणी ॥

शान्ति नाथ तूं सुणहु साहिव, सरणागत प्रतिपालोजी तिणहुं तोरे सरणे आयो, स्वामी नयने निहालोजी ॥शां०॥ १ ॥ दयाल तारोजो, मुझ आवागमन निवारोजी । हुं सेवक शान्ति तुमारोजी, तूं साहिव शान्ति हमारोजी ॥ शां० ॥२॥ पूरव भव पारेवो राख्यो, तिम मुझ चरणे राखोजी । दीन दयाल कृपा करो स्वामी, मुझने दरसण दाखोजी ॥शां०॥३॥ शान्तिनाथ सोलम तीर्थंकर, सेवे सुरनर कोड़ीजी । पाय कमल प्रभुता नित प्रणमत, समय सुन्दर कर जोड़ीजी ॥शां०॥ ४ ॥

सतरहवां कुंथु जिन स्तवन ।

॥ राग भैरव ॥

कुंथुनाथने करूं प्रणाम, मन वछित पूरे हितकाम, अन्तर्यामी गुण अभिराम ॥ कुं० ॥ १ ॥ विनती करू हूं नोहे स्वामी, द्यो मोहे मुक्ति पुरीनो ठाम ॥ कुं० ॥ २ ॥ किसके हरिहर किसके राम, समय सुन्दर करे जिन गुण ग्राम ॥ कुं० ॥ ३ ॥

अठारहवा अर जिन स्तवन ।

॥ राग नट्ट नारायण ॥

अरनाथ अरि गण गजना । मोह महामतिमान विहडना भवियणके दु ख भजना ॥ अ० ॥ १ ॥ मालव कौसिक राग मधुर ध्वनि, सुर नरके मन रंजना । सुन्दर रूप वदन चद्रसो शोभित नयन खंजना ॥ अ० ॥ २ ॥ हरिहर देव व्यासगी, सब दोपोका गंजना । समय सुन्दर कहे देव साचो, जो निराकार निरंजना ॥ अ० ॥ ३ ॥

उन्नीसवां मल्लि जिन स्तवन ।

॥ राग सारंग ॥

मल्लि जिन मिल्योरी मुक्तिदातार । फिरत २ माम्रिर्य

पायो, अरिहंतनो आधार ॥ म० ॥ १ ॥ तुय दरसण विन दुःख सह्या बहुला, कोण जाणे पार । काल अनन्त भम्यो भवसागर, अब मोहि पार उतार ॥ म० ॥ २ ॥ सामल वर्ण मनोहर मूरति, कलश लंछन सुखकारी समय सुन्दर कहे ध्यान तेरो, मेरे चित्त मंझार ॥ म० ॥ ३ ॥

वीसवां मुनिसुव्रत जिन स्तवन ।

॥ राग रामगिरी ॥

सखी सुन्दर रे पूजा सतर प्रकार । मुनि सुव्रत स्वामी नोरे, रूप बण्यो जगसार ॥ स० ॥ १ ॥ मस्तक मुगट हीरा जड्यांरे, भाल तिलक उदार । बांहे पहिर्या बोहरखारे, उर मोतिनको हार ॥ स० ॥ २ ॥ सामल वर्ण सुहावणोरे, पद्मा मात मल्हार । समय सुन्दर कहे सेवता रे, सफल मानव अवतार ॥ स० ॥ ३ ॥

इक्कीसवां नमि जिन स्तवन ।

॥ राग आसावरी ॥

नमूं नमूं नमि जिन तेरा, हूं सेवक तूं साहिब मेरा ॥ १ ॥ जे तूं जलधर तो हूं मोरा, जे तूं चन्द तो मैं हूं चकोरा ॥ २ ॥ सरखो राखि करे क्रम जोरा, समय सुन्दर रे निहोरा ॥ ३ ॥

बाईसवां नेमि जिन स्तवन ।

॥ राग गूजरी ॥

यादवराय जीवो कोड वरीस ।। गगन मंडल प्रमुदित उदित दे पंखी आशीष ॥ या० ॥ १ ॥ हम उपरि करुणा ते कीनी जग जीवन जगदीश ॥ या० ॥ २ ॥ तोरणथी रथ फेर सिधारे, जोय रह्यो सुजगीस ॥ या० ॥ रामुद्र विजय राजाको अंगज, सुरनर नामे शीस ॥ या० ॥ ४ ॥ समय सुन्दर कहे नेमि जिणंदकु तेरो नाम जपूं निशदीश ॥ या० ॥ ५ ॥

तेईसवां पार्श्व जिन स्तवन ।

॥ राग देवगंधार ॥

माई आज हमारे आणंदा । पार्श्व कुमार जिणंदके आगे भक्ति करे धरणिंदा ॥ इ० ॥ १ ॥ थेई २ तत थई-२ पद्मावती, गीत गान सुख वृन्दा । शास्त्र संगीत भेद पद्मावती नृत्यति नवई छंदा ॥ इ० ॥२॥ सफल करे अपणी सुर पदवी प्रणमत पाय अरविन्दा । समय सुन्दर कहे प्रभु पर उगारी जय २ पार्श्व जिणंदा ।

चौवीसवां महावीर जिन स्तवन ।

॥ राग परहो ॥

ए महावीर कछू दो मोहे दान । हूं द्विज मीन तु दाता

प्रधान ॥ ए० ॥ १ ॥ वूटि कनककी धार अस्ट कोटि लख कोड़िमान । एसें कछु मैं न पायो भापति पुन्य विधान ॥ए०॥ अनव देवदुस्य अर्द्ध दीनो कृपा निधान । गुण समय सुन्दर गायो, को नहीं प्रभु समान ॥ ए० ॥ ३ ॥

प्रथम आदि जिन स्तवन ।

क्यों न भये हम मोर, विमल गिरि क्यों न भये हम मोर । क्यों न भये हम शीतल पानी, सींचत तरुवर छोर । अहनिशि जिनजीके अंग परवालत, तोड़त कर्म कठोर ॥१॥ क्यों न भये हम बावन चंदन, और केसरकी छोर । क्यों न भये हम मोगरा मालती, रहते जिनजीके मोर ॥ २ ॥ क्यों न भये हम मृदंग भालरिया, करत मधुर ध्वनि घोर । जिनजीके आगल नृत्य सुहावत, पावत शिवपुर ठौर ॥ ३ ॥ जग मंडल साचो ए साचो जिनजी, और न देखा राचत मोर । समय सुन्दर कहे ये प्रभु सेवो जन्म जरा नहीं और ॥ ४ ॥ इति ॥

द्वितीय आदि जिन स्तवन ।

आज ऋषभ घर आवे, सो देखो माई ॥ आ० ॥ रूप मनोहर जगदानंदन, सब ही के मन भावे ॥सो०॥ १ ॥ हय

गय रथ पायक केई कन्या, ले प्रभु वेग, वधावे ॥ सो० ॥२॥ केई मुक्ताफल थाल विशाला, केई मणि माणक लावै, ॥सो० ॥ ३ ॥ श्रीश्रेयांस कुमार दानेश्वर, इक्षुरस दान वैरावे ॥ सो० ॥ ४ ॥ उत्तम दान अधिक अमृतफल साधु कीर्ति गुण गावे ॥ सो० ॥ ५ ॥

तृतीय आदि जिन स्तवन ।

॥ राग तोड़ी ॥

रिषभकी मेरे मन भक्ति वसी री । मालती मेघ मृगांक मनोहर, मधुकर मोर चकोर जिसी री ॥ रि० ॥ १ ॥ प्रथम नरेश्वर प्रथम भिक्षाचर, प्रथम केवल धर प्रथम रिसो री । प्रथम तीर्थंकर प्रथम भुवन गुरु, नाभि राय कुल कमल शशि री ॥ रि० ॥ २ ॥ अंश उपर अलिकावली ऊपर कंचन कसवट रेख कसी री । श्री विमला चल मंडण स्वामी समय सुन्दर प्रणमत उलसी री ॥ रि० ॥ ३ ॥

चतुर्थ पार्श्व जिन स्तवन ।

आयो सही अव जाउं कहाँ, शरणागतको शरणागत तेरी ॥ आ० ॥ तोही समान मिल्यो नहीं कोइ, ढूंढ फिर्यो धरती सब हेरी ॥ आ० ॥ १ ॥ होय दयाल महा प्रभुजी अव, आन भई तुमसे भेट मेरी ॥ आ० ॥ २ ॥ दास

कल्याण करे विनती सुण, पार्श्व नाथ सुपारस मेरी ॥ आ० ॥ ३ ॥

पंचम पार्श्व जिन स्तवन ।

तूं मेरे मनमें तुं मेरे दिलमें, ध्यान धरूं पल पलमें ॥ साँवरिया ॥ पार्श्व जिनेश्वर अन्तर्यामी, सेव करूं छिन छिनमें ॥ सां० तूं० ॥ १ ॥ काहूको मन तरुणी सुं राच्यो काहूको चित धनमें ॥ सां० ॥ मेरो मन प्रभु तुमही सुं राच्यो, ज्यूं चातक चित घनमें ॥ सां० तुं० ॥ २ ॥ योगीश्वर तेरो गति जाने, अलख निरंजन छिनमें ॥ सा ॥ कनक कीर्ति सुख सागर तुम हीं, साहिब तीन भुवन में ॥ सां० ॥ ३ ॥ तुं० ॥ इति ॥

षष्ठ नवपदजीका स्तवन ।

॥ राग सारंग ॥

बलिहारी नवपद ध्यानकी । गौतम पूछे श्री जिन भाषत, वचन सुधारस पानकी ॥ ब० ॥ १ ॥ नवपद सेव्यां नवमें स्वर्गों, पावत ऋद्धि विमान की ॥ ब० ॥ २ ॥ जाकी महिमा वल्लभ हमको, जैसे यशोदा कान्हकी ॥ ब० ॥ ३ ॥ पावे रूप स्वरूप मदन सौ, देही कंचन वान को ॥ ब० ॥४॥ याको ध्यान उदय जब आवत, उपजत लहरी ज्ञानकी ॥ ब०

॥ ५ ॥ समकित ज्योति हुवे घट मांही, जैसे लोकमें भानु की ॥ व० ॥ ६ ॥ जैनेन्द्र ज्ञान विनोद प्रसंगे, भक्ति करो भगवान की ॥ व० ॥ ७ ॥

सप्तम श्रीनेमि जिन स्तवन ।

॥ राग जयजिनेन्द्र जगनाथ ॥

जय जिनेश जग नायक जगगुरु, जगपति जिनवर जग सुख कारे । नेमि जिणंद आणंद कंद प्रभु, मात शिवादेवी के प्यारे । अशरण शरण निस्पृह उपकारी, अष्ट कर्मको दूर निवारे ॥ १ ॥ अतुल बली ब्रह्मचारी दुष्कर, विषय भोगसे तुम रहे न्यारे । पशुओंको व्याकुल देख छोडी राजुल, गिरनार पै संयम धारे ॥ २ ॥ देवोंने परीक्षा निमित्त बहुतसे, छल बल किये रूप बहु धारे । कृष्ण आदिको बांध रखा तब, आप हो उनको छुडावन हारे ॥३॥ अष्ट कर्म काटे तप करके, प्रणमत नर इन्द्रादि सारे । केवल ज्ञान पाके देशना, कृपा करो बहु जीवोंको तारे ॥ ४ ॥ अनंत गुणोंके धारक जिनवर, गुण कहते इन्द्रादि हारे । अगरचंद भक्ति बस किंचित, गुण गावत नेमि प्रभु थारे ॥ ५ ॥

उच्चारे, पार्श्व नाम सब दुखसे टारे। पार्श्व नाम ही भव-सागरसे, कर देता है पारा ॥ अघ० ॥ १ ॥ नगर बनारस जन्म तिहारे, माता वामाको है पियारो। जन्मत है जगमें उजियारो, सुखी सकल संसारा ॥ अघ० ॥ २ ॥ कमठ नाम जो योगी आया, आकरके पाखंड मचाया। सर्प सर्पिणी जलत बचाया, सुना दिया नवकारा ॥ अ० ॥ ३ ॥ अगर चंद कहै मोहे तारो, सरण ग्रह्योमें स्वामी तारा। भव दुखसे प्रभु जल्दी टारो, करो भवोदधि पारा ॥ अघ०॥४॥

द्वादश स्तवन।

॥ राग ॥

(मोहे गिरोकी डगरिया०) नैयापार लगादो मेरी अरज यही, नहीं तुम सम और ढूंढी सकल मही ॥ दोहा ॥ परमाद और कषायने, घेरा है चारों ओरसे। कर्म शत्रु ने मोहे बांधा मोह रूपी डोरसे। छोडे मेरो न लारो शरण तोरी ग्रही ॥ नैया० ॥ १ ॥ दोहा ॥ लक्ष चौरासी योनिमें, और मुख्य गति चार है। अरहटके नाइमें फिरा, कुछ दुखका नहीं पार है। अक्षय सुखमें पहुंचा दो प्रभु अब तो सही ॥ नैया० ॥ दोहा ॥ भव भ्रमण फेरा मिटे इक अरज ये ही नाथ है। अगरचंद सरणे पड़यो, अब तोरे

हाथ है ॥ भव दुखसे उबारो बातें सारी कही ॥ नैया० ॥ ३ ॥

त्रयोदशम स्तवन ।

॥ राग ॥

तुम वीतराग जिनराय कृपालु स्वामी, मुझे कर लो आप समान रखो नहीं खामी ॥ तु० ॥ १ ॥ तुम केवलज्ञान विभूषित अन्तर्यामी । अब विनती सुनो मुझनाथ मुक्ति पथगामी ॥ तु० ॥ २ ॥ चौसठ इन्द्रोंसे पूजित जग हितकामी । आज पुण्योदयसे नाथ सेवा तेरी पामो ॥ तु० ॥ ३ ॥ नहीं गुणोंका है कुछु पार ज्ञानके धामी । कहें अगर मोहे दो तार, कहुं सिरनामी ॥ तु० ॥ ४ ॥

चौदहवां स्तवन ।

॥ राग ॥

(ऐसी दशा हो भगवन । विनती हमारी भगवन, कर्मों का नाश होवे ।) शुभ ज्ञानकी प्रभाका, हियमें प्रकाश होवे ॥ वि० ॥ १ ॥ व्यर्थ समय न खोवें, नहीं पाप बीज बोवें । सत्पथ सदा चलें हम, पापोंका ह्रास होवे ॥ वि० ॥ २ ॥ नव तत्वको पिछाने, एकान्त मत न आने । कषायोंसे दूर होवे, मोहसे निकाश होवे ॥ वि० ॥ ३ ॥ पंच इन्द्रिय वशमें